॥ श्रीः ॥

रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गता

मेघमाला ।

श्रीपण्डित रामाधीनकृत-

भाषानुवादसमलङ्कृता

श्रीपण्डितरघुवंशशर्मणा संशोधिता च ।

सैव

भगीरथात्मज हरिप्रसादशर्मणा

मुम्बापुर्य्यां

“ निर्णयसागराख्य ” मुद्रणालये मुद्रयित्वा

प्राकाश्यमानीता ।

संवदब्दाः १९५३ शकाब्दाः १८१८ सनाब्दाः १८९६.
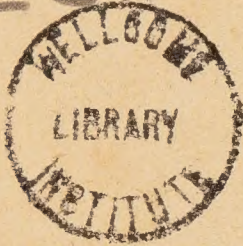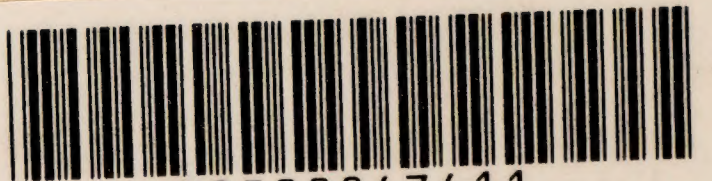
श्रीः ।

मेघमाला

भाषाटीकासहिता ।

श्रीगणेशायनमः

कैलासशिखरासीनंभैरवंपरमेश्वरं ॥ गणकोटिसमाकीर्णमप्सरोगणकिन्नरैः ॥ १ ॥ सिद्धगंधर्वकैश्चैवसविद्याधरसंयुतैः ॥ मालाधरैस्तथाक्षांतैर्महोग्रैश्चसुसंयतैः ॥ २ ॥ अर्द्धांगेललितादेवीवामभागेहिसंस्थिता ॥ ललाटेचंद्रमाश्चैववासुकिःकंठमाश्रितः ॥ ३ ॥ प्रणम्यतंसुराःसर्वेसिद्धगंधर्वकिन्नरैः ॥ त्रिनेत्रः पंचवक्त्रश्चदशबाहुविभूषितः ॥ ४ ॥

विश्वेश्वरं नमस्कृत्य रामाधीनाख्यशर्मणा ॥
रच्यते मेघमालायाष्टीका भाषार्थदर्शिनी ॥ १ ॥

अर्थ–अप्सरावोंके गण, किन्नर, और विद्याधरोंसे युक्त, सिद्ध, गंधर्व तथा मालाओंको धारण कियेहुये, शांतवृत्तिवाले, बड़े उग्रगणोंसेयुक्त, कोटिगणोंसे व्याप्त, भैरवनामवाले महादेव कैलासके शिखरपर बैठेथे. और उनके बाँई-तरफ् आधे अंगमें ललितादेवी स्थित, मस्तकमें चंद्रमा विराजमान, गलेमें वासुकी सर्पका हार पहिरे, तीन नेत्रवाले, और पांच हैं मुख जिनके, तथा दश बाहुओंसे शोभायमान ऐसे महादेवजीको संपूर्ण देवता सिद्ध, गंधर्व, किन्नर इन्होंके सहित नमस्कार करके अपने अपने स्थानको गये ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

तान्दृष्ट्वाशंकरंदेवीपार्वतीपरिपृच्छति ॥ ओंनमोवरदेवायदेवाधिपतयेनमः ॥ ५ ॥ ॥ पार्वत्युवाच ॥ देवताधिपतिश्चैवअनादिपरमेश्वर ॥ विख्यातस्त्रिषुलोकेषुसृष्टिसंहारकारक ॥ ६ ॥

अर्थ–इसके अनंतर पार्वती देवी तिन सबोंको देखके ओंकाररूप व देवतावोंमें श्रेष्ठ आपके लिये नमस्कार है. और देवतोंके मालिक जो आप तिनके लिये नमस्कार है. ऐसा कहकर महादेवजीके प्रति पूंछतीभई ॥ ५ ॥ पार्वतीजी पूंछतीहैं कि हे आदिसे रहित! हे परमेश्वर! हे सृष्टिके संहार करनेवाले! (हे महादेव!) तीन लोकोंमें देवतोंके मालिक आप प्रख्यात हैं ॥ ६ ॥

मेघास्तुकीदृशादेवकथंविद्युत्प्रजायते ॥ कीदृशंवर्णरूपंतुशरीरंतस्यकीदृशं ॥७॥ ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविपरंगुह्यंमेघमालायथाक्रमं ॥ द्वादशानांसहस्रेषुचोद्धृताहिपुरामया ॥ ८ ॥

अर्थ–हेदेव! मेघ कैसेहैं और बिजुली किसप्रकार उत्पन्न होती है. और तिसका कैसा रंग है, कैसा स्वरूप है और किसप्रकारका शरीर है. ॥ ७ ॥ ऐसा पार्वतीका प्रश्न सुनके महादेवजी कहतेहैं कि हे देवि! अत्यंत गोप्य मेघोंकी माला यथाक्रमसे सुनो. जोकि पूर्व मैने बाराहजारोंमें मुख्य ठहरायाहै. ॥ ८ ॥

मेघवर्णप्रवक्ष्यामित्विदंशास्त्रसमुच्चयं ॥ चतुर्वर्णाश्चमेघाहिविशेषंतुतथाशृणु ॥ ९ ॥ पूर्वाह्णेविद्यतेविप्रोमध्याह्नेक्षत्रियस्तथा ॥ अपराह्णेतथावैश्यःशूद्रश्चास्तमितेरवौ ॥ १० ॥

अर्थ–मेघके वर्णरूपी इस शास्त्रके समुच्चयको कहताहूं, कि चार वर्णके मेघ हैं और जो विशेष हैं उनको सुनो. ॥ ९ ॥ कि पूर्वाह्णमें अर्थात् प्रथमप्रहरमें ब्राह्मणरूप मेघ विद्यमान रहताहै. तैसे मध्याह्नमें क्षत्रियरूप मेघ विद्यमान रहताहै. तैसेही तीसरे पहर वैश्यरूप मेघ विद्यमान रहताहै. और सूर्यके अस्त भयेपर शूद्ररूपी मेघ विद्यमान रहताहै ॥ १० ॥

मेघश्चांडालरूपेणवर्षतेपिचगोचरे ॥ ब्राह्मणःश्वेतवर्णश्चक्षत्रियश्चारुणस्तथा ॥११॥ वैश्यश्चपीतकोज्ञेयःशूद्रःकृष्णउदाहृतः ॥ मेघश्चसर्ववर्णानांविप्रचांडाललक्षणः ॥ १२ ॥

अर्थ–चांडालरूपसे मेघ गोचरमें बर्सते हैं. ब्राह्मण मेघ श्वेतरंग, क्षत्रिय मेघ लालरंग और वैश्य मेघ पीतरंगका जानना, तथा शूद्र मेघ काले रंगका कहा है. और सब वर्णोंके मेघको विप्रचांडाल ऐसा लक्षण है॥ ११ ॥ १२ ॥

इदंतुकथितंदेवियादृशंमेघलक्षणं ॥ कार्तिकेशुक्लनंदायांपंचरू

पाणियोजयेत् ॥ १३ ॥ मधुरंगर्जतेविप्रःक्षत्रियोगुंगुमायते ॥ वैश्यश्चगर्जतेघोरंशूद्रोठमठमायते ॥ १४ ॥

अर्थ—हे देवि! जैसा मेघोंका लक्षण है तैसा मैंने यह कहा. सो कार्तिक महीनामें शुक्लपक्षकी नंदा तिथियोंमें अर्थात् १, ६, ११ में पांच रूप युक्त करै ॥ १३ ॥ ब्राह्मण मेघ मधुर गर्जता है. क्षत्रिय मेघ गुमगुम ऐसा शब्द करता है. और वैश्य मेघ भयंकर शब्द करताहै, शूद्र मेघ ढम ढम शब्दको करता है ॥ १४ ॥

अभ्राणिश्वेतवर्णानिरक्तवर्णानिवैतथा ॥ कांस्यवर्णोभवेद्यस्तु ताम्रवर्णस्तथाभवेत् ॥ १५ ॥ चतुर्वर्णास्तुविज्ञेयादिव्यगर्भेषुसंभवाः ॥ प्रतिपदादिभिःपीत्वाकलाःपंचदशैवहि ॥ १६ ॥

अर्थ—श्वेतवर्णके मेघ, रक्तवर्णके मेघ, और कांस्यवर्णके मेघ, तैसेही ताम्रवर्णके मेघ होते हैं ॥ १५ ॥ इसप्रकार दिव्यगर्भमें उत्पन्न चार प्रकारके मेघ जानना. वे मेघ कलारूपसे प्रतिपदा आदिक तिथियोंको पान करके १५ कला होती हैं ॥ १६ ॥

षोडशैवकलाश्चैवअमायांपरिकीर्तिताः ॥ गर्जितेकार्तिकेमासिमासांश्चत्वारिवर्षति ॥ १७ ॥ कार्तिकेचैवमासिस्यान्मेघानांपुष्पसंभवः ॥ सुभिक्षंतुभवेत्तत्रकार्तिकेगर्भमुत्तमं ॥ १८ ॥ इतिमेघवर्णनं ॥

अर्थ—इसप्रकार सोलह कला अमावसतक कहीहैं. कार्तिक महीनामें मेघके गर्जनेपर चार महीनातक बर्षा होती है. ॥ १७ ॥ कार्तिकके मासमें मेघोंका पुष्प उत्पन्न होताहै, और फिर कार्तिकही महीनामें उत्तम गर्भ होता है. इसकारण तिस मासमें सुभिक्ष होताहै. ॥ १८ ॥ इति मेघवर्णनं ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥ मेघानांवर्णरूपंचयादृशंतुश्रुतंमया ॥ मेघाश्च गर्जितायेनयेनमेप्रत्ययोभवेत् ॥ १९ ॥ ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविमयादिव्यंगर्भरूपंतुतादृशं ॥ मंदरस्योत्तरमेघाद्या राजानोद्वादशस्मृताः ॥ २० ॥

अर्थ—पार्वतीजी पूंछती हैं कि (हे शंकर!) मेघोंका वर्ण और रूप जैसा है

वैसा मैने सुना. और मेघ जिससे गर्जते हैं सो कहो. जिससे मेरेको ज्ञान हो ॥ १९ ॥ ऐसा पार्वतीजीका प्रश्न सुनके महादेवजी कहतेहैं कि हे देवि! जिस-प्रकार मेघोंका दिव्यगर्भरूप है सो मै कहताहूं तुम सुनो. कि मंदराचलके उत्तरमेघादिक बारह राजा कहेहैं ॥ २० ॥

कैलासेदशमेघाश्चविकटेचतथादश॥ जठरेदशराजानोमेरुश्रृंगेद शस्मृताः॥२१॥ पारिजातेदशमिताहिमवंतेतथादश॥ गंधमाद नराजानोदशमेघाःप्रकीर्तिताः ॥ २२ ॥

अर्थ—कैलाशपर्वतमें दश मेघ, और विकटपर्वतमें दश मेघ, जठरपर्वतमें मे-घोंके दश राजा. तैसे मेरुश्रृंगपर्वतमें दश मेघ ॥२१॥ और पारिजात पर्वतमें दश मेघ, तैसे हिमवानपर्वतमें दश मेघ, और गंधमादन पर्वतके दश मेघ राजा कहे हैं ॥ २२ ॥

असंख्यमेघाविख्याताःकथिताश्चधरातले ॥ रूपस्यदर्शनाद्देवि येषांशांतिःप्रजायते ॥२३॥ मृत्युलोकेषुयेमेघास्तेमेघाह्वानिता ध्रुवं ॥ ध्यानमेवंकृतंशुद्धमावाहनपुरःसरं ॥ २४ ॥

अर्थ—हे देवि! पृथ्वीमें असंख्य मेघ विख्यात हैं. सो मैने कहा. जिन्होंके स्वरूप देखनेसे शांति होतीहै ॥ २३ ॥ इसकारण मृत्युलोकमें जे मेघ हैं वे मे-घ हमने बुलायेहैं और फिर वे दश मेघ आवाहनपुरःसर शुद्धध्यान करतेहैं ॥२४॥

प्रणमंतिचमांशंभुंस्तुतिंकुर्वन्तितेदश॥ प्रणामंचसंस्मरणंस्तुतिं कुर्वंतितेदश॥स्तुवंतिविविधैःस्तोत्रैर्दिव्याभरणभूषितैः ॥२५॥ ॥ मेघाऊचुः ॥ किमर्थंसंस्मृतादेवआदेशंदीयतांप्रभो॥ ॥ ई श्वरउवाच ॥ स्वरूपंचैवदृष्टंतत्पार्वत्यापृष्टमेवयत् ॥ २६ ॥

अर्थ—व शंभुरूप हमारा प्रणाम तथा स्तवन करतेहैं. और वे दश मेघ आकर दिव्य आभरणोंसे विभूषित विविध स्तोत्रोंसे स्तुति करतेहैं. और प्रणाम, स्मरण, व स्तुतिको करतेहैं ॥ २५ ॥ मेघ कहते हैं कि हे देव! किसलिये आपने स्मरण किया है. सो हे प्रभो! आज्ञाको देव. ऐसे मे-घोंके बचन सुन महादेवजी कहतेहैं कि आपलोगोंके स्वरूप देखनेको पा-र्वतीने पूंछा सो स्वरूप देखा ॥ २६ ॥

गंतव्यंमृत्युलोकेषुभूलोकस्योपकारणात् ॥ दुर्भिक्षंजायतेयेन चतुर्मासेष्ववर्षणात् ॥ २७ ॥ ॥ मेघाऊचुः ॥ विख्याताद शराजानःपरिवाहोदशकोटिकः ॥ एकविंशतिभूबाणब्रह्मांडेचै वसंस्थिताः ॥ २८ ॥

अर्थ–अब पृथ्वीतलके उपकारके लिये मृत्युलोकमें जाव. जिससे चार महीना न बर्सनेसे दुर्भिक्ष होता है. सो पृथ्वीमें बर्षा करो ॥ २७ ॥ मेघ कहते हैं कि मेघोंमें दश राजा विख्यात हैं और दश कोटि उन्होंके साथ रहेनेवालेहैं ५१२१ मेघ सब ब्रह्मांडमें स्थित हैं ॥ २८ ॥

क्रमेणसप्तद्वीपानांमेघाश्चैवसुराधिप ॥ कथिताश्चमहादेविनी लेनपरिपृच्छति ॥ २९ ॥ विसर्जितागतामेघापार्वतीयदिपृ च्छति॥३०॥ पार्वत्युवाच ॥ कोराजाभवेद्देवपट्टबंधंचकीदृशं॥ ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविपरंगुह्यंमेघसंघमनुत्तमम् ॥ मासद्वा दशविख्यातंप्रत्ययोयेनजायते ॥ ३१ ॥

अर्थ–हे सुराधिप! क्रमसे सात द्वीपोंके मेघ कहे, पार्वतीजी महादेवजीके प्रति फेरभी पूंछतीभई ॥ २९ ॥ उसके अनंतर बिदा किये हुये, मेघ अपने स्थानोंको गये. तिसके अनंतर पार्वतीजी महादेवजीके प्रति पूंछती भई. पार्वती-जी कहतीहैं कि हे देव! कौन राजा हुवा और राज्यसिंहासन कैसा है, महा-देवजी कहते हैं कि हे देवि! बारह महीनें विख्यात मेघोंका उत्तम समूह सुनो कि जिससे ज्ञान उत्पन्न होवे ॥ ३१ ॥

सुबुद्धोनंदशालश्चकन्यदश्चपृथुश्रवाः ॥
वासुकिस्तक्षकश्चैवविकर्त्तोशार्बुदस्तथा ॥ ३२ ॥

अर्थ–सुबुद्ध और नंदशाल, कन्यद और पृथुश्रवा, वासुकी, तक्षक, विकर्त तथा शार्बुद ॥ ३२ ॥

हेममालीगजेंद्रश्चवज्रदंष्ट्रोविषप्रभुः ॥ एतेद्वादशमेघाश्चकथि तास्तवसुंदरि ॥३३॥ चैत्रादिमाससंयुक्तोयत्रयत्रगुरुस्तथा ॥ यदामेषेगुरुश्चैवसुबुद्धोमेघउच्यते ॥ ३४ ॥

अर्थ–हेममाली, और गजेन्द्र, वज्रदंष्ट्र और विषप्रभु, हे सुंदरि ! ये बारह मेघ तुह्मारेको कहे ॥ ३३ ॥ चैत्रादिक महीना संयुक्त करना फिर जहां जहां अर्थात् जिस राशिमें बृहस्पति होवें तैसा फल जानना. कि जो मेषके बृहस्पति होवें तो सुबुद्ध मेघ कहा है ॥ ३४ ॥

सुबुद्धसंवत्सरेचैवसुवृष्टिर्जायतेसदा ॥ सुभिक्षंक्षेमराज्ञांचशांतिर्विग्रहकस्यवै ॥ ३५ ॥ सस्यानिचभविष्यंतिसर्वधान्यावसुंधरा ॥ समर्घंचैवसस्यानांकर्पासंलवणंगुडं ॥३६॥ संग्रहंपंचमासेषुभवेल्लाभश्चपुष्कलः ॥ ॥ इतिमेषगुरुफलं ॥

अर्थ–तिस सुबुद्ध संवत्सरमें हमेसा उत्तम बर्षा होवे, और सुभिक्ष होवे. तैसेही राजावोंका कल्याण होवे और विग्रहोंकी शांति होवे ॥ ३५ ॥ और कोमल तृण होवें और पृथ्वीमें सब प्रकारके धान्य उत्पन्न होवें. और फलोंकी वृद्धि होवे. पुनः कपास, निमक, गुड़ इन चीजोंको पांचमहींनातक संग्रह करनेसे अधिक लाभ होता है. इसप्रकार मेषके बृहस्पतिका फल हुवा ॥३६॥

वृषराशिगतेजीवेनंदशालःप्रकीर्तितः ॥ वैशाखवत्सरोनामसोपिराजातथोच्यते ॥ ३७ ॥ बहुक्षीरास्तथागावोबहुसस्याचमेदिनी ॥ जायतेचमहावृष्टिःसुभिक्षंस्यान्नसंशयः ॥ ३८ ॥

अर्थ–बृहस्पतिको वृषराशिमें प्राप्त भयेपर नंदशालनाम मेघ कहा है. उसका बैशाखवत्सर नाम है. उस वर्षका वही नंदशाल राजा कहा है ॥३७॥ उसके राजा भयेपर बहुत दूध देनेवाली गौवें होतीहैं. और पृथ्वीमें बहुत खेती उत्पन्न होतीहै. और अत्यंत बर्षा होती है. और सुभिक्ष होता है इसमें. संशय नहीं है ॥ ३८ ॥

अर्घंचत्रिविधोभावोजायतेनात्रसंशयः ॥ कार्पासतिलगोधूमशुंठीलोमगुडादयः ॥ ३९ ॥ मरीचवस्त्रपट्टकूलंपूगंचधातकीतथा ॥ मसूरोमाषकंचैवसेंदुकाचणकादयः ॥ ४० ॥ दशमासंतुसंग्राह्याद्विगुणोलाभउच्यते ॥ ४१ ॥ इति वृषगुरुफलं ॥

अर्थ–और मूल्य तिगुना होताहै. इसमें संशय नहीं है. कपास, तिल, गेहूं, सोंठ, रोमके वस्त्र पस्मीना इत्यादिक, और गुड़ ॥ ३९ ॥ मिर्च, रेशमीआ-

दिक वस्त्र, सुपारी, आंवला अथवा धायके फूल, मशूर, उर्द, सेंदुक, चना आदिकका ॥ ४० ॥ दश महींनातक संग्रह कीन्हेसे दूना लाभ होताहै इसप्रकार वृषके बृहस्पतिको फल हुवा ॥ ४१ ॥

मिथुनस्थेगुरौचैवकन्यदोमेघउच्यते ॥ ज्येष्ठसंवत्सरोनामसोपि राजाविधीयते ॥ ४२ ॥

अर्थ–जो मिथुनमें बृहस्पति स्थित हों तो कन्यद मेघ कहा है. उस संवत्सरका ज्येष्ठ नाम है. उस वर्षका वही राजा कहा है॥ ४२ ॥

विचित्रवृष्टिपानीयंखंडवृष्टिर्भविष्यति ॥ मध्यमंजायतेत्वर्घंसु भिक्षंनात्रसंशयः ॥ ४३ ॥ राजाविरोधमाप्नोतिविग्रहश्चैवजाय ते ॥ अर्घंचमासदशकंकर्पासतिलवैगुडं ॥ ४४ ॥

अर्थ–तिसमें पानीकी वर्षा विचित्र होवे अर्थात् कहीं वर्षा होवे कहीं न होवे और सब चीजोंका मूल्य मध्यम होवे. और सुभिक्ष होवे इसमें संशय नहीं ॥ ४३ ॥ और राजा बिरोधको प्राप्त होवे और विग्रह भी होवे और मूल्य दश महींनातक मध्यम रहै फिर कपास, तिल, गुड़ ॥ ४४ ॥

लवणंहिंगुशुंठीचमरीचिवस्त्रपाटलं॥ यवसर्षपधान्यानिगोधूम चणकादयः ॥४५॥ मसूरत्रिकुटातोरीमाघफाल्गुनसंग्रहः ॥ वि क्रयंश्रावणेमासिलाभश्चैवप्रजायते ॥४६॥ इतिमिथुनगुरुफलं॥

अर्थ–निमक, हींग, सोंठ, मिर्च, पाटलवर्णके वस्त्र, यव, सरसों, और गेहूं चनाआदिक अनेक प्रकारके धान्य, ॥ ४५ ॥ मसूर, त्रिकुटा, तोरी इन चीजोंका माघ फाल्गुनमें संग्रह करनेसे और श्रावणमासमें विक्रयसे लाभ उत्पन्न होताहै इसप्रकार मिथुनके बृहस्पतिका फल हुवा ॥ ४६ ॥

कर्कराशौगुरुश्चैवयदागच्छतिपार्वति ॥ पृथुश्रवाभवेन्मेघःसो पिराजाप्रजायते ॥ ४७ ॥ आषाढसंज्ञकोनामभवेत्संवत्सरोय दा॥ अत्यंतजलमेघाःस्युर्धान्यानिचतदाबहु ॥ ४८ ॥

अर्थ-(महादेवजी कहतेहैं कि) हे पार्वति! जो कर्कराशिमें बृहस्पति होवें तो पृथुश्रवानामक मेघ होताहै, सो वही राजा कहा है ॥ ४७ ॥ तब आषाढसंज्ञक नामवाला संवत्सर होताहै. तब अत्यंत मेघोंकी वर्षा होवे और धान्य अनेक प्रकारके होवें ॥ ४८ ॥

अर्घंसमर्घतांयातिराजातत्रविधीयते ॥ राज्यभंगंविजानीया त्पापाभवतिमेदिनी ॥ ४९ ॥ तदाहिसर्ववस्तूनांसंग्रहंकारयेद्बु धः ॥ लवणंतिलकर्पासंहिंगुशुंठीवचातथा ॥ ५० ॥ मरीचं पद्मकंचैवकुंकुमंबोलगंधकं ॥ पक्षेसमर्घतांयातिसुभिक्षंपार्थिवे भवेत् ॥ ५१ ॥ इतिकर्कराशिफलं ॥

अर्थ-तिस संवत्सरमें पृथुश्रवा राजा कहा है. तब चीजोंका मूल्य वृद्धिको प्राप्त होवे. और राज्यको भंग जानना और पृथ्वी पापमय होती है ॥ ४९ ॥ तब ज्ञानवान् पुरुष संपूर्ण वस्तुवोंको संग्रह करावै कौन वस्तु कि निमक, तिल, कपास, हींग, सोंठि, बच, मिर्च, पद्माक, कुंकुम, बेर, गंधक इन चीजोंको पक्षभरमें सस्ता होताहै और पृथ्वीमें सुभिक्ष होताहै ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इसप्रकार कर्कराशिका फल हुवा ॥

सिंहराशौगुरुश्चैववासुकिर्मेघउच्यते ॥
वत्सरंश्रावणंनामसोपिराजाहिउच्यते ॥ ५२ ॥

अर्थ-अब सिंहराशिमें जो बृहस्पति होवें तो वासुकी मेघ कहा है. उस वर्षका श्रावण नाम है सो वही राजा होता है ॥ ५२ ॥

क्षीराश्चैवघृतागावोबहुहेमप्रजायते॥धान्यंसमर्घतांयातितस्मि न्कालेनसंशयः ॥५३॥ चतुष्पदानांसर्वेषांसंग्रहंतत्रकारयेत् ॥ वैशाखज्येष्ठयोर्मध्येविक्रयंकारयेद्बुधः ॥ ५४ ॥

अर्थ-तब दूध, घृत, गौवैं और बहुत सुवर्ण उत्पन्न होताहै. और तिस समयमें धान्य वृद्धिको प्राप्त होताहै. इसमें संशय नहीं है ॥ ५३ ॥ तिस समय ज्ञानवान् पुरुष सबप्रकारके चौपायोंको संग्रह करै. फिर बैशाख अथवा ज्येष्ठके बीचमें बेचैं अथवा खरीदै ॥ ५४ ॥

लाभेद्विगुणताज्ञेयानात्रकार्याविचारणा ॥ इतिसिंहगुरुफलं ॥
कन्याराशौगुरुश्चैवतक्षकोमेघउच्यते ॥ भाद्रसंवत्सरोनामसोपि
राजाभविष्यति ॥ ५५ ॥ सुभिक्षंजायतेतत्रधर्मकर्मप्रवर्तकः ॥
प्रणम्यभैरवंदेवीद्विजदेवगणेश्वरं ॥ ५६ ॥

अर्थ—तिसमें लाभ दूना जानना. इसमें विचार नहीं करना. इसप्रकार सिंहके बृहस्पतिका फल हुवा. अब कन्या राशिमें जो बृहस्पति होवें तौ तक्षक मेघ कहा है उसका भाद्र संवत्सर नाम है सो वही तक्षक मेघ धर्म कर्मका प्रवृत्त करनेवाला राजा होवेगा.॥ तिसही वर्षमें सुभिक्षभी होवेगा. ऐसा सुन पार्वती देवी ब्राह्मण और देवतागणोंके ईश्वर ऐसे भैरवनाम महादेवको नमस्कार करके ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

वस्तूनांसंग्रहःकार्योचणकायवसर्षपाः ॥ कार्पासंत्रिकुटातोरी
माघफाल्गुनमासतः ॥ ५७ ॥ षण्मासंसंग्रहःकार्योविक्रयंत
दनंतरं ॥ लाभेद्विगुणताज्ञेयागोधूममधुसर्करा ॥ ५८ ॥

अर्थ—चना, यव, सरसों, कपास, त्रिकुटा, तोरी, इन वस्तुओंको माघ फाल्गुनसे लेकर संग्रह करै ऐसा निश्चय हुवा ॥ ५७॥ फिर छः महींना संग्रह करै तिसके अनंतर बेंचै तो दूना लाभ जानना. और गेहूं, सहेत, शक्कर, ॥ ५८ ॥

कार्पासंपट्टसूत्राणिएतेषांसंग्रहेकृते ॥ लाभोभवतिद्रव्याणांना
त्रकार्याविचारणा ॥ ५९ ॥ कांचनंत्रपुमांजिष्ठंकुंकुमंहिंगुशुंठि
कं ॥ मरीचंजातिफलकंकंकोलमगरंतथा ॥ ६० ॥ इतिकन्या
गुरुफलं ॥

अर्थ—कपास, रेशमी सूत्र इन वस्तुओंका संग्रह करै तो इन द्रव्योंका लाभ होताहै. इसमें बिचार नहीं करना ॥ ५९ ॥ सुवर्ण, सीसा, मंजीठ, कुंकुम, हींग, सोंठ, मिर्च, जायफल, अँकोहर, तथा अगर इनका भी संग्रह करनेसे लाभ होताहै ॥ ६० ॥ इसप्रकार कन्याके बृहस्पतिका फल हुवा. ॥

तुलाराशिंयदायातिदेवाचार्योवरानने ॥ विकर्तानाममेघःस्या
दाश्विनेवत्सरेतथा ॥ ६१ ॥ तथापिशृण्वतांचिंतासराजातेनउ

च्यते ॥ उद्धारजातिसंभूतद्वाराव्याधिःप्रवर्त्तते ॥ ६२ ॥

अर्थ–हे वरानने! जो बृहस्पति तुलाराशिके होंवे तो कुँवाँर महींनामें विकर्ता नाम मेघ होता है ॥ ६१ ॥ वह राजा कहाता है तौभी सुननेवालोंको चिंता कही है. उद्धारजातिमें उत्पन्न तिसके द्वारा व्याधि होवेगी. ॥ ६२ ॥

सर्वधान्यंसमर्घंचसुभिक्षंजायतेसदा ॥ अर्थानांतूलभांडानांसंग्रहंतत्रकारयेत् ॥ ६३ ॥ कर्पासंगुडहिंगुंचमरीचंशुंठिकुंकुमं ॥ जातीफलंचकर्पूरंपट्टसूत्रादयस्तथा ॥ ६४ ॥ एतद्रव्याणिसर्वाणिमासंचत्वारिरक्षयेत् ॥ लाभश्चद्विगुणोज्ञेयोव्यासस्यवचनंयथा ॥ ६५ ॥ इतितुलाराशिगुरुफलं ॥

अर्थ–और सब धान्योंका सस्ता होवे और हमेस सुभिक्ष होवे. रुइ, वर्तन आदिक पदार्थोंका तिसमें संग्रह करावै ॥ ६३ ॥ कपास, गुड़, हींग, मिर्च, सोंठ, कुंकुम, जायफल, कपूर, रेशमी सूत्र आदिक इनको भी संग्रह करै. ये सब वस्तुओंको चार महींना रक्षा करै. तिसके उपरांत दूना लाभ होता है, इसमें व्यासजीका बचन प्रमाण है ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इसप्रकार तुला राशिके बृहस्पतिका फल हुवा. ॥

वृश्चिकेतुगुरुश्चैवयदागच्छतिपार्वति ॥ सारंबुदोभवेन्मेघःपट्टबंधंचकारयेत् ॥ ६६ ॥ कार्तिकंवत्सरंनामसोपिराजाप्रजायते ॥ खंडवृष्टिर्भवेन्मेघोदुर्भिक्षंजायतेतदा ॥ ६७ ॥

अर्थ–हे पार्वति! जो वृश्चिक राशिके गुरु होंवें तो सारंबुदनामवाला मेघ होता है. वही राज्यसिंहासनको कराया जाता है. अर्थात् उसीकी राज्यगद्दी होतीहै ॥ ६६ ॥ कार्त्तिक वत्सर उसका नाम है. इससे वही राजा होताहै. और पृथ्वीमें मेघोंकी कहीं वर्षा होतीहै. कहीं नहीं होती तब दुर्भिक्षभी होता है ॥ ६७ ॥

उद्धारोविषमोभूत्वासर्पदंष्ट्रादिसंभवा ॥ पापबुद्धिरतालोकाभवेत्सर्वत्रमेदिनी ॥ ६८ ॥ देवंनपूजयेल्लोकोराजाभवतितस्करः ॥ अर्घांश्चयान्प्रवक्ष्यामिमहिषीगोअजास्तथा ॥ ६९ ॥

अर्थ–कुहिरा विषम होके, सांप व डाढ़वाले जीवोंको उत्पन्न करताहै.

और पापबुद्धिमें प्रीति करनेवाले मनुष्य सब जगा पृथ्वीमें होतेहैं. और मनुष्य देवतावोंको नहीं पूजते. राजा चोर होजाताहै. और सामग्री जो कहूंगा कि भैंसी, बैल, तथा बकरी ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

गोधूमाचणकामाषात्रिकुटातोरिजोंधरी ॥ संग्रहेत्पंचमासान्तंश्रावणेमासिविक्रयेत् ॥ ७० ॥ लाभोद्विगुणतोज्ञेयोनात्रकार्याविचारणा ॥ अपराणिचद्रव्याणिताम्रंनागंचलोहकं ॥७१॥

अर्थ—गेहूं, चना, उर्द, त्रिकुटा, तोरी, जोंढ़री, ये सब पांच महींना तक संग्रह करै. और श्रावणमहीनामें बेंचै ॥ ७० ॥ तौ दूना लाभ जानना. इसमें कुछ बिचार नहीं करना. औरभी वस्तुयें तांबां, शीसा, लोहा, ॥ ७१ ॥

हरिद्राबचकुष्ठंचद्राक्षैलाचलवंगकं ॥ मासचतुष्टयमध्येत्रिगुणंलाभउच्यते ॥ ७२ ॥ इतिवृश्चिकगुरुफलं ॥

अर्थ—हर्दी, बच, कुष्ठ, दाख, इलायची, लौंग, इन चीजोंमें चार महींनाके बीचमें तिगुना लाभ कहा है ॥ ७२ ॥ इसप्रकार वृश्चिकके बृहस्पतिको फल हुवा. ॥

धनराशौगुरुश्चैवयदागच्छतिपार्वति ॥ हेममालीतदामेघोजायतेनात्रसंशयः ॥ ७३ ॥ मार्गसंवत्सरःसोपिपट्टबंधंचकारयेत् ॥ दिव्यवृष्टिर्भवेद्देविसर्वधान्यंप्रजायते ॥ ७४ ॥

अर्थ— हे पार्वति ! जो धनराशिमें बृहस्पति प्राप्त हों तो हेममाली मेघ उत्पन्न होताहै. इसमें संशय नहीं ॥ ७३ ॥ मार्गशीर्ष संवत्सरका, वही हेममाली मेघ राज्यसिंहासनको कराताहै. अर्थात् उसीकी राज्यगद्दी होतीहै. हे देवि ! उसकी राज्यमें दिव्य वर्षा होतीहै. और संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतेहैं ७४

समर्घंयांतिवस्तूनिवर्षाकालेमहर्घता ॥ गुडंतिलंचलवणंआज्यंचैवचतुष्पदं ॥ ७५ ॥ संग्रहेत्सप्तमासानित्रिगुणोलाभउच्यते ॥ इतिधनगुरुफलं ॥

अर्थ—संपूर्ण वस्तुयें सस्ती होतींहैं. और वर्षाके समय गुड़, तिल, निमक, घी, चौपाये इनको महँगा होताहै ॥ ७५ ॥ सात महींनातक इन चीजोंका संग्रह करनेपर तिगुना लाभ होताहै इसप्रकार धनके बृहस्पतिका फल हुवा. ॥

मकरेचगुरुर्देविजलेंद्रोमेघउच्यते ॥७६॥ पौषसंवत्सरोनामसो
पिराजावरानने ॥ क्षयंचतुष्पदानांचमृगनादश्चजायते ॥७७॥
विग्रहंचमहाघोरंराजयुद्धंपरस्परं ॥ ७८ ॥ खंडवृष्टिर्भवेन्मेघो
दुर्भिक्षंभैरवंतथा ॥ पापकर्मरतालोकाहाहाभूताचमेदिनी ॥७९॥

अर्थ—हे देवि ! जो मकरके बृहस्पति होंतौ जलेंद्र मेघ कहा है ॥ ७६ ॥ पौषसंवत्सर उसका नाम है. हे वरानने ! वही राजा है. तिसका राज्य भये पर संपूर्ण चौपयोंका नाश होताहै. और मृगोंका शब्द होताहै ॥ ७७ ॥ और बहुत भयंकर विग्रह होताहै पुनः आपसमें राजावोंका युद्ध होताहै ॥७८॥ और मेघ कहीं बर्षा करतेहैं कहीं नहीं करते. और आश्चर्यकारी दुर्भिक्ष होताहै. तैसे पापकर्ममें प्रीति करनेवाले मनुष्य होतेहैं और पृथ्वीमें हाहाकार होताहै ॥ ७९ ॥

महर्घंचैवत्रीन्मासान्पश्चात्सुभिक्षमादिशेत् ॥ धान्यानांच
महर्घत्वंकरोतिनात्रसंशयः ॥ ८० ॥ इतिमकरगुरुफलं ॥

अर्थ—और तीनमहींना महंगई रहतीहै. पीछे सुभिक्ष दीख पड़ताहै और धान्योंकी महँगई करताहै. इसमें संशय नहीं ॥ ८० ॥ इसप्रकार मकरके बृहस्पतिका फल हुवा. ॥

कुंभराशौगुरुश्चैवयदागच्छतिपार्वति ॥ वज्रदंष्ट्रोभवेन्मेघोपट्टबं
धंतुकारयेत् ॥ ८१ ॥ माघसंवत्सरोनामतेषांराजाप्रतिष्ठितः ॥
मेघाश्चप्रवलाश्चैवनवखंडाचमेदनी ॥ ८२ ॥ सुभिक्षंजायतेस
र्वंसस्यनिष्पत्तिरुत्तमा ॥ देवाश्चऋषयोविप्राःपंडिताःपरिपूजि
ताः ॥ ८३ ॥ रंगघोरंचमांजिष्ठंलोहस्यैवमहर्घता ॥ तस्मिन्का
लेभविष्यंतिपंडितागणकादयः ॥ ८४ ॥

अर्थ—हे पार्वति ! कुंभराशिमें जो बृहस्पति हों तौ वज्रदंष्ट्र मेघ होताहै. वही मेघ राज्यसिंहासनको कराता है. अर्थात् उसीकी राज्यगद्दी होतीहै ॥८१॥ उसका माघ संवत्सर नाम है. उसही महींनामें उसकी राज्य प्रतिष्ठित है. उसकी राज्य भयेपर मेघ प्रबल हों अर्थात् पानीकी वर्षा बहुत करैं और पृथ्वी हाहाकार शब्दसे रहित हो ॥ ८२ ॥ और सब प्रकारका सुभिक्ष

होवे. और खेतीकी उत्पत्ति उत्तम होवै और देवता, ऋषीश्वर, ब्राह्मण, पंडित ये पूजे जावें ॥ ८३ ॥ रंगकी चीजैं मंजीठ और लोहा इनकी मंहगई होतीहै. फिर तिसी समयमें पंडित ज्योतिषी उत्पन्न होतेहैं ॥ ८४ ॥

भुक्तेअजीर्णतांमर्त्यांविष्टंभश्चविषूचिका॥ धान्यंचजायतेसर्वं महर्घंनान्यथाभवेत् ॥ ८४ ॥ अथमासत्रयमध्येकर्पासंसंग्रहेद्बुधः ॥ चैत्रवैशाखयोर्मध्येगोधूमाश्चयुगंधरी ॥ ८६ ॥ त्रिकुटा चणकातोरीमंजिष्ठंमुद्गसंग्रहं ॥ जीरकंसर्षपंचैवत्वब्जनोद्धात थावचा ॥ ८७ ॥

अर्थ–और मनुष्य भोजन कियेपर अजीर्णको प्राप्त होते हैं और कब्जियत, तथा विषूचिका रोगवाले होते हैं. और संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतीहै. और महँगईभी अन्यथा नहीं होती ॥ ८५ ॥ इसके अनंतर तीन महींनातक ज्ञानवान पुरुष कपासको संग्रह करै और चैत्र वैशाखके बीचमें गेहूं और जुंवारिको संग्रह करै ॥ ८६ ॥ त्रिकुटा, चना, तोरी, मंजीठा और मूंगको संग्रहकरै. जीरा, सरसों, कमलडोंडा, तथा बच ॥ ८७ ॥

हरीतकींशर्करांचसंग्रहेत्रयमासकंलाभेद्विगुणताज्ञेयोनात्रकार्याविचारणा ॥ ८८ ॥ इतिकुंभस्थगुरुफलं ॥

अर्थ–हर्र, शक्कर, इन चीजोंका तीन महींना संग्रह करनेसे दूना लाभ होताहै. ऐसा जानना. इसमें बिचार नहीं करना ॥ ८८ ॥ इस प्रकार कुंभके बृहस्पतिका फल हुवा.

मीनेचलक्षणंवक्ष्येयदायातिबृहस्पतिः ॥ विषविप्रोभवेन्मेघःपट्टबंधंतुकारयेत् ॥ ८९ ॥ फाल्गुनंवत्सरंचैवसोपिराजावरानने ॥ खंडखंडंभवेन्मेघोनवखंडाचमेदिनी ॥ ९० ॥

अर्थ–मीनराशिका लक्षण कहताहूं जो मीनके बृहस्पति हों तौ विषविप्र मेघ होता है. वही राज्यसिंहासनको कराताहै अर्थात् वही राजा होताहै ॥ ८९ ॥ हे वरानने ! फाल्गुन वत्सरका वही विषविप्र राजा कहाहै. उसके राज्यमें कहीं पानी वर्षता है. कहीं नहीं वर्षता और नवीन खंडवाली पृथ्वी होतीहै ॥ ९० ॥

धान्यंसमर्घतांयातिव्याधिभिःपीडितानराः ॥ घोरव्याधिर्भवेत्त
त्रजलोदरकठोदरौ ॥ ९१ ॥ जीवहत्याद्यघंतश्चजायतेचदिने
दिने ॥ पूर्वेसुभिक्षमायातिदक्षिणस्यांमहर्घता ॥ ९२ ॥

अर्थ–पुनः धान्य महँगी होतीहै और मनुष्य व्याधियोंसे पीड़ित होतेहैं. तहां जलोदर, कठोदर भयंकर व्याधिभी होतीहैं ॥ ९१ ॥ तब दिन दिन प्रति जीवहत्या इत्यादिक पाप होतेहैं और पूर्वमें सुभिक्ष होताहै. पुनः दक्षिण दिशामें महँगा होताहै ॥ ९२ ॥

पश्चात्सुभिक्षमायातिचोत्तरेमध्यसंभवः ॥ देवान्नपूजयेल्लोको
परद्रव्यमभाषत ॥ ९३ ॥ महर्घंजायतेदेविषण्मासंनात्रसंशयः
कर्पासंहिंगुलंशुंठीमरीचंकुंकुमादयः ॥ ९४ ॥ एतेषांसंग्रहः
कार्योपंचमासंतुविक्रयेत् ॥ त्रिगुणोभवितीलाभेव्यासस्यवच
नंयथा ॥ ९५ ॥ इतिमीनराशिगुरुफलं ॥ १२ ॥ इतिश्री
रुद्रयामलेउमामहेश्वरसंवादेमेघमालायांअर्घकांडेगुरुमतेमेघव
र्णरूपंतथाद्वादशराशिगतगुरुफलाध्यायः ॥ १ ॥

अर्थ–पीछे उत्तरके मध्यमें सुभिक्ष होताहै. और देवतोंको लोग नहीं पूजते परारी द्रव्यको हरण करना यही कहतेहैं ॥ ९३ ॥ हे देवि ! छः महींना महँगा रहताहै. इसमें संशय नहीं है तब कपास, हींग, सोंठ, मिर्च, कुंकुम, आदिक ॥ ९४ ॥ इन्होको संग्रह करै. पांच महींनामें फिर बेंचै तौ तिगुना लाभ होताहै. इसमें व्यासजीका वचन प्रमाण है. ॥ ९५ ॥ इसप्रकार मीनके बृहस्पतिका फल हुवा ॥ १२ ॥ इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे मेघमालायां अर्धकांडे गुरुमते मेघवर्णरूपं तथा द्वादशराशिगते गुरुफलाध्यायः॥१॥

पार्वत्युवाच॥अन्यंवदमहादेवयदितुष्टोसिमेप्रभो ॥ हरेणभाषि
तंयत्रतस्मादपिश्रुतंमया॥१॥ महादेवहितंब्रूहिप्रजानांचमम
प्रभो॥ त्वयैवभाषितंदेवयद्यत्तच्चश्रुतंमया ॥ २ ॥

अर्थ–पार्वतीजी कहती हैं कि हे महादेव! हे प्रभो! जो आप मेरेपर तुष्ट हो तौ और कुछ कहो, जो हर आपने कहा सो मैंने सुना ॥ १ ॥ हे प्रभो!

हे महादेव! प्रजावोंका और मेरा हितकारक आप कहो. हे देव! जो जो आपने कहा वह मैंने सुना ॥ २ ॥

अधमामध्यमाश्रेष्ठाःकथंतेषांममप्रभो॥सुभिक्षमथदुर्भिक्षंडंवरंविग्रहास्तथालोकानांत्रिविधोरंगोरोगीकृच्छ्रात्कथंचन ॥३॥ कीदृशंयदिदेवेशवर्षेवर्षेचयद्भवेत् ॥ तदहंश्रोतुमिच्छामिकथयस्व प्रसादतः ॥ ४ ॥

अर्थ–हे मम प्रभो! अधम, मध्यम, श्रेष्ठ ऐसे तिन वत्सरोंमें वत्सर कैसे कौनसे हैं सुभिक्ष अथवा दुर्भिक्ष इसका आडंबर और स्वरूप लोकका तीनप्रकारका रंग सो रोगी कष्टसे कैसे छूटे ॥ ३ ॥ हे देवेश! वर्ष वर्षमें जो जैसा हो सो मैं सुननेकी इच्छा करतीहूं सो आप प्रसन्नतासे कहो ॥४॥

ईश्वरउवाच ॥ कथयामिवरारोहेक्रूराःसौम्याश्चवत्सराः ॥ येषां यानि चरूपाणितेषांनामानिमेशृणु ॥ ५॥ अथषष्टिसंवत्सरनामानि ॥ प्रभवोः १ विभवः २ शुक्लः ३ प्रमोदो ४ पिप्रजापतिः५ अंगिराः ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवाधाता १० स्तथैवच ॥६॥

अर्थ–ऐसे पार्वतीके वचन सुन, महादेवजी कहतेहैं. कि हे वरारोहे. (हे उत्तम जंघावाली!) मैं कि खराब और उत्तम वत्सर कहताहूं और तिन्होंके जैसे रूप व नाम हैं सो मेरेसे सुनो ॥ ५ ॥ अब साठ संवत्सरोंके नाम कहते हैं. प्रभव १, विभव २, शुक्ल३, प्रमोद४, प्रजापति५, अंगिरा६, श्रीमुख७, भाव ८, युवा९, धाता १०, ॥ ६ ॥

ईश्वरो ११ बहुधान्यश्च १२ प्रमाथी १३ विक्रमो १४ वृषः १५ ॥ चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तारणः १८ पार्थिवो १९ व्ययः २० ॥ ७ ॥ इतिब्रह्मविंशतिः ॥ सर्वजित् १ सर्वधारीच २ विरोधी ३ विक्रमी ४ तथा ॥ खर ५ नंदन ६ नामाचविजय ७ श्चजयो ८ परः ९ ॥ ८ ॥

अर्थ– ईश्वर११, बहुधान्य१२, प्रमाथी१३, विक्रम१४, वृष१५, चित्रभानु१६, सुभानु१७, तारण१८, पार्थिव१९, अव्यय २०, ॥७॥ ये२० ब्रह्म-

विंशति कहेलाते हैं. ॥ सर्वजित्१, सर्वधारी२, विरोधी३, विक्रमी४, खर५, नंदन, नामवाला६, विजय७, जय८, पर९, ॥ ८ ॥

मन्मथो १० दुर्मुखश्चैव ११ हेमलंबी १२ विलंबकः १३ ॥ विकारी १४ शार्वरी १५ प्लवः १६ शुभकृ १७ च्छोभनः १८ क्रोधी १९ विश्वावसु २० पराभवौ ४० ॥ ९ ॥ इतिमध्यमविंशी ॥ प्लवंगः ४१ कीलकः ४२ सौम्यः ४३ साधारण ४४ विरोधकृत् ४५ ॥ परिधावी ४६ प्रमादीच ४७ आजंदो ४८ राक्षसो ४९ नलः ५० ॥ १० ॥ पिंगलः ५१ कालयुक्तश्च ५२ सिद्धार्थी ५३ रौद्र ५४ दुर्मुखो ५५ ॥ दुदुंभी ५६ रुधिरोद्गारो ४७ रक्ताक्षी ४८ क्रोधनः ५९ क्षयः ६० ॥ ११ ॥ इतिनष्टरुद्रविंशीं ॥

अर्थ—मन्मथ९, दुर्मुख१०, हेमलंवी११, विलंबक१२, विकारी१३, शार्वरी१४, प्लव१५, शुभकृत्१६, शोभन१७, क्रोधी१८, विश्वावसु१९, पराभव ४०, ॥ ९ ॥ यह मध्यविंशी कही. ॥ प्लवंग४१, कीलक४२, सौम्य४३, साधारण४४, विरोधकृत्४५, परिधावी४६, प्रमादी४७, आनंद४८, राक्षस४९, नल५०, ॥ १० ॥ पिंगल५१, कालयुक्त५२, सिद्धार्थी५४, रौद्र५४, दुर्मुखी ५५, दुंदुभी५६, रुधिरोद्गार५७, रक्ताक्षी५८, क्रोधन५९, क्षय६०, ॥११॥ इसका नष्टरुद्रविंशी नाम है. ॥

अथषष्टिसंवत्सरफलानि ॥ ईश्वरउवाच ॥ बहुतोयास्तथामेघा बहुसस्याचमेदिनी ॥ १२ ॥ बहुक्षीरघृतागावः प्रभवाब्देवरानने ॥ १३ ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंप्रशांताश्चनरेश्वराः ॥ हृष्टपुष्टजनाःसर्वेविभवेपरिकीर्तिताः ॥ १४ ॥

अर्थ—इसके अनंतर साठि संवत्सरोंके फल कहतेहैं. महादेवजी कहतेहैं कि हे वरानने! प्रभव संवत्सरमें बहुत जल वर्षनेवाले मेघ होतेहैं. और पृथ्वीमें बहुत खेती होती है. पुनः बहुत दूध तथा घीके देनेवाली गौवैं होतीहैं ॥ १२ ॥ १३ ॥ और विभव संवत्सरमें सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य होताहै. और राजा शांत होतेहैं. पुनः संपूर्ण मनुष्य आनंदसे परिपूर्ण होतेहैं ॥ १४ ॥

रोगाबहुविधाःप्रोक्तामानुषाश्चापिकुंजराः ॥ नित्योत्सववृद्धिश्चप्रमोदोजायतेप्रिये ॥ १५ ॥ उत्तमंचजगत्सर्वंधनधान्यसमाकुलं ॥ नीरोगाश्चजनाःसर्वेनिराबाधागतद्विषः ॥ १६ ॥

अर्थ–हे प्रिये! तिस संवत्सरमें मनुष्योंको तथा हाथियोंको रोग बहुत प्रकारका कहा है. और नित्य उत्सओंकी अधिकता तथा आनंद उत्पन्न होताहै ॥ १५ ॥ और धनधान्यसे युक्त संपूर्ण जगत् उत्तम होता है. और संपूर्ण मनुष्य द्वेषको छोंड़के बाधासे रहित होते हैं ॥ १६ ॥

बहुक्षीरास्तथागावःप्राजापत्येवरानने ॥ निरातङ्कंजगत्सर्वंसर्वधान्यसमन्वितं ॥ १७ ॥ अंगिराह्वेजनाःसर्वेनित्योत्साहेप्रकीर्तिताः ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंवर्षाकालेसुशोभनं ॥ १८ ॥

अर्थ– तैसेही हे वरानने! प्राजापत्य संवत्सरमें गाय बहुत दूध देनेवाली होतीं हैं. और सब जगत् निरोग व धनधान्ययुक्त होता है ॥ १७ ॥ और हे सुशोभने! अंगिरानामक संवत्सरमें सबलोग नित्य उत्साहयुक्त होतेहैं. और वर्षाकालमें सुकाल, क्षेम, आरोग्य ये होते हैं ॥ १८ ॥

सस्यवृद्धिःप्रजायेतश्रीमुखेसुरवंदिते॥बहुक्षीरास्तथागावोजलदाबहुवर्षिणः ॥ १९ ॥ जायंतेसर्वसस्यानिभावेवर्षेवरानने ॥ हाहाभूतंजगत्सर्वंसर्वधान्यमहर्घता ॥ २० ॥

अर्थ–तथा हे सुरवन्दिते! श्रीमुख संवत्सरमें धान्यकी वृद्धि होतीहै. व गायें बहुत दूधवाली होतींहैं. और मेघ बहुत बर्सनेवाले होतेहैं ॥ १९ ॥ और हे वरानने! भाव संवत्सरमें सब धान्य होते हैं. और सब जगत् हाहाभूत होताहै. तथा सब धान्य महँगे हो जातेहैं ॥ २० ॥

तैलंघृतंसमंयातियुवासंवत्सरेप्रिये ॥ निष्पत्तिःसर्वसस्यानांमध्यंवारिप्रकीर्तितं ॥ २१ ॥ वृक्षक्षीरगुडादीनांधातरिचवरानने ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंकर्पासस्यमहर्घता॥ २२ ॥

अर्थ–और हे प्रिये! युवा नामक संवत्सरमें तेल व घी समभावको प्राप्त होताहै. और सब धान्योंकी सिद्धि हो तथा जल मध्यम होताहै ॥ २१ ॥

और हे वरानने! धाता संवत्सरमें वृक्ष, दूध, व गुड़ादिकोंकी आधिक्यता, होतीहै. तथा सुकाल, क्षेम, आरोग्य और कपासकी महँगाई होतीहै ॥ २२ ॥

लवंगमधुगव्यंचत्वीश्वरेदुर्लभंप्रिये ॥ अनीतिरतुलावृष्टिर्बहुधा न्येतुवत्सरे ॥२३॥ विविधैर्धान्यसंवृद्धिःसुपुराणेसुधाधरे ॥२४॥

अर्थ—और बहुधान्य संवत्सरमें लौंग, सहत, गव्य, ये दुर्लभ नहीं होते. और अनीति तथा अतुल वृष्टि होतीहै ॥ २३ ॥ और हे सुधाधरे! सुपुराण संवत्सरमें अनेक प्रकारके धान्योंकी वृद्धि होतीहै ॥ २४ ॥

राजनाशोथदुर्भिक्षंतथातस्करतोभयं ॥ क्वचित्सौख्यंक्वचिद्दुःखं प्रवृत्तेब्देप्रमाथिनि ॥ २५ ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसर्वव्याधिविव र्जितं ॥ हृष्टपुष्टजनाःसर्वेविक्रमेचवरानने ॥ २६ ॥

अर्थ—और प्रमाथी संवत्सर लागनेपर राजनाश, दुर्भिक्ष, चौरभय, कहीं सुख, कहीं दुःख यह फल होताहै ॥ २५ ॥ हे वरानने! विक्रम संवत्सरमें संपूर्ण व्याधियोंसे रहित सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य होताहै और संपूर्ण मनुष्य आनंदसे परिपूर्ण होतेहैं ॥ २६ ॥

कोद्रवाशालिमुद्गाश्चयवाश्चद्विदलंतथा ॥ विरोधोन्यंचदुर्भिक्षं वृषाब्देशुभलोचने ॥ २७ ॥ चणकामुद्गमाषाश्चकंगुण्याद्यास्तथै वच ॥ विचित्राजायतेवृष्टिश्चित्रभानौनसंशयः ॥ २८ ॥

अर्थ—हे शुभलोचने! वृषसंवत्सरमें कोदव, चांवल, मूंग, यव तथा दाल, इन चीजोंका अभाव होताहै और परस्पर विरोध होताहै और दुर्भिक्षभी होताहै ॥ २७ ॥ चित्रभानु संवत्सरमें चना, मूंग, उर्द, कांकुनि आदि धान्य उत्पन्न होतेहैं और वर्षा विचित्र होतीहै. इसमें संशय नहीं है ॥ २८ ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंस्वच्छंचनिरुपद्रवं ॥ व्यवहारोभवेच्छ्रेष्ठःसुभा नौचवरानने ॥ २९ ॥ दुर्भिक्षंजायतेघोरंचौरोपद्रवसंकुलं ॥ अ नावृष्टिःसमाख्याताताराणेवरवर्णिनि ॥ ३० ॥

अर्थ—हे वरानने! सुभानु संवत्सरमें उपद्रवरहित निर्मल सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता इत्यादिक होतेहैं. और श्रेष्ठ व्यवहार होताहै ॥ २९ ॥ हे वरव-

र्णिनि! (हे पार्वती!) तारण संवत्सरमें चोरोंके उपद्रवसे युक्त भयंकर दुर्भिक्ष होताहै और वर्षा नहीं होतीहै ॥ ३० ॥

बहुसस्यानिजायंतेसर्वदेशेषुसुंदरि ॥ सौराष्ट्रेनाढ्यदेशेषुपार्थिवे वत्सरेभवेत् ॥ ३१ ॥ अल्पाचजायतेवृष्टिर्धान्यमौषधिपीडितं ॥ सस्यंभवतिसामान्यंव्ययेसंवत्सरेप्रिये ॥३२॥ इतिब्रह्मविंशीफलं ॥

अर्थ–हे सुंदरि! पार्थिव संवत्सरमें सब देशोंमे बहुतसे धान्य उत्पन्न होतेहैं और सौराष्ट्र, कर्नाटक देशमें अत्यंत धान्य उत्पन्न होतेहैं ॥ ३१ ॥ हे प्रिये! व्यय संवत्सरमें वर्षा थोड़ी होवे. और धान्य जलरूप औषधिसे पीड़ित हो. और खेती साधारण होवे ॥ ३२ ॥ इस प्रकार ब्रह्मविंशी फल हुवा ॥

तोयपूर्णाभवेद्धात्रीसर्वसिद्धिप्रपूरिता ॥ सुभिक्षंसुस्थितंसर्वं सर्वजिद्वत्सरेप्रिये ॥३३॥ ज्वरोग्निःप्रबलःप्रोक्तोधान्यमौषधिपी डितं ॥ सर्वधारिणिवर्षेचकष्टंलोकेप्रजाप्रिये ॥ ३४ ॥

अर्थ–हे प्रिये! सर्वजित् संवत्सरमें पृथ्वी जलसे परिपूर्ण और संपूर्ण सिद्धियोंसे परिपूर्ण होतीहै. और सबप्रकारका सुभिक्ष स्थित रहताहै ॥ ३३ ॥ सर्वधारी संवत्सरमें ज्वर और अग्नि प्रबल कही है और धान्य जलरूप औषधिसे पीड़ित हो तथा संवत्सरमें कष्ट उत्पन्न होवे ॥ ३४ ॥

प्रजावैकल्यताघोरापीडिताव्याधितस्करैः ॥ अल्पक्षीरघृतागा वोविरोधीवत्सरेप्रिये ॥ ३५ ॥ अल्पंचैवजगत्सर्वंवत्सरेशलभ स्तथा ॥ विक्रमेजलवृष्टिःस्यान्नान्यथैवसुशोभने ॥ ३६ ॥

अर्थ–हे प्रिये! विरोधी संवत्सरमें प्रजा भयंकर व्याधि रूपी तस्करोंसे पीड़ित व विकल होती हैं. और गौवें थोड़ा दूध तथा घी देनेवाली होतीं हैं. ॥ ॥ ३५ ॥ हे सुशोभने! विक्रमी संवत्सरमें संपूर्ण जगत् थोड़ा होजाता है. तथा टाड़ीभी चारोंतरफ आतीहै. और जलकी वर्षा होतीहै. और कुछ नहीं हो सक्ता ॥ ३६ ॥

अल्पोदकास्तथामेघावर्षंतेखंडमंडलं ॥ निष्पत्तिःसर्वसस्यानांख रेसंवत्सरेप्रिये ॥३७॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसौख्यंभवतिशोभनं ॥ बहुक्षीरघृतागावोनंदनेनंदिताःप्रजाः ॥ ३८ ॥

अर्थ—हे प्रिये! खर संवत्सरमें थोड़े जलवाले मेघ कहीं वर्षते हैं कहीं नहीं वर्षते परंतु सब धान्योंकी उत्पत्ति होतीहै ॥ ३७ ॥ नंदन संवत्सरमें सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य, तथा उत्तम सुख होताहै. और गौवैं बहुत घी, दूध देनेवाली होतींहैं. तथा जैसा संवत्सरका नाम है उसी तरह संपूर्ण प्रजा आनंदित होतींहैं ॥ ३८ ॥

क्षत्रियाश्चतथावैश्याःशूद्राश्चनटनर्तकाः ॥ पीड्यंतेप्रचुरैरोगैर्विजयाब्देतुसुंदरि ॥ ३९ ॥ मनुष्याणांचदुःखंस्याज्जगद्गदसमाकुलं ॥ सुभिक्षंराष्ट्रस्वास्थ्यंचजयेचैववरानने ॥ ४० ॥

अर्थ—हे सुंदरि! विजयनामक संवत्सरमें क्षत्रिय, तथा वैश्य और शूद्र, नट तथा नाचनेवाले ये सब अधिक रोगसे पीड़ित होतेहैं ॥ ३९ ॥ हे वरानने! जय संवत्सरमें मनुष्योंको दुःख और जगतके रोगोंसे व्याकुलता तथा सुभिक्ष और देशोंकी स्वस्थता होतीहै ॥ ४० ॥

तुषंधान्यंक्षयंयातिकोद्रवाणांमहर्घता ॥ व्यवहारानवर्ततेमन्मथे दुःखिताःप्रजाः ॥४१॥ पीड्यंतेसर्वधान्यानिवृष्टिर्नैवप्रजायते ॥ दुर्मुखेचैवदुर्भिक्षंमयाख्यातंसुलोचने ॥ ४२ ॥

अर्थ—मन्मथ संवत्सरमें भूसा, व धान्यका नाश होताहै. और कोदोंकी मंहंगई होतीहै. तथा परस्पर व्यवहारभी नहीं चलता और प्रजा दुःखित होतींहैं ॥ ४१ ॥ हे सुलोचने! दुर्मुख संवत्सरमें सब धान्य शूख जाते हैं. और वर्षाभी नहीं होतीहै. तथा दुर्भिक्षभी होताहै. ऐसा मैने कहा है ॥४२॥

तस्करैःपार्थिवैर्देविह्यभिभूतमिदंजगत् ॥ अर्घंभवतिसामान्यं हेमलंबेमहेश्वरि ॥ ४३ ॥ विषमस्थंजगत्सर्वंविविधोपद्रवैर्युतं॥ विलंबेदेविपीड्यंतेजनाश्चशुकमूषकैः ॥ ४४ ॥

अर्थ—हे देवि! हे महेश्वरि! हेमलंबी संवत्सरमें चोरी करनेवाले राजावोंसे यह जगत् पीड़ित हो जाताहै. और सब चीजोंका मूल्य साधारण होताहै ॥ ॥ ४३ ॥ हे देवि! विलंब संवत्सरमें अनेक उपद्रवोंसे युक्त संपूर्ण जगत् विषमभावसे स्थित होताहै, मूस और सुवा इनका अधिकार होताहै. और संपूर्ण मनुष्य पीड़ित होतेहैं ॥ ४४ ॥

अल्पोदकाभवेन्मेघाधान्यमौषधिपीडितं ॥ दुर्भिक्षंजायतेसर्वं विकारीवत्सरेप्रिये ॥ ४५ ॥ मेदिनीशुष्यतेसर्वाधनधान्यप्रपीडनं ॥ शार्वरीवत्सरेदेविपीड्यंतेमानवाभुवि ॥ ४६ ॥

अर्थ–हे प्रिये! विकारी संवत्सरमें मेघ थोड़े जलवाले होतेहैं. और धान्य जलरूप औषधिसे पीड़ित होताहै. और सब प्रकारका दुर्भिक्ष होताहै॥४५॥ हे देवि! शार्वरी संवत्सरमें संपूर्ण पृथ्वी सूख जातीहै. और धनधान्यकी पीड़ा होतीहै. तथा पृथ्वीमें मनुष्य पीड़ाको प्राप्त होतेहैं ॥ ४६ ॥

धनधान्यसमायुक्तंजगत्सर्ववरानने ॥ मेघाश्चप्रबलाज्ञेयाप्लवसंवत्सरेप्रिये ॥ ४७ ॥ सुभिक्षंसर्वदेशेषुक्षात्रागोब्राह्मणाश्चवै ॥ लभंतेचप्रजाःसौख्यंशुभकृद्वत्सरेप्रिये ॥ ४८ ॥

अर्थ–हे प्रिये ! हे वरानने ! प्लवसंवत्सरमें संपूर्ण जगत् धनधान्यसे युक्त होताहै. और मेघ प्रबल वर्षा करैंगे ऐसा जानना ॥ ४७ ॥ हे प्रिये! शुभकृत् संवत्सरमें इनको सब देशोंमे सुभिक्ष होताहै और क्षत्रिय, गौ, ब्राह्मण, संपूर्ण प्रजा सुखको प्राप्त होतेहैं ॥ ४८ ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसौख्यंचनिरुपद्रवं ॥ नंदंतेब्राह्मणागावोशोभनेचवरानने ॥ ४९ ॥ विषमस्थंजगत्सर्वव्याधिवृंदसमाकुलं अल्पवृष्टिस्तुविज्ञेयाक्रुधिक्रोधंप्रजायते ॥ ५० ॥

अर्थ–हे वरानने! शोभन संवत्सरमें सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता और उपद्रवरहित सुख होताहै. और ब्राह्मण गौओंको आनंद होताहै ४९ ॥ क्रुधी संवत्सरमें बाह्यरोगसमूहोंसे आकुल संपूर्ण जगत् विषमभावसे स्थित रहताहै. तथा वर्षा थोड़ी होतीहै. ऐसा जानना और क्रुधी संवत्सरमें क्रोधभी उत्पन्न होताहै ॥ ५० ॥

सर्वत्रजायतेसौख्यंवृष्टिर्भवतिसुंदरि ॥ विश्वावसौमहादेविकर्पासस्यमहर्घता ॥ ५१ ॥ पार्थिवैर्मांडलिकैश्चसामंतैर्दंडनायकैः ॥ पीड्यंतेवैप्रजाःसर्वाक्षुधार्ताश्चपराभवे ॥५२॥ इतिविष्णुविंशीफलानि ॥

अर्थ—हे महादेवि! विश्वावसु संवत्सरमें सब जगे सुख होता है. तथा वर्षा अच्छी होतीहै. और कपासकी मंहंगई होतीहै ॥ ५१ ॥ पराभव संवत्सरमें मंडलेश्वर राजावोंसे तथा दंड देनेके अधिकार वालोंसे दंड देनेसे और क्षुधासे दुःखी संपूर्ण प्रजा पीड़ित होतींहैं ॥ ५२ ॥ इसप्रकार विष्णुविंशीका फल हुवा.

तुषधान्यानिपीड्यंतेग्रीष्मेवर्षतिमाधवे ॥ प्लवंगेपीड्यंतेसर्वेसर्वत्रभयमंडलं ॥५३॥ तोयपूर्णोभवेन्मेघोवर्षतेचधरातले ॥ उपद्रवस्तुराज्ञांवैसर्वत्रकीलकेप्रिये ॥ ५४ ॥

अर्थ—प्लवंग संवत्सरमें ग्रीष्मऋतु तथा वसंतऋतुमें जलके वर्षनेपर बुसा और धान्यका नाश होताहै. और संपूर्ण प्रजा पीड़ित होतेहैं. तथा सब जगे भय होताहै ॥५३॥ हे प्रिये! कीलक संवत्सरमें मेघ जलसे परिपूर्ण होतेहैं. और पृथ्वीतलमें वर्षा करते हैं. तथा सब जगह राजावोंका उपद्रव होताहै ॥ ५४ ॥

जायंतेसर्वधान्यानिस्वास्थ्यंचनिरुपद्रवं ॥ सौम्यवृष्टिर्वरारोहे सौम्येसौम्यंप्रवर्त्तते ॥५५॥ जलपूर्णोभवेन्मेघोवर्षतेचदिनेदिने ॥ साधारणेसमर्घंचभवेद्धैनात्रसंशयः ॥ ५६ ॥

अर्थ—हे वरारोहे! सौम्य संवत्सरमें सब प्रकारके धान्य उत्पन्न होतेहैं और उपद्रव रहित स्वस्थता होतीहै तथा उत्तम वर्षा होतीहै. पुनः सबप्रकारकी उत्तमता होतीहै ॥ ५५ ॥ साधारण संवत्सरमें मेघ जलसे पूर्ण होतेहैं. और दिन दिन प्रति वर्षतेहैं. तथा साधारण सस्ता होताहै. इसमें संशय नहीं-है ॥ ५६ ॥

माधवेवर्षतेमेघोदेशेखंडलमंडले ॥ विरोधकृतिकान्यकुब्जेविरोधंनविनश्यति ॥५७॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंधनधान्यसमाकुलं॥ दुष्टमित्रोपकारीचपरिधाविनिवरानने ॥ ५८ ॥

अर्थ—विरोधकृत् संवत्सरमें मेघ वैशाख महींनामें चारोंतरफ देशमें वर्षा करतेहैं. और कान्यकुब्जदेशमें विरोध शांत नहीं होताहै ॥ ५७ ॥ हे वरानने! परिधावी संवत्सरमें सुभिक्ष, क्षेम, और धनधान्यसे युक्त आरोग्यता तथा इष्टमित्रका उपकार होताहै ॥ ५८ ॥

निष्पत्तिःसर्वसस्यानांसर्वेचान्नसमन्विताः ॥ सुभिक्षंचतथासौ रूयंप्रमादिनिनसंशयः ॥ ५९ ॥ नश्यंतिसर्वसस्यानिसर्वधा न्यमहर्घता ॥ घृतंमहर्घंतैलंचआनंदेनंदिताःप्रजाः ॥ ६० ॥

अर्थ–प्रमादी संवत्सरमें संपूर्ण अन्नोंकी उत्पत्ति और सब लोग अन्नोंसे युक्त होतेहैं व सुभिक्ष तथा सुख इत्यादिक होतेहैं. इसमें संशय नहीं है ॥५९॥ आनंद संवत्सरमें सब खेतियोंका नाश होताहै. और सब धान्योंकी मंहंगई होतींहै. तथा घी तेल मंहँगा होताहै. और सब प्रजा आनंदित होतींहैं ॥ ६० ॥

कोद्रवाःशालिमुद्गाश्चपीडिताश्चवरानने ॥ राक्षसेचविनश्यंति पशवोनटनर्तकाः ॥६१॥ मेघोनवर्षतेतत्रपिंगलेनात्रसंशयः॥ गोमहिष्योहिरण्यंचरूप्यंताम्रंविशेषतः ॥ ६२ ॥

अर्थ–हे वरानने! राक्षस संवत्सरमें कोदव धान्य, मूंग इनका नाश होता है. और पशु विनाशको प्राप्त होतेहैं. तथा अन्य जे नट अथवा नाचनेवाले हैं तिन सबको विनाश होताहै ॥ ६१ ॥ हे देवि! पुनः तिस पिंगल संवत्सरमें मेघ नहीं वर्षतेहैं. इसमें संशय नहीं है. गौवें, भैंसें, सुवर्ण इनको और रूपा तांबा इनको विशेषतासे ॥ ६२ ॥

सर्वस्वंविक्रयित्वाचकर्तव्योधान्यसंग्रहः ॥ तेनधान्येनतेदेवि दुर्भिक्षंक्रमतेजनाः ॥ मघवेवर्षतेदेविसर्वसस्यंप्रजायते॥ ६३॥ अजानांजायतेरोगंकालयुक्तेविशेषतः ॥ राजयुद्धंभवेद्घोरंप्रजा नाशंवरानने ॥ ६४ ॥

अर्थ–सबधनको बेंचके धान्यका संग्रह करै. हे देवि! तिस धान्यसे वे खरी-दनेवाले मनुष्य दुर्भिक्षको उलंघन करतेहैं. हे देवि! फिर मेघके वर्षनेपर सब प्रकारकी खेती उत्पन्न होतीहै ॥ ६३ ॥ और बकरियोंके रोग उत्पन्न होतेहैं. और हे वरानने! कालयुक्त संवत्सरमें विशेष रोग होताहै. और राजावोंका भयंकर युद्ध होताहै. तथा प्रजावोंका नाशभी होताहै ॥ ६४ ॥

तोयपूर्णोभवेन्मेघोबहुसस्यावसुंधरा ॥ सुखिनःपार्थिवाःसर्वेसि

द्धार्थेश्टणुसुंदरि ॥ ६५ ॥ अल्पतोयप्रदामेघाअल्पसस्याचमे
दिनी ॥ निष्ठुराःपार्थिवादेविरौद्रेरौद्रंप्रजायते ॥ ६६ ॥

अर्थ—हे सुंदरि! तुम सुनो. सिद्धार्थ संवत्सरमें मेघ जलसे परिपूर्ण होतेहैं. और पृथ्वी बहुत धान्यवाली होतीहै. और संपूर्ण राजा सुखी होतेहैं ॥६५॥ हे देवि! रौद्र संवत्सरमें मेध थोड़ा वर्षतेहैं तथा पृथ्वीमें अन्न थोड़ा उत्पन्न होताहै. और संपूर्ण राजा निष्ठुर हो जातेहैं. और सब कार्य भयंकर होतेहैं ॥६६॥

सुभिक्षंसर्वसामान्यंव्यवहारंनवर्त्तते ॥ भवेच्चमध्यमावृष्टिर्दुर्मु
खेवत्सरेप्रिये ॥ ६७ ॥ सुभिक्षंजायतेस्वस्थंसर्वोपद्रववर्जितं ॥
प्रजानांजायतेसौख्यंदुंदुभौचैववत्सरे ॥ ६८ ॥

अर्थ—हे प्रिये! दुर्मुखसंवत्सरमें साधारण सुभिक्ष होताहै. और व्यवहार नहीं चलताहै. और वर्षा मध्यम होतीहै ॥ ६७ ॥ दुंदुभि संवत्सरमें संपूर्ण उपद्रवोंसे रहित, स्वस्थ सुभिक्ष होताहै. और प्रजावोंको सुख उत्पन्न होता है ॥ ६८ ॥

अन्यच्चकथयिष्यामिश्टणुचैकमनाःप्रिये॥ सर्वस्वंविक्रयित्वाच
कर्तव्योधान्यसंग्रहः ॥ ६९ ॥ परस्परंनरेंद्राणांसंग्रामंदारुणंभ
वेत् ॥ सर्वमेतद्भवेद्देविरुधिरोद्गारवत्सरे ॥ ७० ॥

अर्थ—हे प्रिये! कुछ कहताहूं सो तुम मन लगाकर सुनों. कि सबको बेंचके धान्य संग्रह करना ॥ ६९ ॥ हे देवि! रुधिरोद्गार संवत्सरमें सब इसी प्रकारका फल होता है. और राजोंवोंका परस्पर भयंकर संग्राम होताहै ॥७०॥

दुर्भिक्षंचमहादेविक्रूरचेष्टानराधिपाः ॥ संग्रमंचकरोत्युग्रंरक्ता
क्षौचैववत्सरे ॥ ७१ ॥ रोगाःमरणदुर्भिक्षंविविधोपद्रवसंकुल ॥
क्रोधनेवत्सरेसम्यग्मयाख्यातंसुलोचने ॥ ७२ ॥

अर्थ—हे महादेवि! रक्ताक्षी संवत्सरमें दुर्भिक्ष होताहै. और राजा खराब कामकरनेवाले होतेहैं. और भयंकर संग्रामभी करता है ॥ ७१ ॥ हे सुलोचने! अनेक प्रकारके उपद्रवोंसे युक्त क्रोधन संवत्सरमें रोग, भरण, दुर्भिक्ष मैंने अच्छी प्रकार कहा ॥ ७२ ॥

मंडलंकुरुदेशंचकलिंजनसमप्रभं॥क्षयेक्षयंतिसर्वत्रनान्यथानग नंदिनि ॥ ७३ ॥ षष्टिसंवत्सराश्चाथफलंतेषांशुभाशुभं॥कथि तंतवचार्द्धांगिगुह्याद्गुह्यतरंमया ॥ ७४ ॥

हे नगनंदिनि (हे पार्वति!) क्षय संवत्सरमें कलिंजनकी सम प्रभावाला मंडल और कुरुदेश सब जगे नाश होता है. यह बात अन्यथा नहीं होती ॥ ॥ ७३ ॥ हे अर्द्धांगि? जो तुमने पूंछा सो मैंने गोप्यसे गोप्य साठि संवत्सर और उनका शुभ अशुभ फल तुमको कहा ॥ ७४ ॥

दुर्लभंमानुषेलोकेइदंशास्त्रंसुनिश्चितं ॥ मयातवापिकथितंत्रैलो क्येप्रकटीकृतं ॥७५॥ इतिश्रीरुद्रयामलेसारोद्धारेउमामहेश्वरसं वादेमेघमालायांअर्घकांडेषष्टिसंवत्सरफलवर्णनोनामद्वितीयो ध्यायः ॥ २ ॥

अर्थ–मनुष्यलोकमें यह निश्चित शास्त्र दुर्लभ है. तथापि मैंने तुमको कहा. सो तीनों लोकोंमें प्रकट किया ॥ ७५ ॥ इति श्रीरुद्रयामले सारोद्धारे उमामहे- श्वरसंवादे भाषाटीकायुतमेघमालायां अर्घकांडे षष्टिसंवत्सरफलवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥ ॥ कोराजाकश्चमंत्रीस्याद्धान्यमेघाधिपश्च कः ॥ देवदेवनमस्तुभ्यंकथ्यतांफलसंयुतं ॥१॥ ईश्वर उवाच॥ चैत्रादिमेषचापार्द्रातुलाकर्कटकेषुच ॥ नृपोमंत्रीधान्यमेघरस नीररसस्यपाः ॥ २ ॥

अर्थ–पार्वतीजी! कहतीहैं कि हे देवदेव! हे महादेव! किस वर्षमें कौन राजा, और कौन मंत्री होताहै? तथा धान्य व मेघोंका मालिक कौन होताहै ? सो आप फलसे संयुक्त कहो. आपके अर्थ नमस्कार है ॥ १ ॥ पार्वतीजीके ऐसे वचन सुन, महादेवजी कहतेहैं कि चैत्रादिक महीनोंमें मेष, धन, तुला, कर्क, इन्होंमें राजा, मंत्री, धान्य, मेघ, रस वा जलके रक्षक, धान्यके रक्षक, कहताहूं ॥ २ ॥

अथैषांफलानि ॥ सूर्येनृपेअल्पजलाश्चमेघाअल्पंचधान्यंफलम

ल्पवृक्षे ॥ अल्पंपयोगोषुजनेषुपीडाश्चौराग्निशंकामरणंनृपाणां
॥ ३ ॥ भौमेनृपेअग्निभयंनराणांचौराकुलंपार्थिवविग्रहंच ॥
दुःखंप्रजाव्याधिवियोगपीडास्तुच्छंजलंवर्षतिखंडखंडं ॥ ४ ॥

अर्थ–इसके अनंतर इन्होंके फल कहता हूं, सूर्य राजा भयेपर मेघ थोड़ा जल वर्षै, धान्य थोड़ी होवै, वृक्षोंमें थोड़े फल फरैं. थोड़ा डाल हो मनुष्यों-में पीड़ा हो, चोर और अग्निको शंकाहो और राजावोंका मरण हो ॥ ३ ॥ मंगलको राजा भयेपर मनुष्योंको अग्निसे भय हो चोरोंसे आकुलता और राजावोंका विग्रह हो, तथा प्रजा दुःख, व्याधि, वियोग इन्होंसे पीड़ित हों और थोड़ा जल खंडखंडमें बर्षै अर्थात् कहीं वर्षा हो कहीं न हो ॥ ४ ॥

बुधस्यराज्येसजलंमहीतलंगृहेगृहेभूरिविवाहमंगलं ॥ स्वस्थं
सुभिक्षंधनधान्यसंकुलंप्रवर्त्ततेदेवद्विजार्चनंच ॥ ५ ॥ गुरौनृपे
वर्षतिमेघधारयामहीतलेकामदुघाश्चधेनवः ॥ जयंतिविप्रान्ब
हुधाग्निसोत्सवंमहोत्सवंसर्वजनेषुवर्त्तते ॥ ६ ॥ ॥

अर्थ–बुधके राज्यमें पृथ्वीतल जलसे युक्त हो. और घरघरमें विवाहादिक मंगल बहुत हों तथा धनधान्यसे युक्त स्वस्थ सुभिक्ष होवे और देवता वा ब्राह्मण इनका पूजन होवे ॥ ५ ॥ बृहस्पतिको राजाभयेपर पृथ्वीतलमें मेघ धारारूपसे वर्षा करते हैं. और गौवैं मनोरथके देनेवालीं होतीं हैं. ब्राह्मण जापको करते हैं अग्नि हमेस उत्सवसहित होते हैं अर्थात् हवन की जाती है. और संपूर्ण मनुष्योंमें अत्यंत उत्सव होता है ॥ ६ ॥

शुक्रस्य राज्येबहुसस्यमेदिनीप्रभूततोयाचभवेद्धरित्री ॥ फलं
तिवृक्षाबहुगोप्रसूतावसुंधरापार्थिवनंदगोकुलं ॥ ७ ॥ शनैश्च
रेभूमिपतौसकृज्जलंप्रभूतरोगैःपरिपीडिताजनाः ॥ युद्धंनृपा
णांबहुतस्कराद्भयंभ्रमंतिलोकाःक्षुधयाप्रपीडिताः ॥ ८ ॥ इति
राजफलं ॥ ॥ ॥

अर्थ–शुक्रकी राज्यमें पृथ्वी अधिक खेतीवाली होती है. और अधिक जलवाली पृथ्वी होती है तथा वृक्ष फलते हैं. और अधिक बछवोंके उत्पन्न करनेवाली पृथ्वी, पृथ्वीसंबंधी नंदका गोकुल करती हैं ॥ ७ ॥ शनिश्चर

पृथ्वीका राजा भयेपर जल थोड़ा वर्षताहै और उत्पन्न रोगोंसे मनुष्य पीड़ित होते हैं. तथा राजावोंका युद्ध होता है. और अधिक चोरोंसे भय होता है. अथवा मनुष्य क्षुधासे पीड़ित हो, भ्रमते हैं ॥ ८ ॥ इतिराजफलं ॥

अथमंत्रिफलं ॥ सूर्येमंत्रिणिवैदेविपीडाभवतिदारुणा ॥ प्रचुरंधनधान्यानिविप्रपीडामहद्भयं ॥ ९ ॥ रसोमहर्घतांयातिशिरोर्त्तिश्चैवपीडनं ॥ देवार्चनंनकुर्वंतिअल्पसस्याचमेदिनी ॥१०॥

अर्थ–हे देवि ! सूर्य मंत्री भयेपर भयंकर पीड़ा होती है. और धन धान्य अधिक होती है. तथा ब्राह्मणोंको पीड़ा यह महाभय होता है. ॥९॥ संपूर्ण रस (निमक आदि) मंहेंगे होते हैं. शिरका दुखना यह पीड़ा होती है, और मनुष्य देवतावोंकी पूजा नहीं करते और पृथ्वीमें खेती थोड़ी होती है ॥ १० ॥

सोमेमंत्रिणिवैदेविस्वस्थंधात्रीप्रवर्त्तते ॥ स्वाहाकारंवषट्कारं घटदुग्धाश्चधेनवः ॥११॥ रसार्घंप्रचुरंदेविफलपुष्पाणिभूरुहाः ॥ पशुपुत्रेषुनारीणांनानाजनसुखस्यच ॥ १२ ॥ ॥

अर्थ–हे देवि ! चंद्रम मंत्री भयेपर पृथ्वी स्वस्थ होती है स्वाहाकार और वषट्कार तथा घड़े समान दूधदेनेवाली गौवैं होती हैं ॥ ११ ॥ हे देवि ! रसका मूल्य अधिक होता है. और वृक्ष फलफूलोंसे युक्त होते हैं तथा पशु, पुत्र, स्त्रियोंको सुख और नानाप्रकारके मनुष्योंको सुख होता है ॥१२॥

भौमेमंत्रिगतेदेविकरदग्धस्यवेदनं ॥ अतीसारंबहुक्लेशंशिरोर्त्तिश्चैवदारुणा ॥ १३ ॥ धान्यंमहर्घतांयातिविरलंवर्षतेमहीं ॥ अल्पवृष्टिरनारोग्यंकंठरोगोमहोत्कटः ॥ भयंचदारुणंलोकेपीडाभवतिदारुणा ॥ १४ ॥ ॥ ॥

अर्थ–हे देवि ! मंगल मंत्री भयेपर हाथ जलनेका दुःख होवे तथा बहुत क्लेशवाला अतीसार होवे और भयंकर शिरकी पीड़ा होवे ॥ १३ ॥ और धान्य महेंगी होवे. मेघ पृथ्वीमें कहीं वर्षा करैं कहीं न करैं तथा रोगकारी वर्षा थोड़ी होवे और अत्यंत उत्कट कंठका रोग होवे. और लोकमें दारुण भय होवे. अथवा भयंकर पीड़ा होवे ॥ १४ ॥

बुधेमंत्रिणिवैदेविक्रूरासौम्याश्चपार्थिवाः ॥ स्त्रीणांभर्त्तासमोदे
विमहास्नेहेप्रवर्त्तते ॥ १५ ॥ तुषान्नंप्रचुरंयांतितृणंसस्यमनेक
धा ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंमेघावर्षंतिवैभृशं ॥ १६ ॥ ॥

अर्थ—हे देवि ! बुध मंत्री भयेपर क्रूर अच्छे हो जाते हैं. और राजा स्त्रीवा भर्त्ताके सम अत्यंत स्नेहसें चलता हैं ॥ १५ ॥ भूसा व अन्न, अधिक होता है. और तृण तथा खेती अनेक प्रकारसे होती है तथा सुभिक्ष, क्षेम आरोग्य होता है. और मेघ निश्चय अच्छी प्रकार वर्षते हैं ॥ १६ ॥

गुरौमंत्रिणिवैदेवियजंतिदेवब्राह्मणाः ॥ सुधर्मनिरतालोकाः
पार्थिवाश्चतथाप्रिये ॥ १७ ॥ सस्यानिचप्ररोहंतिमेघावर्षंतिशो
भनं ॥ मूषकाःशलभाःशुकाः (?)॥ ॥ ईतयोविविधाकारा
गुरुवृष्टिस्तुसागरे ॥ १८ ॥ ॥ ॥

अर्थ—हे देवि ! बृहस्पति मंत्री भयेपर देवता ब्राह्मण पूजे जाते हैं. तथा मनुष्य उत्तम धर्ममें प्रीति करते हैं और हे प्रिये ! तैसे राजाभी अपने धर्ममें प्रीति करते हैं ॥ १७ ॥ और खेती जामती हैं. मेघ अच्छी वर्षा करते हैं. मूस, टाड़ी, सुवा और अनेक प्रकारकी (अत्यंत वर्षना न वर्षना) इत्यादिक सात ईती नहीं होती हैं. और समुद्रमें अत्यंत वर्षा होती है ॥ १८ ॥

सस्यंमहर्घतांयातितस्मिन्कालेचनान्यथा ॥ सरितोमार्गतो
यांतिजलमेघाःसमाहिताः ॥ १९ ॥ शनौमंत्रिणिवैदेविनश्य
तेगोकुलंप्रिये ॥ व्यवहाराविनश्यंतिविव्हलीभूतदेवताः॥२०॥

अर्थ—तिस समयमें धान्य महेंगी होती है यह फल अन्यथा नहीं होसक्ता और नदियां रास्तासे बहती है. तथा मेघ जलसे युक्त होते हैं ॥१९॥ हे देवि ! शनैश्चर मंत्री भयेपर गौवोंका कुल नाश होता है. हे प्रिये ! तिस समय व्यवहार विनाशको प्राप्त होता है. और देवता विह्वल होते हैं ॥२०॥

असत्यवादिनोदृश्यंतेनानाजनपदाःप्रिये ॥ मेघोनवर्षतेतत्र
सौराष्ट्रेपूर्वसागरे ॥ २१ ॥ स्वयंराजास्वयंमंत्रीस्वयंसस्याधि
पोयदा ॥ स्वात्मेववाहकोयत्रइदंदृश्यंवरानने ॥ २२ ॥ ॥

अर्थ—हे प्रिये ! नानाप्रकारके देश असत्य बोलनेवाले दीख पड़ते हैं तहां सौराष्ट्रदेशके पूर्वके समुद्रमें मेघ नहीं वर्षा करते ॥ २१ ॥ हे वरानने ! आपही राजा और आपही मंत्री जो आपही धान्यका स्वामी हो, और जहां अपनेहीं बाहनसे युक्त हो तो यह देखने योग्य है कि ॥ २२ ॥

तत्रतोयंनपश्यंतिवर्जयित्वामहानदीं ॥ विक्रयित्वातदासर्वं कर्त्तव्यंधान्यसंग्रहं ॥२३॥ इतिमंत्रिफलं ॥ अथधान्येशफलं ॥ सूर्येधान्याधिपेयातेत्वल्पतोयप्रदाघनाः ॥ माषमुद्गतिलानां चमहर्घंशृणुसुंदरि ॥ २४ ॥ ॥ ॥

अर्थ—तहां महानदी गंगाआदिकोंको छोड़कर जल नहीं दीख पड़ता है. तब सब चीजोंको बेंचकर धान्यका संग्रह करने योग्य है ॥२३॥ इति मंत्रिफलं॥ इसके अनंतर धान्येशका फल कहते हैं. हे सुंदरि ! सूर्य धान्यके स्वामी भयेपर मेघ थोड़ा जल वर्षते हैं. और उर्द, मूंग तिलोंकी मंहगाई होती है. सो हे सुंदरि ! हे पार्वती ! तुम सुनो ॥ २४ ॥

चंद्रेधान्याधिपेयातेतोयपूर्णावसुंधरा ॥ वर्द्धंतेसर्वसस्यानिराज्ञां चविविधोत्सवं ॥२५॥ मुद्गमाषास्तिलासर्पिर्गोधूमाश्चप्रबाल काः ॥ महर्घंजायतेघोरंभौमोधान्याधिपोयदि ॥ २६ ॥ ॥

अर्थ—चंद्रमा धान्यके स्वामी भयेपर पृथ्वी जलसे परिपूर्ण होती है. और सब प्रकारकी खेती बढ़ती हैं तथा राज्य अनेकप्रकारके उत्सवयुक्त होती है ॥ २५ ॥ जो मंगल धान्यके स्वामी हों तो मूंग, उर्द, तिल, घी, गेहूं, मूंगा, इन्होंकी अधिकतासे मंहंगई होवे ॥ २६ ॥

बहुसस्ययुतापृथ्वीरसानांचमहर्घता ॥ नीतियुक्ताःसदाभूपा बुधोधान्याधिपोयदि ॥ २७ ॥ गोधूमशालिमुद्गाश्चकंगुमाषा श्चकोद्रवाः ॥ सुभिक्षंजायतेदेविगुरौधान्याधिपेसति ॥ २८ ॥

अर्थ—बुध धान्यके स्वामी भयेपर पृथ्वी अधिक खेतीसे युक्त होवे और रसोंकी मंहंगई होवे. और हमेसा राजा नीतिसे युक्त रहैं ॥ २७ ॥ हे देवि ! जो बृहस्पति धान्यके स्वामी हों तो, गेहूं, चाउर, मूंग, कांकुनि, उर्द, कोदो, इन्होंका सुभिक्ष होवे ॥ २८ ॥

सुभिक्षंजायतेस्वस्थंसर्वोपद्रववर्जितं ॥ शुक्रेधान्याधिपेजाते
महर्घंसुरसुंदरि ॥ २९॥ सौराष्ट्रेनाटदेशेचजायतेविग्रहंमहत् ॥
दुर्भिक्षंजायतेघोरंयदिधान्याधिपःशनिः ॥ ३० ॥ इतिधान्या
धिपफलं ॥　　　　　　　　　　॥　　　　　　　　॥

अर्थ–हे सुरसुंदरि! शुक्र धान्यके स्वामी भयेपर संपूर्ण उपद्रवोंसे रहित स्वस्थ सुभिक्ष होता है. पीछे मंहंगई होती है ॥ २९ ॥ जो शनैश्चर धान्यके स्वामी हों तो सौराष्ट्र और नाट देशमें अत्यंत विग्रह होवे. तथा भयंकर दुर्भिक्षभी होवे ॥ ३० ॥ इति धान्याधिपफलं ॥

अथमेघाधिपफलं ॥ रवौमेघाधिपेजातेस्वल्पतोयप्रदाघनाः ॥
अल्पधान्यंभवेल्लोकेनसुखंभूतलेक्वचित् ॥ ३१ ॥ चंद्रेमेघाधि
पेदेवितोयंसंजायतेबहु ॥ निंदंतिपार्थिवाःसर्वेप्रजानांचसुखं
सदा ॥ ३२ ॥　　　　　　　　　　॥　　　　　　　　॥

अर्थ–इसके अनंतर मेघोंके स्वामीका फल कहते हैं. कि, सूर्य मेघके स्वामी भयेपर मेघ थोड़ा जल वर्षै, और लोकमें थोड़ी धान्य होवे. और पृथ्वीतलमें कहीं भी सुख न होवे ॥ ३१ ॥ हे देवि! चंद्रमा मेघके स्वामी भयेपर अधिक जल वर्षै तथा संपूर्ण राजा आनंदित होवें, और प्रजावोंको हमेसा सुख होवे ॥ ३२ ॥

अनावृष्टिर्भवेल्लोकेधान्यानांचक्षयोभवेत् ॥ रसाश्चैवक्षयंयांति
भौमोमेघाधिपोयदि ॥ ३३ ॥ बुधेमेघाधिपेदेवितोयपूर्णाभवे
द्धरा ॥ लोकानांजायतेस्वास्थ्यंधनधान्यसमाह्वयः ॥ ३४ ॥

अर्थ–जो मंगल मेघके स्वामी हों तो लोकमें वर्षा न होवे और सब धान्योंका नाश होवे. और रसोंका भी नाश होवे ॥ ३३ ॥ हे देवि! बुध मेघके स्वामी भयेपर पृथ्वी जलसे पूर्ण हो तथा लोकोंका स्वस्थपना होवे. और धन धान्यकी उत्पत्ति होवे ॥ ३४ ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसर्वसस्यसमर्घता ॥ इक्षुदंडगुडाश्चैवगुरुर्मेघा
धिपोयदि ॥ ३५ ॥ कोद्रवामुद्गमाषाश्चकंगुण्याश्चैवशालयः ॥
माधवोवर्षतेदेविशुक्रोमेघाधिपोयदि ॥ ३६ ॥　　　　॥

अर्थ–जो बृहस्पति मेघके स्वामी हों तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता होवे सब धान्योंका और ऊख गुड़ इनकी मंहंगई होवे ॥ ३५ ॥ हे देवि ! जो शुक्र मेघके स्वामी हों तौ वैशाखके वर्षनेपर कोदो, व मूंग, उर्द, कांकुनि और धान इन्होंका मंहंगापन होवे ॥ ३६ ॥

शनौमेघाधिपेतोयंक्षयंयातिसहस्रधा ॥ देशास्तुप्रलयंयांतिस र्वसस्यमहर्घता ॥ ३७ ॥ इतिमेघाधिपफलं ॥ अथ रसेशफ लं ॥ घृतंतैलंगुडंक्षौद्रंयेचान्येमधुरादयः ॥ अर्घवृद्धिःप्रजायेतसू र्योयदिरसाधिपः ॥ ३८ ॥ ॥ ॥

अर्थ–शनैश्चर मेघके स्वामी भयेपर अनेक प्रकारसे जल नहीं वर्षता और देश प्रलयको प्राप्त होते हैं और सब धान्योंकी मंहंगई होती है ॥ ३७ ॥ इति मेघाधिपफलं ॥ अथ रसेशफलं ॥ जो सूर्य रसोंका स्वामी हों तो घी, तेल, गुड़, सहेत और जे मीठे पदार्थ तिन्होंके मूल्यकी अधिकता होवे॥३८॥

घृतंतैलंगुडंक्षौद्रंपयश्चदधिशर्करा ॥ सर्वंसमर्घतांयातियदिचं द्रोरसाधिपः ॥ ३९॥ राजिकालवणंसर्पिस्तिलतैलगुडादिकं ॥ अर्घवृष्टिर्भवेल्लोकेभौमोयदिरसाधिपः ॥ ४० ॥ ॥

अर्थ–जो चंद्रमा रसोंके स्वामी हों तो घी, तेल, गुड़, सहेत, दूध, दही, शर्करा, ये सब पदार्थ मंहंगे होते हैं ॥ ३९ ॥ जो मंगल रसोंके स्वामी हों तो राई, निमक, घी, तिल, तेल, गुड़ आदिक इन चीजोंकी लोकमें मूल्य-की अधिकता होती है ॥ ४० ॥

भवंतिगावःसुदुग्धाःफलितावृक्षजातयः ॥ नीतियुक्ताःसदा भूपाबुधोयदिरसाधिपः ॥ ४१ ॥ तुषसस्यमनावृष्टिःसर्वेपाप रतानराः ॥ गुरौरसाधिपेजातेफलमीदृग्विधंभवेत् ॥ ४२ ॥

अर्थ–जो बुध रसोंके स्वामी हों तो गौवें उत्तम दूध देनेवाली होती हैं वृक्ष जाति फलते हैं और राजा हमेश नीतिमें युक्त रहेते हैं ॥ ४१ ॥ बृह-स्पति रसाधिप होनेपर ऐसा फल होता है कि बूसा व धान्य कम हो वृष्टि कम हो, और सब मनुष्य पापपरायण होते हैं ॥ ४२ ॥

वसुधापालनेसक्ताभवंतिनृपपुंगवाः ॥ बहुसस्यप्रदापृथ्वीशु

क्रोयदिरसाधिपः ॥ ४३ ॥ रसाधिपंगतेसौरेमेघानश्यंतिभू
तले ॥ ४४ ॥ इतिरसाधिपफलं ॥ ॥

अर्थ–जो शुक्र रसोंके स्वामी हों तो श्रेष्ठ राजा पृथ्वीके पालन करनेमें समर्थ होते हैं. और पृथ्वी बहुत धान्य उत्पन्न करती है ॥ ४३ ॥ शनैश्चर रसोंके स्वामी भयेपर तुष, खेतीके प्रति अवर्षण होवे. और संपूर्ण मनुष्य पापमे रत होंवे. और पृथ्वीतलमें मेघ नाश होंवें ॥ ४४ ॥ इति रसाधिप फलं ॥

अथ सस्याधिपफलानि ॥ महर्घंसस्यनाशंचतस्कराःपार्थिवाः
प्रिये ॥ रवौसस्याधिपेराजायुध्यतेघोरदारुणं ॥ ४५ ॥ शीत
दैर्घ्यंतदाज्ञेयंमेघावर्षंतिवैभृशं ॥ सस्याधिपंगतेसोमेवर्षतेचा
मृतोपमं ॥ ४६ ॥ ॥ ॥

अर्थ–अथ सस्याधिपफलानि ॥ हे प्रिये! सूर्य धान्यके स्वामी भयेपर मंहंगा होवे. और धान्यका नाश होवे. पुनः संपूर्ण राजा चोर हो जावें और राजा भयंकर युद्ध करै॥४५॥चंद्रमा धान्यके स्वामी भयेपर शीतलताकी आधिक्यता जानना. और मेघ अत्यंत वर्षा करते हैं. और मेघ अमृतकी तुल्य वर्षा करैं ॥४६॥

सस्याधिपंगतेभौमेमघवानैववर्षति ॥ सस्यंमहर्घतांयातितस्क
राविपुलास्तथा ॥४७॥ बुधेसस्याधिपेजातेमेघावर्षंतितद्भृशं ॥
सस्यंमहर्घतांयातिप्रनष्टास्तत्रतस्कराः ॥ भोजनेधनधान्याद्यै
र्ब्राह्मणानंदतेप्रिये ॥ ४८ ॥ ॥ ॥

अर्थ–मंगल धान्यके स्वामी भयेपर मेघ नहीं वर्षा करते. और धान्य मंहेंगी होती है. और चोर बहुत होते हैं ॥ ४७ ॥ बुध धान्यके स्वामी भयेपर मेघ अत्यंत वर्षा करते हैं. और धान्य मंहेंगी होती है. तहां चोर नाशको प्राप्त होते हैं. हे प्रिये ! और भोजन धन धान्यादिकोंसे ब्राह्मण आनंदित होते हैं ॥ ४८ ॥

गुरौसस्याधिपेजातेविवधात्रीसरीसृपाः॥ दुःखव्याधिसमायुक्ता
जायंतेपार्थिवाःप्रिये ॥ ४९ ॥ सस्याधिपेगतेशुक्रेप्रजातानरत

स्कराः ॥ समर्घंजायतेसस्यंमघवावर्षतेसदा ॥ ५० ॥ ॥

अर्थ—हे प्रिये ! बृहस्पतिको धान्यके स्वामी भयेपर बीजयुक्त पृथ्वी तथा सर्प और राजा दुःख व्याधिसे युक्त होते हैं॥ ४९ ॥ शुक्रको धान्यके स्वामी भयेपर मनुष्य चोर हो जाते हैं. और धान्य सस्ती होती है. और मेघ हमेसा वर्षा करते हैं ॥ ५० ॥

व्यवहाराविनश्यंतिभ्रमंतिचक्षयंनराः ॥ सस्याधिपचरेसौरेक्रूराःस्युःपार्थिवाःजनाः ॥ ५१ ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेसारोद्धारे उमाम० मेघमालायां अर्घकांडे राजादिफलवर्णनंनाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

अर्थ—शनैश्चरको धान्यके स्वामी भयेपर सब प्रकारे व्यवहार विनाशको प्राप्त होते हैं और संपूर्ण राजा दुष्ट होते हैं ॥ ५१ ॥ इति श्रीरुद्रयामले सारोद्धारे उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकायुतमेघमालायां अर्घकांडे राजादिफलवर्णनं नाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

पार्वत्युवाच ॥ प्रणम्यभैरवंदेवंकृपांकृत्वाममोपरि ॥ राशौराशौ कथंसम्यक्शनिचारस्तुविस्तरं ॥ १ ॥ तद्राशिंचाथनक्षत्रंसपादंफलसंयुतं ॥ प्रजानांचहितार्थायदेशेदेशेविशेषतः ॥ २ ॥

अर्थ—पार्वतीजी कहती हैं कि शंकर देवको नमस्कार करके मेरे ऊपर कृपाको करके राशिराशिमें अच्छीप्रकार शनैश्चरके अतीचारको विस्तारपूर्वक कहो ॥ १ ॥ और तिस राशिको उसके अनंतर चारोंचरणसमेत फलयुक्त नक्षत्रको देशदेशके प्रति विशेषकरके प्रजावोंके हितके वास्ते कहो ॥ २ ॥

ईश्वरउवाच ॥ मेषराशिंशनिर्गत्वामासान्चत्वारिवर्षति ॥ सुभिक्षंसर्वमेदिन्यांनराणांपरिपीडनं ॥ ३ ॥ पुत्रंत्यजतिनारीचधनधान्यमहीयते ॥ उपद्रवोज्वरपीडागह्वरायमुनातटे ॥ ४ ॥

अर्थ—ऐसा पार्वतीजीका प्रश्न सुनकर शंकरजी कहते हैं कि शनैश्चर मेषराशिके प्रति जायके चार महीना वर्षा करते हैं. संपूर्ण पृथ्वीमें सुभिक्ष होता है. और मनुष्योंको पीड़ा होती है ॥ ३ ॥ और स्त्रियां पुत्रको छोड़ देती हैं,

तथा धन धान्य वृद्धिको प्राप्त होती हैं. और उपद्रव, ज्वरकी पीड़ा, यमुना-
के किनारे अधिक होती हैं ॥ ४ ॥

पूर्वेचपीडितोदेशः ॥ दुर्भिक्षंनर्मदातटे ॥ कर्पासतिलमहर्घंच
शर्करारससंयुतं ॥ ५ ॥ सविहारयमपुरंपीडितोमानवोभवेत् ॥
शेषेस्याद्भयभीतिश्चपूर्वतःपश्चिमेगतः ॥ ६ ॥ इतिमेषशनिफलं ॥

अर्थ—और पूर्वकी तरफ देश पीड़ित होता है. और नर्मदाके किनारे दु-
र्भिक्ष होता है. और शर्करा रससे युक्त कपास तिलका मंहेगापन होता है
॥ ५ ॥ और शनैश्चरको पूर्वसे पश्चिममें प्राप्त भयेपर विहारयुक्त यमपुरके
प्रति पीड़ा होती है और बाकी भय होता है ॥ ६ ॥ इति मेषशनिफलं ॥

वृषराशिंशनिर्गत्वादुष्टोगोदावरीतटे ॥ गोमहिष्योविनश्यंति
रक्तधाराप्रवर्त्तते ॥ ७ ॥ शून्याभवतिवैपृथ्वीमहाजनोहिनश्य
ति ॥ अन्नंचमृत्तिकातुल्यंकथितंचमहेश्वरि ॥ ८ ॥ सुवर्णरूप
ताम्राणिरसश्चैवमहर्घता ॥ एकादशगतेमासेलाभश्चैवगुणत्रयं
॥ ९ ॥ इतिवृषराशिशनिफलं ॥

अर्थ—दुष्ट शनैश्चर वृषराशिके प्रति जायके गोदावरी नदीके तटमें गौवों
भैंसोंको विनाश करते हैं. और रुधिरकी धार चलती है ॥ ७ ॥ और हे मह-
श्वरि ! पृथ्वी शून्य होती है, महाजनलोग विनाशको प्राप्त होते हैं. और
अन्न मृत्तिकाके तुल्य होता है. ऐसा तुमको कहा ॥ ८ ॥ पुनः सुवर्ण, रूपा,
तांबा और रसोंकी महँगई होती है. और ग्यारह महीना जानेपर तिगुना
लाभभी होता है ॥ ९ ॥ इति वृषशनिफलं ॥

अथमिथुनशनिफलं ॥ मिथुनेपिशनिर्गत्वायुद्धंगोदावरीत
टे ॥ भवतेनात्रसंदेहोहाहाभूतंप्रवर्त्तते ॥ १० ॥

अर्थ—मिथुन राशिमें भी शनैश्चर जायके गोदावरी नदीके किनारे युद्धको
करते हैं. और हाहाकार होता है. इसमें संदेह नहीं है ॥ १० ॥

छत्रभंगंकरिष्यंतिपापाभवतिमेदिनी ॥ सर्वत्रजायतेक्लेशंमहे
शवचनंयथा ॥ ११ ॥ अन्नंमहर्घतांयातिमानुषाणांचपीडनं ॥

पूर्वेवामध्यदेशेचरससूत्रमहर्घता ॥ १२ ॥ दुर्लभाधातवःसर्वे युद्धंमासचतुर्दश ॥ देशेषुजायतेशब्दंसत्यमेतद्वरानने ॥१३॥ इतिमिथुनशनिफलं ॥

अर्थ–और छत्रको नाश करते हैं. पृथ्वी पापरूप होजाती है. और सब जगे क्लेश होता है. इसमें महादेवका बचन प्रमाण है ॥ ११ ॥ और अन्न महेंगा होता है. और मनुष्योंको पीड़ा होती है. पूर्व और बीच देशमें रस और सूत्रकी महँगई होती है ॥ १२ ॥ हे वरानने ! संपूर्ण धातु दुर्लभ होती हैं. और चौदा महीना युद्ध होता है. तथा देशमें शब्द होता है. यह सत्य है ॥ १३ ॥ इति मिथुनशनिफलं ॥

अथकर्कशनिफलमाह ॥ कर्कराशिंशनिर्गत्वाराजविग्रहमेव च ॥ वंगेषुजायतेयुद्धंतृतीयेशेषपीडनं ॥ १४ ॥ ॥

अर्थ–अब कर्कके शनिका फल कहते हैं. शनि कर्कराशिमें जायके राजावोंका विग्रह करते हैं. और वंगदेशमें युद्ध होता है. तथा तीसरेमें शेषको पीड़ा होवे ॥ १४ ॥

नगर्य्यांजायतेक्लेशंरक्तधाराप्रवर्त्तते ॥ शोकश्चैवमनुष्याणांमहेशवचनंयथा ॥ १५ ॥ छत्रभंगंचभवतियुद्धंभवतिदारुणं ॥ अन्नंचमृत्तिकातुल्यंकर्पासस्यमहर्घता ॥ १६ ॥ ॥

अर्थ–और नगरीमें क्लेश होता है. तथा रुधिरकी धार चलती है. और मनुष्योंको शोक होता है. जैसा महादेवका बचन अन्यथा नहीं होता है ॥ १५ ॥ और देशोंका नाश होता है. और भयंकर युद्ध होता है. अन्न मृत्तिकाके तुल्य होता है. और कपासकी महँगई होती है ॥ १६ ॥

एकादशगतेमासेअन्नस्यसमताभवेत् ॥ परंतुजायतेचित्रंदेशएवंभवेद्ध्रुवं ॥ १७ ॥ ज्येष्ठेमासेचदेवेशियामेचैवतृतीयके ॥ अंधकारंमहोद्दिष्टंघनंघननसंयुतं ॥ १८ ॥ जायतेनात्रसंदेहः सत्यमेतद्वरानने ॥ १९ ॥ इतिकर्कशनिफलं ॥

अर्थ–और ग्यारा महीना व्यतीत भयेपर अन्नका समभाव होता है. परंतु आश्चर्य होता है. इस प्रकारका देशनिश्चय होता है ॥ १७ ॥ हे देवे-

शि ! जेठ महीनामें तीसरे प्रहर भयंकर अंधकार और गर्जनशब्दसे युक्त मेघ ॥ १८ ॥ उत्पन्न होते हैं इसमें संदेह नहीं है. हे वरानने ! यह सत्यही है ॥ १९ ॥ इति कर्कशनिफलं ॥

अथसिंहेशनिफलमाह ॥ सिंहराशिंशनिर्गत्वातस्कराबहुमेदिनी ॥ महाजनाविनश्यंतिकनौजेयुद्धदारुणं ॥ २० ॥ ॥

अर्थ–उसके अनंतर सिंहके शनिका फल कहते हैं ॥ शनैश्चर सिंहराशिमें हों तो पृथ्वीमें चोर बहुत होते हैं और महाजन लोग विनाशको प्राप्त होते हैं. और कनौजमें भयंकर युद्ध होता है ॥ २० ॥

अन्नंमहर्घतांयाऽतिहाहाभूतंप्रचेतसा ॥ त्रिलोकेषुभवेत्पीडा नान्यथासुरसुंदरि ॥२१॥ चतुष्पदंतथागव्यंशर्करारससंयुतं ॥ सर्वंमहर्घतांयातिमहेशवचनंयथा ॥ २२ ॥ इतिसिंहेशनिफलानि ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थ–हे सुरसुंदरि ! अन्न मंहेंगा होता है. और वरुण हाहाकार करते हैं. और तीन लोकमें पीड़ा होती है. यह अन्यथा नहीं है ॥ २१ ॥ चौपाये तथा गौके घी दूध आदि संपूर्ण रसोंसे युक्त शक्कर ये संपूर्ण मंहेंगे होते हैं. जैसे महादेवका बचन अन्यथा नहीं होता. तैसेही पदार्थ महेंगे होते हैं. इसमें शक नहीं ॥ २२ ॥ इस प्रकार सिंहके शनिका फल हुवा ॥

अथकन्याशनिफलमाह ॥ कन्याराशिंशनिर्गत्वासंग्रामंचधरातले ॥ जयस्तत्रनरेंद्राणांम्लेच्छहानिर्दिनेदिने ॥ २३ ॥ महायुद्धाभवेत्पृथ्वीसस्ययुक्तातुपार्वति ॥ मातापुत्रंचत्यजतिपशूनाचविनाशनं ॥२४॥ छत्रभंगश्चभवतिअन्नस्यापिमहर्घता ॥ लवणंतिलकर्पासंरसानांसर्वनाशनं॥२५॥इतिकन्याशनिफलं॥

अर्थ–इसके अनंतर कन्याके शनिका फल कहते हैं. कन्याराशिके जो शनि हों तो पृथ्वीतलमें संग्राम होवे. तहां राजावोंकी जय होवे. और दिन दिन प्रति म्लेच्छोंकी हानि होवे ॥ २३ ॥ हे पार्वति ! सत्यसे युक्त पृथ्वी अत्यंत युद्धवाली होती है. और माता पुत्रको छोड़ देती है. और पशुवोंका विनाश होता है ॥ २४ ॥ और देशोंका विनाश होता है. तथा अत्यंत महँगई

होती है. निमक, तिल, कपास और संपूर्ण रसोंका विनाश होता है ॥ २५ ॥
इति कन्याशनिफलं ॥

अथतुलाराशिशनिफलमाह ॥ तुलाराशिंशनिर्गत्वादुर्भिक्षमुत्त
रापथे ॥ हाहाभूताभवेत्पृथ्वीम्लेच्छघातंवरानने ॥ २६ ॥

अर्थ-इसके अनंतर तुलाराशिके शनिका फल कहते हैं. हे वरानने ! (हे पार्वति !) शनि तुलाराशिके प्रति जायके उत्तरके देशोंमें दुर्भिक्ष करते हैं. तथा पृथ्वीमें हाहाकार होता हे. और म्लेच्छोंका विनाश होता है ॥ २६ ॥

उपद्रवंमहाप्रोक्तंम्लेच्छरूपाचमेदिनी ॥ हाहाकारोभवेद्देशेम
हेशेनैवभाषितं ॥ २७ ॥ कर्पासरसतैलानांजायतेचमहर्घ
ता ॥ संशयंचैवदुर्भिक्षेचक्रवर्तीविनश्यति ॥ २८ ॥ म्लेच्छ
जानांभवेद्भंगोराज्ञांचविजयोभवेत् ॥ मध्यदेशेभवेद्युद्धंसत्ययु
क्तंवरानने ॥ २९ ॥ इतितुलाशनिफलं ॥ ॥

अर्थ-और अत्यंत उपद्रव कहा है. पुनः पृथ्वी म्लेच्छरूपा होती है. और देशमें हाहाकार होता है. यह महादेवजीने कहा है ॥ २७ ॥ कपास, रस, निमक तैल इन्होंकी महँगई होती है. और दुर्भिक्ष होनेमें संशय है. हो या न हो. पुनः चक्रवर्ती राजाका विनाश होता है ॥ २८ ॥ हे वरानने ! म्लेच्छोंका नाश होता है. और राजावोंका विजय होता है. और मध्यदेशमें सत्यतासे युक्त युद्ध होता है ॥ २९ ॥ इति तुलाशनिफलं ॥

अथवृश्चिकराशिशनिफलं ॥ वृश्चिकेचशनिर्गत्वापूर्वस्यांदिशि
पीडनं ॥ पतंगाजायंतेभूमौयुद्धंचप्रलयंभवेत् ॥ ३० ॥ ॥

अर्थ-इसके अनंतर वृश्चिकराशिके शनिका फल कहते हैं ॥ शनि वृश्चिकराशिमें जायके पूर्व दिशामें पीड़ा करते हैं. और पृथ्वीमें पक्षी उत्पन्न होते हैं. और युद्ध तथा प्रलय होवे ॥ ३० ॥

विग्रहंचकुरुक्षेत्रेसंग्रामंदारुणंभयं ॥ उमापतिमहादेवभाषितं
वचनंयथा ॥ ३१ ॥ वृक्षाकुठारैर्विच्छेदंसृज्यंतेनूतनाःपुनः ॥
स्वर्णंचरौप्यताम्रादिविकृतेतदनंतरं ॥ ३२ ॥ ॥

अर्थ–कुरुक्षेत्रके प्रति विग्रह होवे और भययुक्त भयंकर संग्राम होवे. यह बचन पार्वतीके पति महादेवजीने कहा है ॥ ३१ ॥ और वृक्ष कुल्हाड़ोंसे काटे जाते हैं. पुनः नवीन उत्पन्न होते हैं. तिसके अनंतर सुवर्ण, रूप, तांबा आदिक बिकते हैं ॥ ३२ ॥

राशीशेनृत्यतेसौरौकर्तव्योधान्यसंग्रहः ॥ तुषारपतनंवापि मूषकस्यभयंभवेत् ॥ ३३ ॥ शलभाअपिआयांतिमहारिष्टंसु लोचने ॥ ३४ ॥ इतिवृश्चिकराशिशनिफलं ॥ ॥

अर्थ–शनिको राशियोंके स्वामी भयेपर धान्योंका संग्रह करनेयोग्य है. पुनः पालाको गिरना और मूसोंका भय होता है ॥ ३३ ॥ हे सुलोचने ! टाड़ीभी आवती है. और महाअरिष्ट होता है ॥ ३४ ॥ इसप्रकार वृश्चिकके शनिका फल हुवा ॥

अथधनराशिफलानि ॥ धनराशिंशनिर्गत्वापश्चिमेदेशपीड नं ॥ सुभिक्षंजायतेस्वस्थंलाभोभवतिमानुषः ॥ ३५ ॥ अंत र्वेदनदोद्धासंकनौजेदेशपीडनं ॥ रक्तधाराप्रवर्त्ततमहादेवस्य भाषितं ॥ ३६ ॥ इतिधनराशौशनिफलानि ॥ ॥

अर्थ–इसके अनंतर धनराशिका फल कहते हैं. शनि धनराशिके प्रति जायके पश्चिम देशमें पीड़ा करते हैं. और स्वस्थ सुभिक्ष होता है. तथा मनुष्योंका लाभ होता है ॥ ३५॥ अंतर्वेदका नद बढ़ता है. और कनौजमें देशको पीड़ा होती है. और रुधिरकी धारा चलती है. यह महादेवजीका वचन है. ॥ ३६ ॥

अथमकरेशनिफलानि ॥ मकरेचशनिर्गत्वादुर्भिक्षंनर्मदातटे ॥ पुत्रान्त्यजंतिनार्य्यश्चसर्वलोकोमहीतले ॥ ३७ ॥ अंतर्वे देतथाविंध्येदुर्भिक्षंस्याद्वरानने ॥ अथवाजायतेरोगोमहेशवच नंध्रुवं ॥ ३८ ॥ नृपाणांजायतेयुद्धंपरस्परमहार्णवं ॥ मंजिष्ठं चंदनंद्राक्षाकर्पासस्यमहर्घता ॥३९॥ इतिमकरे शनिफलानि ॥

अर्थ–इसके अनंतर मकरके शनिका फल कहते हैं. शनि मकर राशिमें जायके नर्मदाके किनारे दुर्भिक्ष करते हैं. और पृथ्वीतलमें सब लोकोंमें स्त्री

पुत्रोंको छोंड़ देती हैं ॥ ३७ ॥ हे वरानने ! अंतर्वेदमें तथा विंध्याचलमें दुर्भिक्ष होता है. अथवा रोग उत्पन्न होता है. यह महादेवका बचन निश्चय है ॥ ३८ ॥ और राजावोंका परस्पर संग्रामके प्रति युद्ध होता है. पुनः मंजीठ, चंदन, द्राक्षा, कपास इन्होंका मंहेंगापन होता है ॥ ३९ ॥ इसप्रकार मकरके शनिका फल हुवा ॥

अथकुंभेशनिफलं ॥ कुंभराशिंशनिर्गत्वादुर्भिक्षंगौतमीतटे ॥
संतापोजायतेसर्वंजयंतियवनास्तदा ॥ ४० ॥

अर्थ–इसके अनंतर कुंभके शनिका फल कहेते हैं. शनि कुंभराशिके प्रति जायके गौतमी नदीके किनारे दुर्भिक्ष करते हैं. और सब प्रकारका संताप उत्पन्न होता है. तब यवनलोग जयको प्राप्त होते हैं ॥ ४० ॥

पश्चिमेजायतेयुद्धंमहाजनविनाशनं ॥ गोमहिष्यःक्षयंयांतिमहादेवस्यभाषितं ॥ ४१ ॥ राजवंशाविनश्यंतिचंदेलीयुद्धदारुणं ॥
कांबोजेशदेशविरहात्पीडास्यान्नान्यथाभवेत् ॥४२॥ इतिकुं०॥

अर्थ–और पश्चिममें युद्ध होता है. और महाजनलोगोंका विनाश होता है. पुनः गौवैं, वा भैसोंका नाश होता है. यह महादेवका कथन है ॥ ४१ ॥ राजवंशवाले विनाशको प्राप्त होते हैं. और चंदेलीमें भयंकर युद्ध होवे. और कांबोजेशदेशके विरहसे पीड़ा होवे. अन्यथा नहीं हो सक्ता ॥ ४२ ॥ इसप्रकार कुंभके शनिका फल हुवा ॥

अथमीनस्थशनिफलमाह ॥ मीनराशिंशनिर्गत्वादुर्भिक्षस्यचसंभवं ॥ मानवानांभवेद्व्याधीरक्तधाराप्रवर्तते ॥४३॥ विग्रहंचमहाघोरंमहादेवस्यभाषितं ॥ महर्घंजायतेसस्यंपशूनांचैवनाशनं ॥ ४४ ॥ सर्वधान्याक्षयंयांतिएतत्सत्यंवरानने ॥ धातुसंबंधिनश्चान्येमृत्तिकातुल्यमेवच॥४५॥इतिमीनस्थशनिफलं ॥

अर्थ–इसके अनंतर मीनके शनिकाफल कहते हैं. मीन राशिके प्रति शनि जायके दुर्भिक्षका संभव करते हैं. और मनुष्योंके व्याधि होवे. और रुधिरकी धाराचले ॥ ४३ ॥ और भयंकर विग्रह होवे. यह महादेवने कहा है पुनः धान्यको मंहेंगापन होवे. और पशुवाको विनाश होवे ॥४४॥ हे वरानने !

(हे पार्वती !) संपूर्ण धान्य नाशको प्राप्त होती हैं. यह सत्य है. तथा धातुसंबंधी और भी मृत्तिकाके तुल्य होते हैं ॥ ४५ ॥ इसप्रकार मीनके शनिका फल हुवा ॥

अथअश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्रस्थितशनिफलं ॥ पार्वत्युवाच ॥ सप्तविंशतिदस्रादिनक्षत्रस्थशनेर्फलं ॥ कथयस्वमहादेवकृपांकृत्वाममोपरि ॥ ४६ ॥ ॥

अर्थ–इसके अनंतर अश्विनी आदिक २७ वीस नक्षत्रोंमे स्थित शनिके फलको कहते हैं. पार्वतीजी कहती हैं कि हे महादेव ! मेरेपर कृपा करके, अश्विनीसे आदि लेकर २७ नक्षत्रोंमे स्थित शनिका फल कहो ॥ ४६ ॥

ईश्वरउवाच ॥ यदाश्विन्यांगतःसौरिस्तदादुर्भिक्षकारकः ॥ नराणांजायतेरोगोपशूनांचमहर्घता ॥ ४७ ॥ भरण्यांचयदा सौरिर्लोहाराःकुंभकारकाः ॥ सत्यंप्रपीड्यतेदेविब्राह्मणस्यवचो यथा ॥ ४८ ॥ ॥

अर्थ–ऐसे पार्वतीजीके बचन सुन, शंकरजी कहते हैं. कि, जो अश्विनी नक्षत्रमें शनैश्चर प्राप्त हों तो दुर्भिक्षकरनेवाले हैं. और मनुष्योंके रोग उत्पन्न होवे. पुनः पशुवोंकी महँगई होवे ॥ ४७ ॥ हे देवि ! जो भरणी नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो लोहार और कुंम्हार सत्य पीड़ित होते हैं. जैसे ब्राह्मणका बचन अन्यथा नहीं होता तैसे यह सत्य है ॥ ४८ ॥

कृत्तिकायांगतःसौरिस्तदादेवोनवर्षति ॥ विप्राणांजायतेपीडा धनधान्यमहर्घता ॥ ४९ ॥ रोहिण्यांचयदासौरिर्धान्यनिष्पत्तिःसर्वदा ॥ श्रावणेनैववर्षतिछत्रभंगोभवेत्तुच ॥ ५० ॥ ॥

अर्थ–जो कृत्तिका नक्षत्रमें शनैश्चर प्राप्त हों तो मेघ वर्षा नहीं करते और ब्राह्मणोंको पीड़ा होती है. अथवा धन धान्यकी महँगई होती है ॥४९॥ जो शनैश्चर रोहिणीमें हों तो हमेस धान्यकी उत्पत्ति होवे. और श्रावण महीनामें पानी नहीं वर्षता तथा देशोंका नाश होता है ॥ ५० ॥

मृगर्क्षेचयदासौरिःसर्वधान्यंभविष्यति॥ चतुष्पदानांनाशःस्याद्देवोवर्षतितद्दृशं ॥ ५१ ॥ आर्द्रायांचयदासौरिःसर्वसस्याचमे

दिनी ॥ स्वास्थ्यंसुभिक्षंदेशेस्यान्निःसंदेहंवरानने ॥ ५२ ॥

अर्थ–जो मृगशिरा नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो संपूर्ण धान्य उत्पन्न होती हैं और चौपायोंका नाश होता है. अथवा मेघ तहां अत्यंत वर्षा करते हैं॥५१॥ हे वरानने ! जो शनैश्चर आर्द्रा नक्षत्रमें हों तो पृथ्वी संपूर्ण धान्यवाली होती है. और संदेहरहित सुभिक्षतासहित देश स्वस्थ होता है ॥ ५२ ॥

पुनर्वसौयदासौरिर्भवेद्धान्यमहर्घता ॥ कंगुनीकोद्रवातोरीअतसीबहुजायते ॥ ५३ ॥ पुष्येचैवयदासौरिर्माषबाहुल्यताभवेत् ॥ देवोपिवर्षतेकिंचिन्महर्घंजायतेभृशं ॥ ५४ ॥

अर्थ–जो पुनर्वसु नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो धान्य महँगी होती है. और कांकुनि, कोदो, तोरी, असीं, ये अधिक उत्पन्न होते हैं॥ ५३ ॥ जो पुष्यनक्षत्रमें शनैश्चर हों तो बहुत उर्द उत्पन्न होतेहैं. और मेघ थोड़ा वर्षा करते हैं. पुनः अत्यंत महँगई होतीहै ॥ ५४ ॥

आश्लेषायांयदासौरिस्तदामेघोनवर्षति ॥ जायंतेसर्वधान्यानिप्रजासौख्यमतिध्रुवं ॥ ५५ ॥ मघायांचयदासौरिस्तदादेवोनवर्षति ॥ रसानांचमहर्घाणिभाद्रेचापिनवर्षति ॥ ५६ ॥

अर्थ–जो आश्लेषा नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो मेघ वर्षा नहीं करते हैं और संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतीहैं. पुनः प्रजावोंको अत्यंत सुख होताहै यह निश्चय है ॥५५॥ जो शनैश्चर मघा नक्षत्रमें हों तो मेघ न वर्षा करैं और रसोंकी महँगयी होवे और भादों महीनामें भी मेघ न वर्षा करैं ॥ ५६ ॥

पूर्वायांचयदासौरिस्तदाचणकमुद्गकाः ॥ माषायवाष्टधान्यानामुत्पत्तिःस्याद्वरानने ॥५७॥ उत्तरास्थोयदासौरिःपशवोनश्यंतिनिश्चितं ॥ उपधान्यमहर्घाणिषण्मासानिवारनने ॥ ५८ ॥

अर्थ–हे वरानने ! जो पूर्वा नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो चना, मूंग, उर्द, यव, इन अष्टधान्योंकी उत्पत्ति होवे. ॥५७॥ हे वरानने ! जो उत्तरामें शनैश्चर स्थित हों तो पशु निश्चय नाश होते हैं. और छः महींनातक उपधान्य अरहरि आदि मंहेंगी रहेती है ॥ ५८ ॥

तथाहस्तगतःसौरिःप्रजानांसंक्षयंभवेत् ॥ धेनुविप्रादिनाशः

स्यात्स्वल्पवृष्टिर्भवेद्ध्रुवं ॥ ५९ ॥ यदाचित्रागतःसौरिश्छत्रभं गोभवेत्तदा ॥ बहुक्षीरघृतागावोबहुवृष्टिर्भवेद्ध्रुवं ॥ ६० ॥

अर्थ–तथा हस्त नक्षत्रमें जो शनैश्चर हों तो प्रजावोंका नाश होवे और गौवैं ब्राह्मणादिकोंका नाश होवे, पुनः निश्चय थोड़ी बर्षा होवे ॥ ५९ ॥ जो चित्रा नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो देशोंका नाश होवे. और बहुत दूध अथवा घी देनेवाली गौवैं होवें. और निश्चय अत्यंत वर्षा होवे ॥ ६० ॥

स्वात्यांचैवयदासौरिःसुभिक्षंस्याद्वरानने ॥ भवंतिनात्रसंदेहो मृत्युप्रियजनस्यच ॥ ६१ ॥ विशाखायांयदासौरिःशालिगो धूमनश्यति ॥ पूर्वेवर्षतिपर्जन्योपश्चान्नैवधनागमः ॥ ६२ ॥

अर्थ–हे वरानने ! जो स्वातीनक्षत्रमें शनैश्चर हों तो सुभिक्ष होवे. और मनुष्योंको मृत्यु प्रिय होवे. इसमें संदेह नहीं है ॥ ६१ ॥ जो विशाखामें शनैश्चर हों तो धान, गोहुंवोंका विनाश होवे. और मेघ प्रथम वर्षा करैं पीछे धनका आगमन हो ॥ ६२ ॥

अनुराधागतःसौरिःकुंकुमंमलयस्तथा ॥ कर्पूरादिमहर्घाणित्य क्तवस्तूनियानिच ॥ ६३ ॥ ज्येष्ठायांचयदासौरिस्तदासर्वंप्रण श्यति ॥ राज्ञस्तस्करतःपीडाःक्षयंधान्यस्यनिश्चितं ॥ ६४ ॥

अर्थ–जो अनुराधा नक्षत्रमें शनैश्चर प्राप्त हों तो कुंकुम तथा मलयागिरि चंदन अथवा कपूरादिक महेंगे होते हैं और जो वस्तुवें छोंड़ आये वेभी महेंगी होती है ॥ ६३ ॥ जो ज्येष्ठा नक्षत्रमें शनैश्चर हों तो संपूर्ण नाश होवे. और राजावोंको चोरोंसे पीड़ा होवे और निश्चय धान्यका नाश होवे. ॥ ६४ ॥

यदिमूलगतःसौरिर्बहुपीडावरानने ॥ पशूनांचनराणांचवृ ष्टेर्मध्यमतातदा ॥ ६५ ॥ पूर्वोत्तरागतःसौरिर्बहुरोगंकरिष्य ति ॥ पशूनांमानवानांचसंदेहोनास्तिपार्वति ॥ ६६ ॥

अर्थ–हे वरानने ! जो मूल नक्षत्रमें शनैश्चर प्राप्त हों तो पशुवोंको और मनुष्योंको बहुत पीड़ा होवे. तब बर्षा मध्यम होवे. ॥ ६५ ॥ हे पार्वति ! पूर्वा और उत्तरामें जो शनैश्चर हों तो पशुवोंको अथवा मनुष्योंको बहुत रोग करते हैं इसमें संदेह नहीं है ॥ ६६ ॥

श्रवणेचयदासौरिःसस्यंस्याच्चतदासमम् ॥ रोगंचतुष्पदानांच देवोवर्षतिमध्यमः ॥ ६७ ॥ धनिष्ठायांगतःसौरिःपार्थिवैःपीड्यतेमही ॥ गवांचब्राह्मणानांचपीडनंस्यात्सुलोचने ॥६८॥

अर्थ–जो श्रवणमें शनैश्वर हों तो धान्य सम होवे और चौपायोंके रोग होवे. पुनः मेघ मध्यम बर्षैं॥ ६७ ॥ हे सुलोचने! जो धनिष्ठामें शनैश्वर प्राप्त हों तो राजा पृथ्वीको पीड़ित करैं, गौवोंको वा ब्राह्मणोंको पीड़ा होवे ॥ ६८ ॥

शतभिषायांगतःसौरिर्भवेत्कष्टंचतुष्पदां ॥ अल्पोदकास्तदामेघाःस्वल्पसस्यंभवेत्तदा ॥ ६९ ॥ पूर्वाभाद्रपदस्थोपियदास्याद्भानुनंदनः ॥ तदासस्यमहर्घंस्यादल्पवृष्टिःप्रजायते ॥ ७० ॥

अर्थ–जो शतभिषा नक्षत्रमें शनैश्वर प्राप्त हों तो चौपयोंको कष्ट होवे. तब मेघ थोड़ा जल बर्षा करैं और थोड़ी धान्य उत्पन्न होवे ॥ ६९ ॥ जो शनैश्वर पूर्वाभाद्रपदमें स्थित हों तो धान्य महँगी होवे और थोड़ी बर्षा होवे॥ ७० ॥

उत्तराभाद्रपदेदेवियदाचैवशनैश्चरः ॥ राजपीडाल्पवृष्टिश्चस्वल्पसस्यंप्रजायते ॥ ७१ ॥ रेवत्यांचगतःसौरिस्तदादेवोनवर्षति ॥ हाहाकारंमहारौद्रंपृथिव्यांजायतेशिवे ॥ ७२ ॥

अर्थ–हे देवि! जो शनैश्वर उत्तराभाद्रपदमें हों तो राजपीड़ा, थोड़ी बर्षा, थोड़ी धान्य उत्पन्न होवे ॥ ७१ ॥ हे शिवे! जो रेवती नक्षत्रमें शनैश्वर प्राप्त हों तो मेघ बर्षा नहीं करते और पृथ्वीमें अत्यंत भयंकर हाहाकार होता है ॥ ७२ ॥

सुवर्णरौप्यरत्नानिविक्रयित्वासुरेश्वरि॥ संग्रहेत्सर्वधान्यानिलाभोभवतिपुष्कलः॥ ७३ ॥ सुभिक्षंमध्यदेशेचपीडाजनपदस्य च ॥ परस्परंनरेंद्राणांयुद्धंभवतिदारुणं ॥ ७४ ॥ इतिअश्विन्यादिनक्षत्रगतशनिफलं ॥

अर्थ–हे सुरेश्वरि! तब सुवर्ण, रूपा, रत्न, इन्होंको बेंचके संपूर्ण धान्योंका संग्रह करै. तो अत्यंत लाभ होता है ॥ ७३॥ और मध्य देशमें सुभिक्ष होता है और देशोंको पीड़ा होती है और राजावोंका परस्पर भयंकर युद्ध होता है ॥७४॥ इसप्रकार अश्विनीआदि नक्षत्रमें प्राप्त शनिको फल हुवा ॥

अथपादफलमाह ॥ ईश्वरउवाच ॥ अश्विनाप्रथमेपादेयदा यातिशनैश्वरः ॥ नगरंमध्यदेशस्थंमासमात्रेणनश्यति ॥७५॥ द्वितीयेचरणेदेविसौराष्ट्रंद्राविडंतथा ॥ समालवंविनश्यंतिज नास्तृणगवादिभिः ॥ ७६ ॥

अर्थ– इसके अनंतर चरणका फल कहते हैं. महादेवजी कहते हैं, कि जो शनैश्वर अश्विनीके प्रथमपादमें प्राप्त हों तो नगरको और बीचके देशके स्थित पुरुषोंको एक महीनासे नाश करते हैं ॥ ७५ ॥ हे देवि! जो शनैश्वर अश्विनीके दूसरे चरणमें प्राप्त हों तो मनुष्य, तृण, गौवें, मालवदे-शसहित सौराष्ट्र तथा द्राविड़देशका नाश करते हैं ॥ ७६ ॥

तृतीयेचचतुर्थेवायदागच्छतिभास्करिः ॥ कलिंगगौडदेशंच नाशयत्येवनिश्चितं ॥ ७७ ॥ भरणीप्रथमेपादेयदायातिशनैश्व रः ॥ तदापश्चात्समुद्रस्यतटेरौरवमादिशेत् ॥ ७८ ॥

अर्थ–जो शनैश्वर अश्विनीके तीसरे अथवा चौथे चरणमें प्राप्त हों तो नि-श्चय करके कलिंग और गौड़ देशको नाश करते हैं ॥७७॥ जो शनैश्वर भरणी नक्षत्रके प्रथम पाद अर्थात् चरणमें प्राप्त हों तो समुद्रके तटमें पीछे रौरव शब्द दीख पड़ता है ॥ ७८ ॥

द्वितीयपादगेसौरौदुर्भिक्षंस्यान्महर्घता ॥ तृतीयपादगःसौरिः पावकैर्भयमादिशेत् ॥ ७९ ॥ अन्यग्रंथांतरे ॥ महाशालीचशा लीचबहुसस्यंचसर्षपं ॥ कार्पासंजीरकंचैवशर्करागुडसुंदरि ॥८०॥

अर्थ–जो शनैश्वर भरणी नक्षत्रके दूसरे चरणमें प्राप्त हों तो महँगापन और दुर्भिक्ष होवे और तीसरेमें जो शनि हों तो अग्निसे भय देखनेमें आवे ॥ ७९ ॥ हे सुंदरि! और ग्रंथांतरोंमें महाशाली और शाली, सरसों, कपास, जीरा, शर्करा, गुड़, ये अत्यंत धान्य कहेलाते हैं ॥ ८० ॥

घृततैलोदकंसर्वंमहर्घानिभवंतिहि ॥ तुरीयस्थेचदुर्भिक्षमलका यांभवंतिहि ॥ ८१ ॥ तथैवाग्निभयंनित्यंभविष्यतिनसंशयः ॥ कृत्तिकाप्रथमेपादेयदायातिशनैश्वरः ॥ ८२ ॥

अर्थ–जो भरणी नक्षत्रके चौथे चरणमें शनैश्चर स्थित हों तो घी, तेल, जल, इन सबको मंहेंगापन होता है और अलकापुरीमें दुर्भिक्ष होता है॥८१॥ तैसे ही अग्निका भय होता है. इसमें संशय नहीं. जो शनैश्चर कृत्तिकाके प्रथम चरणमें प्राप्त हों ॥ ८२ ॥

विग्रहंजायतेघोरंलोकेचाग्निभयंभवेत् ॥ मेघानैवप्रवर्षंतिनृपास्तत्रविरोधिनः ॥ ८३ ॥ द्वितीयचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ कृष्णानदीतटेद्वंद्वेदुर्भिक्षंभवतिध्रुवं ॥ ८४ ॥

अर्थ–तो भयंकर विग्रह होवे. और लोकमें अग्निका भय होवे और मेघ बर्षा नहीं करते. राजा तहां विरोध करते हैं ॥ ८३ ॥ हे देवि! शनैश्चर दूसरे चरणमें प्राप्त हों तो कृष्णानदीके किनारे कलह होवे और निश्चय दुर्भिक्ष होवे ॥ ८४ ॥

पादद्वयेफलंतस्यशृणुभामिनियत्नतः॥ रोहिणीप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ ८५ ॥ गोदावरीतटेद्वंद्वेदुर्भिक्षंभवतिध्रुवं ॥ परस्परंनरेंद्राणांयुद्धंभवतिदारुणं ॥ वृष्टिस्तुजायतेस्वल्पावैश्वानरभयंभवेत् ॥ ८६ ॥ ॥ ॥

अर्थ–हे भामिनि! तिसके दो चरणोंका फल यत्नसे सुनो. जो रोहिणीके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो गोदावरी नदीके किनारे कलह होवे. और निश्चय दुर्भिक्ष होवे. पुनः परस्पर राजावोंका युद्ध होवे और वर्षा थोड़ी होवे पुनः अग्निका भय होवे. ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

रोगाबहुविधाःप्रोक्तामानवानांवरानने ॥ द्वितीयेचरणेसौरिः कंगुनीरक्तशालयः ॥ ८७ ॥ चणकाःकृष्णजीरंचकोद्रवास्तिलवातसी ॥ मसूरायवगोधूमामाषामुद्गाःकुलत्थकाः॥ ८८॥

अर्थ–हे वरानने! पुनः मनुष्योंको बहुत प्रकारके रोग कहे हैं. जो शनैश्चर रोहिणीके दूसरे चरणमें हों तो कांकुनि, लाले धान, ॥ ८७॥ चना, श्याह जीरा, कोदो, तिल, अर्सी, मसूर, यव, गेहूं, उर्द, मूंग, कुलथी, ॥ ८८ ॥

देशेविराटवंगेषुमहर्घाणिभवंतिहि ॥ कार्पासंपट्टसूत्रंचघृतते

लादिकंरसं ॥ ८९ ॥ अश्वगोमहिषीचैवप्रत्ययेयांतिसुंदरि ॥
तृतीयेपादगेदेविसुवर्णलोहकंबलं ॥ ९० ॥

अर्थ–बिराट और बंगदेशमें महँगा होता है. कपास और रेशमी वस्त्र, घृत, तैल आदिक रस, ॥ ८९ ॥ घोड़ा, गौवैं, भैंसैं, इन्होंका महँगा होता है. हे सुंदरि! हे देवि! जो शनैश्चर तीसरे चरणमें हों तो सुवर्ण, लोह, कंबल॥९०॥

रौप्यकर्पासंसूत्राणांरसानांचैवभामिनि ॥ इतरेसःपुरेरम्येमह
र्घाणिभवंतिहि ॥ ९१ ॥ पादेदेविचतुर्थेतुगौडदेशोविनश्य
ति ॥ सर्वधान्यमहर्घाणिजायंतेनात्रसंशयः ॥ ९२ ॥

अर्थ–रूपा, कपास, सूत्र, संपूर्ण निमक आदिक रस, हे भामिनि! (हे पार्वती). ये सब उत्तम पुरमे मंहेंगे होते हैं ॥ ९१ ॥ हे देवि! जो शनैश्चर रोहिणीके चौथे चरणमें हों तो गौड़देश विनाश होवे और सब धान्यों-की महँगई होवे इसमें संशय नहीं है ॥ ९२ ॥

मृगादिचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ आभीरदेशानश्यंतिअ
ग्निदाहेनसुंदरि ॥९३॥ सर्वधान्यरसादीनांजायतेचमहर्घता ॥
युद्धंस्वस्वामिकेदेशेभवंतिनात्रसंशयः ॥ ९४ ॥

अर्थ–हे सुंदरि! हे देवि! मृगशिराके प्रथम चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तो अग्निसे आभीरदेश नाश होवे ॥ ९३ ॥ संपूर्ण धान्योंका तथा रसादि-कोंका महँगापन होवे. स्वस्वामिक देशमें युद्ध होवे. इसमें संदेह नहीं है॥९४॥

द्वितीयपादगःसौरिर्यदातिष्ठतिपार्वति ॥ तदानंदपुरंनाशंपृथि
व्यामथसंकुलं ॥ ९५ ॥ कार्पासंचैवधान्यानितिलमुद्गमहर्घ
ता ॥ तृतीयचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ ९६ ॥

अर्थ–हे पार्वति ! जो मृगशिराके दूसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो नंद-पुरका नाश हो तिसके अनंतर पृथ्वीमें कोलाहल होवे ॥ ९५ ॥ हे देवि ! जो शनैश्चर मृगशिराके तीसरे चरणमें स्थित हों तो कपास, संपूर्ण धान्य, तिल, मूंग, इन्होंकी महँगई होती है ॥ ९६ ॥

अवंतिपश्चिमेभागेदेशेसौराष्ट्रकेतथा ॥ विनाशंजायतेशीघ्रंप

रचक्रेणसुंदरि ॥९७॥ रसाश्चैवक्षयंयांतिदृश्यंतेनहिकोद्रवाः॥
मेघोनवर्षतेदेविमहापुरुषघातकाः ॥ ९८ ॥

अर्थ—हे सुंदरि! परारी फौजसे अवंतीपुरीके पश्चिमभागमें तथा सौराष्ट्रदेशमें शीघ्र विनाश होवे ॥ ९७॥ हे देवि! रसोंका नाश होता है. और कोदों दीख नहीं पड़ते. पुनः मेघ वर्षा नहीं करते. और उत्तम पुरुषोंका विनाश होता है ॥ ९८ ॥

पादेचतुर्थगेदेविक्षयमुज्जयिनीपुरी ॥ प्रजानांचमहापीडादुर्भि
क्षंभवतिध्रुवं ॥ ९९ ॥ गुडंचतैललवणंरसानांचमहर्घता॥ मे
दिनीपच्यतेनैवपरचक्रागमाकुला ॥ १०० ॥

अर्थ—हे देवि! जो मृगशिराके चौथे चरणमें शनैश्चर हों तो उज्जयिनीपुरी नाश होती है. और प्रजावोंको अत्यंत पीड़ा होती है. और निश्चय दुर्भिक्ष होता है ॥ ९९ ॥ गुड़, तेल, निमक, और रसोंकी महँगई होती है. और परारी फौजके आगमनसे आकुल पृथ्वीमें मनुष्य अन्नको पाचन नहीं करते॥१००॥

द्विमासंनैववृष्टिःस्याद्राजयुद्धंपरस्परं ॥ आर्द्रायाःप्रथमेपादेयदा
यातिशनैश्चरः॥१०१॥ कलिंगदेशनाशःस्याद्राक्षसोपद्रवेणच॥
क्षुधार्त्तापृथिवीसर्वानान्नंपचतिमाधवः ॥ २ ॥

अर्थ—जो आर्द्रा नक्षत्रके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो दो महींना होते हैं वर्षा न होवे और परस्पर राजावोंका युद्ध होवे ॥ १०१ ॥ और राक्षसोंके उपद्रवसे कलिंगदेशका नाश होता है. और पृथ्वीमें संपूर्ण मनुष्यादिक क्षुधासे पीड़ित बैशाखमासमें अन्न नहीं पचावते ॥ २ ॥

राज्ञांचजायतेयुद्धंजनानांचक्षयोभवेत्॥ द्वितीयपादगःसौरिः
कलिंगेपूर्वभागके ॥ ३ ॥ देशाःसर्वेविनश्यंतिदेविसत्यंशृणु
ष्वमे ॥ महाशालिःकंगुनिकामोठश्चकोद्रवास्तथा ॥ ४ ॥

अर्थ—जो शनैश्चर आर्द्राके द्वितीय चरणमें हों तो राजावोंका युद्ध होवे और मनुष्योंका नाश होवे. पुनः कलिंग देशमें पूर्वके ॥ ३ ॥ संपूर्ण देश बिनाशको प्राप्त होते हैं. हे देवि! मेरेसे सत्य सुनो. कि महाशाली, कांकुनि, मोठ, (मोथी,) तथा कोदो ॥ ४ ॥

चणकामुद्गमाषाश्चयवाश्चतिलमेवच ॥ एतेसर्वेमहर्घाणिभवंति नात्रसंशयः ॥ ५ ॥ तृतीयेचरणेसौरिर्दुर्भिक्षंदेशकोंकणे ॥ गुडादयोनपच्यंतेधान्यंभवतिदुर्लभं ॥ ६ ॥

अर्थ—चना, मूंग, उर्द, यव, और तिल ये सब महँगे होते हैं. इसमें संशय नहीं है ॥ ५ ॥ जो आर्द्रा नक्षत्रके तीसरे चरणमें शनैश्चर हों तो कोंकणदेशमें दुर्भिक्ष होवे. पुनः तिसही देशमें गुड़ादिक न होवें और धान्य दुर्लभ होती है ॥

जायतेजीवमरणंसत्यमेतत्सुलोचने ॥ चतुर्थचरणेदेवियदा यातिशनैश्चरः ॥ ७ ॥ ललाटंकोंकणंचैवतथादेशंसमुद्रकं ॥ विनश्यंतिचतेदेशारसधान्यमहर्घता ॥ ८ ॥

अर्थ—हे सुलोचने! और जीवोंका मरण होवे. यह सत्य है. हे देवि! जो शनैश्चर आर्द्राके चौथे चरणमें प्राप्त हों तो ॥७॥ ललाट, कोंकण तथा समुद्रके देश, ये विनाशको प्राप्त होवें. और देशोंमें रस व धान्योंकी महँगई होवे ॥ ८ ॥

अदित्यप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ घृतंतैलंरसंधान्यंकर्पास स्यमहर्घता ॥ ९ ॥ जायतेत्रिगुणंधान्यंवर्षतेचवरानने ॥ विंध्यराट्पुलिनेदेशेकेदारंनगरंनगः ॥ १० ॥

अर्थ—जो शनैश्चर पुनर्वसुके प्रथम चरणमें प्राप्त हों तो घी, तेल, रस, धान्य, कपास, इन्होंकी महँगई होती है ॥ ९ ॥ हे बरानने! परंतु अन्न तिगुना उत्पन्न होवे और मेघ बर्षा करैं. पुनः विंध्याचलके रेतोंके देशमें और केदार नगरके पर्वतके ॥ १० ॥

वासिनांजलहीनंचदेशःप्रलयसुंदरि ॥ द्वितीयेचरणेदेवियदा यातिशनैश्चरः ॥ ११ ॥ यद्विपानांसकंतत्रविनाशंजायतेध्रुवं ॥ कर्पूरपट्टसूत्रंचद्राक्षाचागरुशर्करा ॥ १२ ॥

अर्थ—रहनेवालेनके देश जलसे हीन होवें. और प्रलय होवे. हे सुंदरि! हे देवि! जो पुनर्वसुके दूसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो ॥ ११ ॥ हाथी और महावतको तहां निश्चय नाश होवे. और कपूर, रेशमी बस्त्र, द्राक्षा, अगर, शर्करा, इन्होंकाभी बिनाश होवे ॥ १२ ॥

जातीफलंचहिंगुचगुडंशुंठीचपार्वति ॥ महर्घंजायतेदेविलाभो
पित्रिगुणोभवेत् ॥१३॥तृतीयचरणेदेविपुरीकांतीविनश्यति॥
विविधोपद्रवादेवितत्रराज्येनसंशयः ॥ १४ ॥

अर्थ–हे पार्वति! जायफल, हींग, सोंठि, गुड़, इन्होंकी महँगई होवे. हे देवि! पुनः खरीद करनेसे लाभ तिगुना होवे ॥ १३ ॥ हे देवि! जो शनैश्चर पुनर्वसुके तीसरे चरणमें हों तो कांतीपुरीका विनाश होवे. हे देवि! तिस राज्यमें अनेक प्रकारके उपद्रव होवें, इसमें संशय नहीं है ॥ १४ ॥

मेदिनीपच्यतेनैवमघवानैववर्षति ॥ नगरंचाशुभंदेविद्वौमासौ
वत्सरंतथा ॥ १५ ॥ जातोभवतिदेवेशिसर्वधान्यमहर्घता ॥
पुनर्वसुचतुर्थेंपियदायातिशनैश्चरः ॥ १६ ॥

अर्थ–और पृथ्वीमें अन्न न पकै, पुनः मेघ वर्षा न करैं. हे देवि! दो महीना नगरके प्रति अशुभ होवे तथा वर्षभर अशुभ होवे ॥ १५ ॥ हे देवि! पुनर्वसुके चौथे चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तो धान्य उत्पन्न होवे परंतु धान्यकी महँगई होवे ॥ १६ ॥

आहूणादेवदेवेशिद्विमासंनैववर्षति ॥ तथैवाग्निभवंयातिविग्रहं
नृपपीडनं ॥ १७ ॥ अन्नंमहर्घतांयातिकंगुन्यामाषकोद्रवाः॥
महाशालीचशालीचराजिकातूलसर्षपं ॥ १८ ॥

अर्थ– हे देवदेवेशि! हूणदेशतक दो महीना वर्षा नहीं होती तैसे ही अग्निका भय होवे. और विग्रह होवे. अथवा राजाकी पीड़ा होवे ॥ १७ ॥ और अन्न महँगा होवे; कांकुनि, उर्द, कोदो, महाशाली, शाली, राई, रुई, सरसों, ॥ १८ ॥

जीरकंतुषधान्यानिकर्पासंरससूत्रकं ॥ नश्यंतेदेवदेवेशित्रिला
भोनात्रसंशयः ॥ १९ ॥ पुष्येचप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः॥
कलिंगदेशनाशःस्यात्कर्पासस्यमहर्घता ॥ २० ॥

अर्थ–जीरा, बूसा, संपूर्ण धान्य, कपास, रस, सूत्र, ये नाशको प्राप्त होवें. परंतु हे देवदेवेशि! (खरीदनेसे) तिगुना लाभ होवे. इसमें संशय नहीं है

॥ १९ ॥ जो शनैश्चर पुष्यके प्रथमचरणमें प्राप्त हों तो कलिंगदेशका नाश होवे और कपासका महँगापन होवे ॥ २० ॥

रसाश्चलवणंतैलंगोमहिष्यादिकंपुनः ॥ मघवावर्षतेनैवभवे दग्निभयंप्रिये ॥ २१ ॥ द्वितीयपादगःसौरिःसर्वदेशंविनश्य ति ॥ चणकातूलगोधूमंमसूरास्त्रिकुटाथा ॥ २२ ॥

अर्थ—हे प्रिये! पुनः संपूर्ण रस निमक, तेल, गौवें, भैंसी, आदिकोंका महँगापन होवे. तथा मेघ वर्षा न करैं और अग्निका भय होवे ॥ २१ ॥ जो पुष्यके दूसरे चरणमें शनैश्चर हों तो सब देशोंका विनाश होता है. और चना, रुई, गेहूं, मसूरी, तथा त्रिकुटा ॥ २२ ॥

अतसीयवकर्पासंकूटसूत्रसणादयः ॥ एतेसर्वेमहर्घाणिभवंति नात्रसंशयः ॥ २३ ॥ तृतीयपादगःसौरिर्दुर्भिक्षंनगरेपुरे ॥ पादेचतुर्थगेदेविगौडदेशेमहाभयं ॥ २४ ॥

अर्थ—असीं, यव, कपास, कूट, सूत, सनाय आदिक, ये संपूर्ण महंगे होते हैं इसमें संशय नहीं है ॥ २३ ॥ जो शनैश्चर पुष्यके तीसरे चरणमें प्राप्त हों तो नगर अथवा पुरमें दुर्भिक्ष होवे. हे देवि ! जो पुष्यके चौथे चरणमें शनैश्चर हों तो गौड़देशमें महाभय होवे. ॥ २४ ॥

जायतेघोरदुर्भिक्षंनृपनाशःप्रजायते ॥ प्रजाश्चैवक्षयंयांतिमहा पुरुषनाशनं ॥२५॥ आश्लेषाप्रथमेपादेगतःसौरिर्यदाभवेत् ॥ तदावननिवासिनांमहाभयमुपस्थितं ॥ २६ ॥

अर्थ—और भयंकर दुर्भिक्ष होवे, पुनः राजावोंका नाश होवे और प्रजावोंका नाश होवे पुनः उत्तम पुरुषोंका नाश होवे ॥२५॥ जो आश्लेषाके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो बनके रहेनेवालोंको अत्यंत भय प्राप्त होवे ॥ २६ ॥

द्वितीयचरणेसौरिस्तदाकांतारवंगकौ ॥ कौशलंवनआनंदंपु रदेशंचश्टंगिगणः ॥ २७ ॥ देवोनवर्षतेचान्नंकंगुकोद्रवसर्ष पाः ॥ मसूरामाषकादेविकुलत्थचणकादयः ॥ २८ ॥

अर्थ—जो आश्लेषाके दूसरे चरणमें शनैश्चर हों तो कांतार और वंगदेश, तथा कौशल बन और श्टंगिणदेशके पुरोंमें आनंद होताहै ॥ २७ ॥ हे देवि !

तहां मेघ अन्नरूप जल नहीं वर्षते; तब कांकुनि, कोदव, सरसों, मशूर, उर्द, कुलथी, चना आदिक ॥ २८ ॥

त्रिकुटाजीरकंचैववस्त्वेतानिमाननीयते ॥ पततेचमहाक्रांतंजा यतेनात्रसंशयः ॥२९॥ तृतीयांघ्रौयदासौरिस्तदाहर्षपुरेभयं ॥ विग्रहंचमहाघोरंरससर्वमहर्घता ॥ ३० ॥

अर्थ–त्रिकुटा, जीरा, इन्होंका प्रमाण प्राप्त होताहै. पुनः अत्यंत दुर्भिक्ष पड़ता है, इसमें संदेह नहीं है ॥ २९ ॥ जो आश्लेषाके तीसरे चरणमें शनैश्चर हों तौ हर्षपुरमें भय, अत्यंत भयंकर विग्रह, और सब रसोंकी महँगई होवै ॥३०॥

सार्प्पेपादेचतुर्थेचयदायातिशनैश्चरः ॥ तदानंदपुरेदेविजायते चमहद्भयं ॥ ३१ ॥ मघायांप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ दु र्भिक्षंमालवेदेशेराजयुद्धंपरस्परं ॥ ३२ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो आश्लेषाके चौथे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ आनंदपुरमें अत्यंत भय उत्पन्न होवे. ॥ ३१ ॥ जो मघाके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ मालवदेशमें दुर्भिक्ष होवे. और परस्पर राजावोंका युद्ध होवे ॥ ३२ ॥

विविधोपद्रवाश्चैवमघवानैववर्षति ॥ चतुष्पदानांमरणंगो धूमचणकायवाः ॥३३॥ मसूरांणांकुलत्थानांसंग्रहंतदनंतरं ॥ लाभोद्विगुणतोज्ञेयोनिःसंदहंवरानने ॥३४॥

अर्थ–पुनः अनेक प्रकारके उपद्रव प्राप्त होवें, और मेघ वर्षा न करैं, और चौपायोंका मरण होवे, अथवा गेहूं, चना, यव, ॥ ३३ ॥ मसूर, कुलथी, हे वरानने ! इन्होंको तिसके अनंतर संग्रह करै तो संदेहरहित दूना लाभ जानना. ॥ ३४ ॥

द्वितीयेचरणेसौरिर्यदातिष्ठतिपार्वति ॥ तदान्नंतुषकार्पासंगुडं लवणशर्करा ॥३५॥ द्राक्षामरीचंहिंगुंचधान्यादीनांमहर्घता ॥ तृतीयेचरणेसौरिर्यदानश्यतिमालवः ॥ ३६ ॥

अर्थ–हे पार्वति ! जो शनैश्चर मघाके दूसरे चरणमें प्राप्त हों तौ अन्न, कपास, गुड़, निमक, शर्करा, ॥ ३५ ॥ दाख, मिर्च, हींग, और धान्यादिकोंकी महँगई

होतीहै. जो मघाके तीसरे चरणमें शनैश्चर हों तौ मालवदेश नाशको प्राप्त होवे. ॥ ३६ ॥

महारौद्रंभवेद्देविदुर्भिक्षंगडपीडनं ॥ तथैवाग्निभयंयांतिमूषका शलभास्तथा ॥३७॥ कर्पासंलवणंसूत्रंदधिदुग्धमधुनीतथा ॥ घृततैलादिकरसंसर्वंमहर्घंदेविजायते ॥ ३८ ॥

अर्थ—हे देवि ! अत्यंत भयंकर दुर्भिक्ष होताहै. और भयसे पीड़ा होवे, तथा अग्निका भय होवे, पुनः मूष और टाड़ी ये भागैं ॥ ३७ ॥ हे देवि ! कपास, निमक, सूत्र, दही, दूध, सहेत, घृततैलादिक संपूर्ण रस, महँगे होतेहैं ॥ ३८ ॥

पादेचतुर्थेवैदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ तदाभवेदुज्जयिन्यांदु र्भिक्षंमालवेषुच ॥ ३९ ॥ मानवानांमहाव्याधिर्मूषकाःशल भास्तथा ॥ तथैवाग्निभयंयांतिरसधान्यमहर्घता ॥ ४० ॥

अर्थ—जो शनैश्चर मघाके चौथे चरणमें प्राप्त हों तौ उज्जयिनी नगरीमें और मालवदेशमें दुर्भिक्ष होवे ॥ ३९ ॥ और मनुष्योंको महाव्याधि होवे मूष तथा टाड़ी ये होंवें तथा अग्निका भय होवे. और रसधान्योंकी मंहँगई होवे ॥ ४० ॥

पूर्वाफाल्गुन्यादिपादेयदासंचरतेशनिः ॥ नृपाणांजायतेयु द्धंप्रजाःव्याधिमहाकुलाः ॥४१॥ द्वितीयचरणेदेविशनियोगो भवेद्यदा ॥ हिमालयोज्जयिनीदेशेमहादुःखंभवत्तदा ॥ ४२ ॥

अर्थ—जो शनैश्चर पूर्वाफाल्गुनीके प्रथम चरणमें हों तौ राजावोंका युद्ध होवे और प्रजा व्याधियोंसे अत्यंत आकुल होवें ॥ ४१ ॥ हे देवि ! जब पूर्वाफाल्गुनीके दूसरे चरणमें हों तौ शनियोग होताहै. तब मालवदेश अथवा उज्जयिनी नगरीके देशोंको महादुःख होताहै ॥ ४२ ॥

तत्रधान्यंनपचतिमघवानैववर्षति ॥ नृपाणांविग्रहंयातिन राणांव्याधिपीडनं ॥ ४३ ॥ रसंचसणकार्पासपट्टसूत्रमहर्घ ता ॥ पादेतृतीयेवैदेविपदायातिशनैश्चरः ॥ ४४ ॥ तदात

दादिदेशेषुदुर्भिक्षंभवतिध्रुवं ॥ नाशंचतुष्पदादीनांमर्त्याविस्फोटपीडिताः ॥ ४५ ॥

अर्थ–तिन देशोंमे धान्य नहीं पाचन की जाती. और मेघ वर्षा नहीं करते. पुनः राजावोंका विग्रह होवे. और मनुष्य व्याधिसे पीड़ित होवें ॥४३॥ रस निमक आदि, सनाय, कपास, रेशमी वस्त्र, इन चीजोंका महँगापन होवे, हे देवि ! जो शनैश्चर पूर्वाफाल्गुनीके तीसरे चरणमें हों तौ उज्जयिनी आदि देशोंमें निश्चय दुर्भिक्ष होवे. और चौपायोंका नाश होवे. पुनः मनुष्य विस्फोटक रोग अर्थात् शीतलासे पीड़ित होवें ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

गजोष्ट्रंनाशयेद्देविनृपाणांविग्रहंभवेत् ॥ तथैवाग्निभयंयातितूलभांडमहर्घता ॥४६॥ सर्वजंतवःणश्यंतिसत्यमेतत्सुलोचने ॥ उत्तराप्रथमेपादेयदाअस्तिशनैश्चरः॥४७॥तदाकलिंगदेशेषुघृततैलंसशर्करं ॥ सर्षपंजीरकार्पासंकुंकुमाद्यानियानिच ॥ ४८ ॥

अर्थ–हे देवि ! हाथी, ऊंट, नाशको प्राप्त होतेहैं. और राजावोंका विग्रह होवे. तथा अग्निका भय होताहै. और रुई, पात्र, इन्होंका महँगापन होताहै ॥ ४६ ॥ और संपूर्ण जीव विनाशको प्राप्त होतेहैं. हे सुलोचने ! यह सत्य है. पुनः उत्तराके प्रथम चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तौ ॥ ४७ ॥ कालिंगदेशमें घृत, तैल, शर्करा, सरसों, जीरा, कपास, और कुंकुमआदिको ॥ ४८ ॥

एतत्सर्वंमहर्घाणिसंदेहोनास्तिपार्वति ॥ पादेद्वितीयेवैसौरिर्यदागच्छतिभामिनि ॥ ४९ ॥ मध्यदेशेषुदुर्भिक्षंदेवगंगातटेषु च ॥ रसंधान्यंक्षयंयातिविग्रहंपृथिवीपतेः ॥ ५० ॥

अर्थ–हे पार्वति ! ये संपूर्ण महँगे होतेहैं. इसमे संदेह नहीं है. हे भामिनि ! जो शनैश्चर उत्तराके दूसरे चरणमें प्राप्त हों तौ ॥ ४९ ॥ मध्यदेशमें और देवगंगातटमें रस धान्योंका नाश होताहै. और राजावोंका विग्रह होवे. ॥ ५० ॥

तृतीयेचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ पूर्वदेशेसमुद्रस्यगंगायांयमुनातटे ॥५१॥ दुर्भिक्षंजायतेघोरंनात्रकार्याविचारणा ॥ पादेचतुर्थेवैसौरिर्यदागच्छतिसुंदरि ॥ ५२ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो उत्तराके तीसरे चरणमें शनैश्चर हों तो समुद्रके पूर्व-देशमें गंगा और यमुनाके किनारे ॥ ५१ ॥ भयंकर दुर्भिक्ष होवे. इसमें कुछ विचार नहीं करना. हे सुंदरि ! जो उत्तराके चौथे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ ॥ ५२ ॥

विंध्याद्रौकान्यकुब्जेषुनचैवान्नंप्रपच्यते ॥ प्रलयंजायतेराज्ञां मघवानैववर्षति ॥ ५३ ॥ कार्पासंपट्टसूत्रंचसणलोहंसकांचनं ॥ ताम्ररौप्यादिसर्वेषांमहर्घंजायतेप्रिये ॥ ५४ ॥

अर्थ–विंध्याचलपर्वतमें और कान्यकुब्जदेशमें अन्न न पचाया जाय और राजावोंका प्रलय होवे. और मेघ वर्षा न करैं ॥५३॥ हे प्रिये ! कपास, रेशमी वस्त्र, सनाय, लोह, सुवर्ण, तांब, रूप, ये संपूर्ण महँगे होतेहैं ॥ ५४ ॥

हस्तस्यप्रथमेपादेशनिर्भवतिभामिनि ॥ कुरुक्षेत्रंविनश्यंतिचतुष्पदसमन्वितः ॥ ५५ ॥ द्वितीयांघ्रौयदासौरिःप्रविशेत्तुवरानने ॥ रसंधान्यंजलंतत्रविनश्यतिनसंशयः ॥ ५६ ॥

अर्थ–हे भामिनि ! जो हस्तके प्रथम चरणमें शनैश्चर हों तौ चौपयोंसे युक्त कुरुक्षेत्र विनाशको प्राप्त होताहै ॥५५॥ हे वरानने ! जो हस्तके दूसरे चरण-में शनैश्चर प्रवेश करैं तो तहां रस, धान्य, जल, विनाशको प्राप्त हो, इसमें संदेह नहीं है ॥ ५६ ॥

पादेतृतीयेवैसौरिःसर्ववस्तुविनश्यति ॥ जीवानांजलजानां चपीडाभवतिभूतले ॥ ५७ ॥ चतुर्थेचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ विजयापुरविनाशंचकुरुतेनात्रंसशयः ॥ ५८ ॥

अर्थ–जो हस्तके तीसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो संपूर्ण वस्तुवोंका वि-नाश होवे, पुनः पृथ्वीमें जीवोंका और जलके जीवोंको पीड़ा होतीहै ॥५७॥ हे देवि ! जो हस्तके चौथे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो विजयापुरको वि-नाश करैं. इसमें संशय नहीं है ॥ ५८ ॥

सर्षपंराजिकाक्षीरसंग्रहंतत्रकारयेत् ॥ पट्टलोहसुवर्णादीन्त्रिगुणोलाभउच्यते ॥ ५९ ॥ चित्रादिचरणेदेवियदासौरिर्गमिष्य

ति ॥ भवेदग्निभयंदेवियमुनायास्तटेतदा ॥ ६० ॥

अर्थ–तहां सरसों, राई, दूध, रेशमी वस्त्र, लोह सुवर्ण आदिक इनको संग्रह करै तो तिगुना लाभ उत्पन्न होताहै ॥ ५९ ॥ हे देवि ! चित्राके प्रथम चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तौ हे देवि ! यमुनाके किनारे अग्निका भय होताहै ॥ ६० ॥

द्वितीयेचरणेदेवियदासौरिर्गमिष्यति ॥ द्राविडंमागधंदेशंराष्ट्रंचैवविनश्यति ॥६१॥ महद्भयंप्रजायतेविप्राणांदेशवासिनां ॥ रसंधान्यंक्षयंयातिसंदेहोनात्रपार्वति ॥ ६२ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो चित्राके दूसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ द्राविड़देश, मगधदेश, और इन देशोंकी दिशावोंकाभी विनाश होवे ॥ ६१ ॥ हे पार्वति ! पुनः तिन देशोंके रहेनेवाले ब्राह्मणोंको अत्यंत भय उत्पन्न होवे संदेहरहित रस धान्य नाशको प्राप्त होवें ॥ ६२ ॥

तृतीयेचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ कुरुक्षेत्रेषुदुर्भिक्षंमघवानैववर्षति ॥ ६३ ॥ तथैवाग्निभयंवृद्धिःप्रजापीडानिरंतरं ॥ परस्परंनरेंद्राणांयुद्धंभवतिदारुणं ॥ ६४ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो चित्राके तीसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ कुरुक्षेत्रमें दुर्भिक्ष होवे. और मेघ वर्षा न करैं ॥ ६३ ॥ अग्निके भयकी वृद्धि होवे और निरंतर प्रजावोंको पीड़ा होवे, पुनः परस्पर राजावोंका भयंकर युद्ध होवे॥६४॥

पादेचतुर्थेवैदेविसर्वंनास्तीतिकथ्यते ॥ स्वात्यादिचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥६५॥ रसपशवोविनश्यंतिदारुणंहस्तिनापुरे ॥ द्वितीयचरणेसौरिर्दुर्भिक्षंभवतिप्रिये ॥ ६६ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो चित्राके चौथे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ संपूर्ण पदार्थ नहीं हों ऐसा कहना चाहिये. हे देवि ! जो स्वातीके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तौ ॥ ६५ ॥ रस, पशु, विनाशको प्राप्त होतेहैं. और हस्तिनापुरीमें भयंकर होताहै. हे प्रिये ! जो स्वातीके दूसरे चरणमें शनैश्चर हों तो दुर्भिक्ष होवे ॥ ६६ ॥

पादेतृतीयेगेदेविसर्वंनाशंभविष्यति ॥ चतुर्थपादगःसौरिःरसं चगुडसर्षपः ॥ ६७ ॥ जायतेचतदादेविदधिदुग्धमहर्घता ॥ विशाखाप्रथमेपादेयदायातिशनैश्वरः ॥ ६८ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो स्वातीके तीसरे चरणमें शनैश्वर प्राप्त हों तो संपूर्णका नाश होवे, और जो स्वातीके चौथे चरणमें शनैश्वर प्राप्त हों तो रस निमक आदि, गुड़, सरसों, ॥ ६७ ॥ और हे देवि ! तबहीं दही अथवा दूधकी मंहँगई होतीहै. जो विशाखाके प्रथम चरणमें शनैश्वर प्राप्त हों ॥ ६८ ॥

तदाद्वित्रिचतुर्थेषुचरणेषुयदिभास्करिः ॥ उपद्रवंसर्वदेशेतदा देविप्रजायते ॥ ६९ ॥ अनुराधादिपादेषुयदायातिशनैश्वरः ॥ नान्नंलभ्यतिसौराष्ट्रेपच्यतेनैवमेदिनी ॥ ७० ॥

अर्थ–अथवा विशाखाके दूसरे तीसरे चौथे चरणमें जो शनैश्वर प्राप्त हों तो हे देवि ! सब देशोंमें उपद्रव होवे ॥ ६९ ॥ जो अनुराधाके प्रथम चरणमें शनैश्वर प्राप्त हों तो सौराष्ट्रदेशमें अन्न न प्राप्त होवे और पृथ्वीमें अन्न न पचायाजावे ॥ ७० ॥

मघवावर्षतेनैवद्वितीयेचरणेतथा ॥ पादेतृतीयगेदेवियदासौ रिःप्रतिष्ठितः ॥ ७१ ॥ व्यसनेचतदादेविविनश्यंतिनसंशयः॥ सशालिकोद्रवादेविकंगुनीकोद्रमाषकाः ॥ ७२ ॥

अर्थ–तथा जो अनुराधाके दूसरे चरणमें शनैश्वर हों तो मेघ वर्षा न करैं. हे देवि ! जो अनुराधाके तीसरे चरणमें शनैश्वर स्थित हों तो हे देवि ! व्यसनोंके विषे संपूर्ण विनाश होवें. इसमे संदेह नहीं है. हे देवि ! धानसहित कोदौ, कांकुनि, मूंग, उर्द, ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

मसूरंतंदुलामौद्गंचणकंवर्तुलंतथा ॥ एतानिचमहर्घाणिजायंते सुरसुंदरि ॥ ७३ ॥ पादेचतुर्थेवैसौरिर्मेरुदेशोविनश्यति ॥ नचान्नंपच्यतेपृथ्वीदुर्भिक्षंप्रबलंभवेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–मशूर, चांवल; मूंग, चना, ढुरुवा मटर, हे सुरसुंदरि ! ये महँगे होतेहैं ॥७३॥ जो अनुराधाके चौथे चरणमें शनैश्वर हों तो सुमेरु पर्वतके देशमें विनाश होवे और पृथ्वीमें अन्न न पचाया जावे. और प्रबल दुर्भिक्ष होवे॥७४॥

तथैवाग्निभयंयातिकर्पासंसणनश्यति ॥ ज्येष्ठायाःप्रथमेपादे यदायातिशनैश्चरः ॥ ७५ ॥ प्रजानांचभयंतत्रपरचक्रेणनश्य ति ॥ पादेद्वितीयेवैदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ ७६ ॥

अर्थ–तथा अग्निका भय होवे. और कपास, सन, ये नाशको प्राप्त होंतेहैं. जो जेष्ठाके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो ॥ ७५ ॥ तहांहीं प्रजावोंका भय और परारी फौजसे विनाश होताहै. हे देवि ! जो ज्येष्ठाके दूसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों ॥ ७६ ॥

तदातटेसमुद्रस्यदुर्भिक्षाग्निभयंभवेत् ॥ जायतेचमहाघोरंराजयु द्धंपरस्परं ॥ ७७ ॥ प्रजानांमरणंचैवगोधूमाश्चणकास्तथा ॥ समोढकंमुद्गमाषाजायंतेचमहर्घतां ॥ ७८ ॥

अर्थ–तो समुद्रके किनारे दुर्भिक्ष तथा अग्निका भय होवे और राजावोंका परस्पर भयंकर युद्ध होवे ॥७७॥ और प्रजावोंका मरण होवे. तथा गेहूं, चना, मोठ (मोथी,) मूंग, उर्द, इन्होंकी महँगई होतीहै ॥ ७८ ॥

तृतीयपादगःसौरिःसोरठःसूरसेनकः ॥ समुद्रस्यतटेसर्वंविन श्यंतिहभामिनि ॥ ७९ ॥ रौरवंचमहाकष्टंराजयुद्धंप्रवर्त्तते ॥ तस्कराणांभयंचैवसंदेहेनात्रभामिनि ॥ ८० ॥

अर्थ–हे भामिनी ! जो ज्येष्ठाके तीसरे चरणमें शनैश्चर हों तो सोरठ देश शूरसेनकदेशमें समुद्रके किनारे संपूर्णका विनाश होताहै ॥ ७९ ॥ हे भामि- नी ! रौरवशब्दयुक्त महाकष्टकारी राजावोंका युद्ध होताहै और चोरोंका भय होताहै. इसमें संदेह नहीं है ॥ ८० ॥

चतुर्थचरणेदेविविदेशेमेदिनीतथा ॥ पच्यंतेनैवधान्यानितथैवा ग्निभयंभवेत् ॥ ८१ ॥ मूलस्यप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ पूर्वदेशेषुदुर्भिक्षंपृथिव्यांराजविग्रहं ॥ ८२ ॥ ॥

अर्थ–हे देवि ! जो ज्येष्ठाके चौथे चरणमें शनैश्चर हों तौ विदेशमें पृथ्वीके विषे धान्य न पकै तथा अग्निका भय होवे. ॥८१॥ मूलके प्रथम चरणमें जो शनै- श्चर प्राप्त हों तो पूर्वदेशमें दुर्भिक्ष होवे और पृथ्वीमें राजावोंका विग्रह होवे॥८२॥

अन्नंनपच्यतेभूमौबाहुल्यंतस्करंजने ॥ विरोधंजायतेराज्ञांन श्यंतेविषयाअपि ॥ ८३ ॥ द्वितीयेचरणेदेविदेशेगुर्जरकेत था ॥ मेदिन्यांपच्यतेनान्नंदुर्भिक्षात्प्रलयंभवेत् ॥ ८४ ॥

अर्थ—और पृथ्वीमें अन्न न पाचन किया जाय. तथा चोर जनोंकी अधिकारी होवे और राजावोंका विरोध होवे. और विषयभी विनाशको प्राप्त होवें ॥ ८३ ॥ हे देवि ! जो मूलके दूसरे चरणमें शनैश्चर हों तो गुजरात देशमें पृथ्वीके विषे अन्न न पचाया जाय अर्थात् अन्न न मिले और दुर्भिक्षसे प्रलय होवे ॥ ८४ ॥

जायतेविग्रहोराज्ञांमघवानैववर्षति ॥ अग्निपीडाभयंचैवक र्पासंरायिसर्षपं ॥ ८५ ॥ मसूरंचणकामुद्गात्रिकुटायुगमाष कं ॥ कुलत्थादिवलादीनांजायतेचमहर्घता ॥ ८६ ॥

अर्थ—और राजावोंका विग्रह उत्पन्न होवे तथा मेघ वर्षा न करैं, और अग्निकी पीड़ा तथा भय होवे. पुनः कपास, राई, सरसों, ॥ ८५ ॥ मशूर, चना, मूंग, त्रिकुटा, उर्द, कुलथी आदि बलिष्ठ पदार्थोंकी महँगई होतीहै ॥८६॥

रसंतैलंसलवणंकृष्णजीरंचजीरकं ॥ संग्रहेत्रिगुणोलाभोसत्य मेतत्सुलोचने ॥ ८७ ॥ पादेतृतीयगेसौरेफलमेतच्छुलोच ने ॥ चतुर्थेचरणेदेवितदाधर्मनदीतटे ॥ ८८ ॥ ॥

अर्थ—हे सुलोचने ! निमकसहित रस, तेल, श्याह जीरा और सफेद जीरा इन्होंको जो संग्रह करै तौ तिगुना लाभ होवे. यह सत्य है ॥८७॥ हे सुलोचने ! जो शनैश्चर मूलके तीसरे चरणमें हों तौ यह फल है. हे देवि ! जो मूलके चौथे चरणमें शनैश्चर हों तो धर्मनदीके किनारे अर्थात् गंगाजीके किनारे ॥ ८८ ॥

जायतेविषयंनाशंसत्यमुक्तंतुसंकटे ॥ पूर्वाषाढादिचरणे यदा यातिशनैश्वरः ॥ ८९ ॥ तदानागपुरेरौद्रंदुर्भिक्षंजननाशनं ॥ कर्पासंराजिकाक्षारंसर्षपंवस्तुधारयेत् ॥ ९० ॥ ॥

अर्थ—विषयोंका नाश होवे हे शंकटे ! (हे पार्वति !) यह सत्य कहा है.

जो पूर्वाषाढ़ाके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों ॥ ८९ ॥ तौ नागपुरमें मनुष्योंके नाशकरनेवाला भयंकर दुर्भिक्ष होवे. और कपास, राई, अनेक प्रकारके क्षार, सरसों, ये वस्तु संग्रह करै ॥ ९० ॥

त्रिगुणंजायतेलाभंमयाख्यातंवरानने ॥ पादेद्वितीयगेसौरिः अहिक्षेत्रंसगुर्जरं ॥ ९१ ॥ कुरुक्षेत्रादिदेशेषुमघवानैववर्षति ॥ विनश्यंतिचसौख्यानिजनानांनात्रसंशयः ॥ ९२ ॥ ॥

अर्थ–तो हे वरानने! तिगुना लाभ होवे. यह मैने कहा है. जो पूर्वाषाढ़ाके दूसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो गुर्जरदेशसहित अहिक्षेत्र ॥ ९१ ॥ और कुरुक्षेत्रादिक देशोंमे मेघ वर्षा नहीं करते, और मनुष्योंके सुख विनाशको प्राप्त होतेहैं. इसमे संदेह नहीं है ॥ ९२ ॥

पादेतृतीयेतुर्येचसर्वंनास्तीतिकथ्यते ॥ उत्तराषाढादिपादेषुय दायातिशनैश्चरः ॥९३॥ हस्तिनापुरसंयुक्तंपुरेपाटलिपुत्रके ॥ मघवावर्षतेनैवदुर्भिक्षंबहुलंभवेत् ॥ ९४ ॥ ॥

अर्थ–और पूर्वाषाढ़ाके तीसरे अथवा चौथे चरणमें शनैश्चर जांय तो सर्व नहीं है. ऐसा कहना चाहिये. उत्तराषाढ़ाके प्रथम चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तो ॥ ९३ ॥ दिल्ली नगरसे पटनातक मेघ वर्षा नहीं करते. इसीसे अधिक दुर्भिक्ष होताहै ॥ ९४ ॥

अतःसर्वाणिवस्तूनिसंग्रहंकारयेद्बुधः ॥ एकत्रिषट्कमासेषुलाभ श्चैवगुणत्रयं ॥ ९५ ॥ भूमिराजविरोधःस्याद्भयंशीतंतथानलं पादद्वितीयगःसौरिःपुरेमंडलवेष्टके ॥ ९६ ॥

अर्थ–इसी कारणसे ज्ञानवान पुरुष संपूर्ण वस्तुवोंको संग्रह करावै तो ३ अथवा ६ महींनोंमें तिगुना लाभ होवे ॥ ९५ ॥ और ब्राह्मणोंका विरोध होवे, पुनः शीत तथा अग्निका भय होवे. जो उत्तराषाढ़ाके दूसरे चरणमें शनैश्चर हों तो मंडलवेष्टक पुरमें ॥ ९६ ॥

संनिधेःकामरूदेशेविषयनाशमुच्यते ॥ परचक्रविनाशायमे दिनीपच्यतेनहि ॥ ९७ ॥ मानवानांभवेद्याधिर्वर्षानैवपतंति

हि ॥ पादतृतीयगःसौरिःनालवंचविनश्यति ॥ ९८ ॥ ॥

अर्थ–और कामरूदेशके निकट विषयोंका नाश कहा है. और परारी फौजके विनाशके लिये पृथ्वी भोजनको अन्न नहीं पचावती ॥ ९७ ॥ और मनुष्योंको व्याधि उत्पन्न होतीहै. और वर्षा नहीं गिरतीहै. पुनः उत्तराषाढ़ाके तीसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो मालवदेश विनाशको प्राप्त होवे. ॥ ९८ ॥

तदामुद्गतिलादीनिमहर्घाणिभवंतिहि ॥ पादेचतुर्थगेसौरौदुर्भिक्षंकामरूपिके ॥ ९९ ॥ मघवावर्षतेनैवविषयनाशमुच्यते ॥ महाभयंमनुष्याणांजायतेराजविग्रहं ॥ १०० ॥ ॥

अर्थ–तबहीं मूंग, तिल आदिक महंगे होतेहैं. जो उत्तराषाढ़ाके चौथे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो कामरूदेशमें दुर्भिक्ष होवे. ॥ ९९ ॥ और मेघ वर्षा नहीं करते, पुनः विषयोंका नाश कहा है. और मनुष्योंको अत्यंत भय होवे, पुनः राजावोंका विग्रह उत्पन्न होवे ॥ १०० ॥

तथैवाग्निभयंयातिरसधान्यमहर्घता ॥ श्रवणेप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ १ ॥ देशेषुकामरूपेषुदुर्भिक्षादिभयंभवेत् ॥ पादेद्वितीयगेदेविफलमेतत्प्रजायते ॥ २ ॥ ॥

अर्थ–तथा अग्निका भय प्राप्त होवे. और रस, धान्य इन्होंकी महँगई होवे, पुनः श्रवणके प्रथम चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तो ॥ १ ॥ कामरूदेशमें दुर्भिक्षादिकोंका भय होताहै. हे देवि ! जो शनैश्चर श्रवणके दूसरे चरणमें हों तो यह फल होताहै ॥ २ ॥

तृतीयेचरणेदेवियदायातिशनैश्चरः ॥ दुर्भिक्षंबहुलंदेविकामरूपेभवेत्तदा ॥ ३ ॥ मघवावर्षतेनैवसर्षणंलवणंगुडं ॥ सर्वेरसामहेशानिजायंतेचमहर्घतां ॥ ४ ॥ ॥

अर्थ–हे देवि ! श्रवणके तीसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो कामरूदेशमें दुर्भिक्ष अधिक होवे ॥ ३ ॥ हे महेशानि ! (हे पार्वति !) मेघ वर्षा न करैं तथा सरसों, निमक, गुड़, संपूर्ण रस महंगे होतेहैं ॥ ४ ॥

श्रवणस्यचतुर्थांशेधनिष्ठार्धसमन्वितं ॥ स्थितिर्नास्तीतिकथ्यं

तेसत्यमेतद्वरानने ॥ ५ ॥ धनिष्ठायांयदासौरिस्त्रिचतुष्पादसं
स्थितः ॥ यातेचैवसुरेशानिफलमुक्तंतुपार्वति ॥ ६ ॥ ॥

अर्थ—हे वरानने ! आधे धनिष्ठासे युक्त श्रवणके चौथे चरणमें जो शनैश्चर हों तो स्थिति नहीं होगी. ऐसा कहेना यह सत्य है. ॥ ५ ॥ हे सुरेशानि ! हे पार्वति ! जो धनिष्ठाके तीसरे अथवा चौथे चरणमें शनैश्चर स्थित हों तो यह फल कहना ॥ ६ ॥

देशेकनकपुरेरम्येतथैवकान्यकुब्जके ॥ मेदिनीपच्यतेनैवमघवा
नैववर्षते ॥७॥ दुर्भिक्षंजायतेघोरंसंदेहोनास्तिभामिनि ॥ वारु
णेप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ ८ ॥ ॥

अर्थ—कि मनोहर कनकपुर देशमें तथा कान्यकुब्जदेशमें पृथ्वीमें अन्न नहीं पकता, और मेघ वर्षा नहीं करते ॥ ७ ॥ और हे भामिनि ! भयंकर दुर्भिक्ष होवे. इसमें संदेह नहीं है. जो शतभिषाके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो ॥ ८ ॥

तदाकष्टंमहाघोरंमघवानैववर्षति ॥ मेदिन्यांपच्यतेनैवराजयु
द्धंपरस्परं ॥ ९ ॥ दुर्भिक्षंविषमंघोरंप्रजानाशंभयंभवेत् ॥ पा
दद्वितीयगःसौरिर्मध्यदेशेसपूर्वके ॥ १० ॥ ॥

अर्थ—महा भयंकर कष्ट होवे और मेघ वर्षा न करैं तथा पृथ्वी अन्नको नहीं परिपक्व करती. और राजावोंका परस्पर युद्ध होताहै ॥ ९ ॥ और विषम भयंकर दुर्भिक्ष होताहै. तथा प्रजावोंका नाश और भय होताहै. जो शतभिषाके दूसरे चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों तो पूर्वसहित मध्यदेशमें ॥ १० ॥

मेदिन्यांपच्यतेनैवराजयुद्धंपरस्परं ॥ धान्यादीनांरसादीनांम
हर्घंजायतेप्रिये ॥ ११ ॥ पादेतृतीयगेदेविराजविग्रहभाषितं ॥
दुर्भिक्षंरसनाशायविषयेषुप्रणश्यति ॥ १२ ॥ ॥

अर्थ—पृथ्वीके विषे अन्न न पचाया जावे. और परस्परं राजावोंका युद्ध होवे. और हे प्रिये ! धान्य आदिक तथा रस आदिक संपूर्ण मंहँगे होतेहैं ॥ ११ ॥ हे देवि ! जो शनैश्चर शतभिषाके तीसरे चरणमें प्राप्त हों तो राजा-

वोंका विग्रह कहा है. और रस, निमक, आदिकोंके नाशके लिये दुर्भिक्ष होताहै. और विषयभी नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ १२ ॥

पादेचतुर्थगेमंदेपूर्वाभाद्रपदत्रये ॥ नयावत्सफलंसर्वंकथ्यतेच सुलोचने ॥ १३ ॥ एवंचतुर्थपादेचज्ञेयंसर्वंसुभामिनि ॥ उत्त राप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ १४ ॥ ॥

अर्थ–हे सुलोचने ! शतभिषाके चौथे चरणमें और पूर्वाभाद्रपदके तीनों चरणोंमें जो शनैश्चर हों तो तबतक संपूर्ण सफल न कहना ॥१३॥ हे भामिनि ! इसी प्रकार पूर्वाभाद्रपदके चौथे चरणको संपूर्ण जानना. और उत्तराके प्रथम चरणमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तो ॥ १४ ॥

तदामेरोरधःपृथ्व्यांजननाशःप्रजायते ॥ मानुषेरोगबाहुल्यंशि वस्यवचनंयथा ॥१५॥ पूर्वाभाद्रपदेमंदोजायतेचतुरंघ्रिभिः ॥ तदामेरुतटेदेविहिमाचलसमीपगे ॥ १६ ॥ ॥

अर्थ–सुमेरु पर्वतकी नीचेकी पृथ्वीमें मनुष्योंका नाश होवे. और मनुष्योंके रोगकी अधिकारी होवे. जैसा शिवका बचन है अर्थात् जैसा शिवका बचन मिथ्या नहीं होता तैसे येभी मिथ्या नही है ॥ १५ ॥ हे देवि ! जो पूर्वाभाद्रपदके चौथे चरणमें शनैश्चर हों तो सुमेरुके तटके प्रति और हिमाचलके समीप ॥ १६ ॥

दुर्भिक्षंजायतेरौद्रंद्वितीयेषुचयत्फलं ॥ उत्तरायास्तृतीयांघ्रिफ लंतुल्यंविनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥ पादेचतुर्थगेमंदेदेशेसौराष्ट्रकेत था ॥ दुर्भिक्षंजायतेदेविनान्नंपृथ्व्यांसुपच्यते ॥ १८ ॥ ॥

अर्थ–भयंकर दुर्भिक्ष होताहै. और दूसरेमें भी वही फल है. तथा उत्तराभाद्रपदके तीसरे चरणमें जो शनैश्चर हों तो तुल्य फल जानना ॥ १७ ॥ उत्तराभाद्रपदके चौथे चरणमें शनैश्चरको प्राप्त भयेपर सौराष्ट्रदेशमें दुर्भिक्ष होताहै. हे देवि ! और पृथ्वी अन्नको परिपक्व नहीं करती ॥ १८ ॥

मघवावर्षतेनैवविषयंनाशयेदिति ॥ गजोष्ट्रमहिषीगावोग र्भंपक्षिजातिकं ॥ १९ ॥ म्रियंतेजंतवःसर्वेसत्यमेतच्छुरेश्व रि ॥ रेवतीप्रथमेपादेयदायातिशनैश्चरः ॥ २० ॥ ॥

अर्थ–पुनः मेघ वर्षा नहीं करते हैं. और विषय नाशको प्राप्त होतेहैं. तथा हाथी, ऊंट, भैंसैं, गौवैं, और पक्षिजातिवालोंके गर्भ गिर पड़ते हैं ॥ १९ ॥ हे सुरेश्वरि ! और संपूर्ण जीव मरणको प्राप्त होतेहैं. यह सत्यही है. जो रेवतीके प्रथम चरणमें शनैश्चर प्राप्त हों ॥ २० ॥

तदानदीतटेद्वंद्वेतटदुर्भिक्षकंभवेत् ॥ नान्नंपचतिमेदिन्यांशृणु मेवचनंप्रिये ॥ २१ ॥ तृतीयेचद्वितीयेवायदातिष्ठतिपार्वति ॥ विंध्याद्रिपूर्वभागेषुविषयंप्रविनश्यति ॥ २२ ॥ ॥

अर्थ–तो दो नदियोंके किनारे दुर्भिक्षे होताहै. और पृथ्वीमें अन्न नहीं पचाया जाता है. हे प्रिये! यह मेरा बचन सुनो ॥ २१ ॥ हे पार्वति! रेवतीके दूसरे अथवा तीसरे चरणमें जो शनैश्चर स्थित हों तो विंध्याचलके पूर्वभागमें विषयका नाश होवे ॥ २२ ॥

मूषकस्यभयंयातिकाव्यकृत्पीडनंभवेत् ॥ तथाकालकृतंचैव नटनाव्यकृतंतथा ॥ २३ ॥ पादेचतुर्थगेदेविपृथिव्यान्नंप्रजायते ॥ मघवावर्षतेनैवरौरवोजायतेमहत् ॥ २४ ॥ ॥

अर्थ–और मूसकोंका भय होवे अथवा शुक्रकी हुई पीडा होवे तथा समयसे नट नाई आदिक होवें ॥ २३ ॥ हे देवि ! जो शनैश्चर रेवतीके चौथे चरणमें जावें तो पृथ्वीमें अन्न उत्पन्न होवे, और मेघ वर्षा न करैं, तथा भयंकर समय होवे ॥ २४ ॥

तथैवाग्निभयंयातिरसधान्यमहर्घता ॥ २५ ॥ इति श्रीरुद्रयामलेसारोद्धारेउमामहेश्वरसंवादेमेघमालायांअर्घकांडेत्रिविधशनिविचारवर्णनंनामचतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ ॥

अर्थ–तथा अग्निका भय होवे, और रस धान्योंकी महँगई होवे ॥२५॥ इति श्रीरुद्रयामले सारोद्धारे उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकायुतमेघमालायां अर्घकांडे त्रिविधशनिविचारवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पार्वत्युवाच ॥ त्रिकालज्ञमहेशत्वंकथ्यतांराशिवक्रगाः ॥ ग्रहाणांचफलंयोगंत्रिधोत्पातफलंप्रभो ॥ १ ॥ ॥ ईश्वरउवाच ॥

एकऋक्षगतावेतौएकराशियुतौयदि ॥ रविरंगारकोवक्रीशनै श्चरबृहस्पती ॥ २ ॥ ॥ ॥

अर्थ—पार्वतीजी कहती हैं. हे महेश! आप तीनकालकी बातको जानने-वाले हो, इससे राशिमें वक्रगतिको जो ग्रह प्राप्त होवे उसको फल कहो. और हे प्रभो! ग्रहोंका फल तथा योग और तीन प्रकारके उत्पातोंका फल ये संपूर्ण कहो ॥ १ ॥ ऐसा पार्वतीजीका प्रश्न सुनके महादेवजी कहते हैं कि सूर्य और मंगल एक नक्षत्रमें प्राप्त हों और एक राशिमें शनैश्चर बृहस्पति हों और सूर्य मंगल वक्रीभावको प्राप्त हों ॥ २ ॥

प्रजापीडामहानित्यंव्याधिदुर्भिक्षतस्कराः ॥ हाहाभूतंमहाघोरं नृपपीडाप्रजायते ॥ ३ ॥ एकराशिगतावेतौयदिराहुशनैश्च रौ ॥ एककर्त्तरियोगंचभाषितंमुनिपुंगवैः ॥ ४ ॥ ॥

अर्थ—तो व्याधि, दुर्भिक्ष, चोर, इन्होंसे प्रजावोंको अत्यंत नित्य पीड़ा होवे. और अत्यंत भयंकर हाहाकार होवे पुनः राजाको पीड़ा होवे ॥ ३ ॥ जो ये राहु शनैश्चर एक राशिमें प्राप्त हों तो श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने एक कर्तरीयोग कहा है ॥ ४ ॥

एकराशौसप्तमेवाशनिराहूयदातदा ॥ महामारीभयंयातिराज युद्धंपरस्परं ॥ ५ ॥ यदिसौरिबृहस्पतिभूमिसुतावक्रोदयमार्गा स्त्वेकगताः ॥ धनधान्यहिरण्यविनाशकराःक्षयंयांतिनृपाः परिच्छिन्नधराः ॥ ६ ॥ ॥ ॥

अर्थ—जो शनि राहु एक राशिमें हों अथवा सातवें हों तो महामारीका भय प्राप्त होता है. और परस्पर राजावोंका युद्ध होता है ॥ ५ ॥ जो शनै-श्चर, बृहस्पति, मंगल, ये वक्री होके एक मार्गमें प्राप्त हों तो धन और धा-न्योंका विनाश करतेहैं. और राजालोग नाशको प्राप्त होते हैं. और पृथ्वी छिन्न होती है ॥ ६ ॥

कुजक्षेत्रेगतःसौरिर्गुरुस्तत्रैवसंस्थितः ॥ पादशेषाभवेत्पृथ्वीमांसशोणितकर्दमा ॥ ७ ॥ मूलेचगलितावृष्टिःसुदुर्भिक्षंगुणसंभ वं ॥ प्रजापीडातथारोगंनश्यन्तेसर्वजंतवः ॥ ८ ॥ ॥

अर्थ–पुनः मंगलके स्थानमें जो शनैश्चर हों और बृहस्पति तहांहीं स्थित हों तो मांस, रुधिर, कीच, इन्होंसे युक्त पृथ्वी एक चरण बाकी रहती है॥७॥ जो शनैश्चर मूल नक्षत्रमें हों तो वर्षा होवे. और गुणोंसे उत्पन्न दुर्भिक्ष होवे. तब हीं प्रजावोंके व्याधि तथा रोग उत्पन्न होता है. और सब जीवोंका नाश होता है ॥ ८ ॥

राज्ञोपद्रवपीडास्यादनावृष्टिस्तथाभवेत्॥ एतेमूलेहिस्युर्दोषाना न्यथाचफलंत्विदं ॥९॥ मृगस्थोभास्करोयत्रमृगस्थोगुरुरेवच ॥ वृषराशौधरासूनुरन्नंभवतिदुर्लभं ॥ १० ॥

अर्थ–और राजाका उपद्रव तथा पीड़ा होवे. तथा वर्षा न होवे. इतने मूलमें दोष होतेहैं. और अन्यथा फल नहीं होताहै ॥ ९ ॥ जहां मृगशिरामें सूर्य स्थित हों और मृगशिराहीमें बृहस्पति स्थित हों और वृषराशिमें मंगल स्थित हों तो अन्न दुर्लभ होताहै ॥ १० ॥

मूलेमघायांरोहिण्यांरेवत्यांचोदितेगुरौ ॥ एतेष्वेवशनौप्राप्तेदुर्भि क्षंजायतेध्रुवं ॥ ११ ॥ भूमिकंपंचनिर्घातंपतंतिजलविंदवः ॥ आकाशात्पततेबिंदुःपरिवेषाइंदुसूर्ययोः ॥ १२ ॥

अर्थ–मूल, मघा, रोहिणी और रेवती, इन नक्षत्रोंमें बृहस्पति उदय हों और इनहीं नक्षत्रोंमें जो शनैश्चर प्राप्त हों तो निश्चय दुर्भिक्ष होताहै ॥ ११ ॥ पृथ्वी कँपने लगे और हाहाकार होवे तथा जलके बिंदु गिरैं और सूर्य चंद्र-मामें आकाशसे जलके बिंदु पड़ते हैं. और परिवेष होते हैं ॥ १२ ॥

परिघाश्चापवज्राश्चधूम्रकेतुश्चमार्जनी ॥ एतेषांदर्शनेदेविजाय तेचमहद्भयं ॥१३॥ सर्वमास्सुपूर्णिमायांभूमिकंपोयदाभवेत् ॥ उल्कातारावज्रपातःपरिघःशशिसूर्ययोः ॥ १४ ॥

अर्थ–हे देवि ! परिध, अपवज्र, धूम्रकेतु और बढ़नी, इन्होंको देखनेपर अत्यंत भय होताहै ॥ १३ ॥ और संपूर्ण महींनोमें पूर्णिमाके दिन जो पृथ्वी कंपायमान होवे अर्थात भुइँडोल आवे. और चंद्रसूर्यमें उल्का, तारा, वज्रपात, परिघ, ये दीख पड़ें ॥ १४ ॥

धूम्रकेतुःशक्रचापग्रहणंबहुधातथा ॥ तथैवसर्ववस्तूनांजायतेच

महर्घता ॥ १५ ॥ संग्रहेत्सर्वधान्यानिप्रयत्नेनतुपार्वति ॥ मा
सेषुपंचमेष्वत्रलाभस्तुद्विगुणोभवेत् ॥ १६ ॥

अर्थ–और धूम्रकेतु, इंद्रधनुष ये जो उदय हों तो बहुधा ग्रहण परैं. तथा संपूर्ण वस्तुवोंकी महँगई होतीहै ॥ १५ ॥ हे पार्वति ! यत्नसे संपूर्ण धान्योंका संग्रह करै. फिर यहां पांच महींनामें दुगुना लाभ होताहै ॥ १६ ॥

तारकानांचपतनंविद्युद्गर्जतिवैयदा ॥ वर्षाकालेतदाक्षिप्रंशि
वस्यवचनंयथा ॥ १७ ॥ अतिचारगताःसौम्याःक्रूराश्चैवव्यव
स्थिताः ॥ दुर्भिक्षंराष्ट्रभंगंस्यात्प्रजामारीप्रवर्त्तते ॥ १८ ॥

अर्थ–वर्षाके समयमें जहां नक्षत्रोंका गिरना हो और बिजुली तड़पै तो थोड़ी वर्षा होवे. जैसा शिवजीका बचन है. अर्थात् शिवजीका बचन जैसा मिथ्या नहीं होताहै तैसे यहबातभी मिथ्या नहीं है ॥१७॥ शुभग्रह अतीचारको प्राप्त हों और क्रूरग्रह स्थित हों तो दुर्भिक्ष होवे, और देशोंका नाश होवे और प्रजावोंके महामारी उत्पन्न होवे ॥ १८ ॥

अतिवातमवातंचअतिउष्णंनिरुष्णता ॥ अत्यभ्रंचनिरभ्रंवाशी
घ्रंवर्षतिनीरदाः ॥१९॥ यदाभौमश्चचंद्रश्चदेवतानांपुरोहितः ॥
एकराशौनपीड्यंतेतदाकृतयुगंभवेत् ॥ २० ॥

अर्थ–और अत्यंत पवन चलै अथवा पवन न चलै और गर्मी होवे वा न होवे, पुनः मेघ अत्यंत वर्षा करैं वा न करैं और वैशाख महींनामें मेघ शीघ्र वर्षा करैं. यह शुभग्रहोंके अतीचारका फल है ॥ १९ ॥ जो मंगल चंद्र और देवतावोंके पुरोहित बृहस्पतिजी, ये एक राशिमें प्राप्त होवें तो सत्ययुग होता है ॥ २० ॥

वृषराशिगतेशुक्रेरविभौमशनैश्चरैः ॥ विराटाभीरकेदेशेमघवा
नैववर्षति ॥ २१ ॥ जायतेप्रलयाकारोमेदिन्यामन्नंनपच्यते ॥
क्षयंयांतिरसाधान्याराजयुद्धंपरस्परम् ॥ २२ ॥

अर्थ–वृषराशिमें शुक्रको प्राप्त भयेपर और सूर्य, मंगल, शनैश्चर, इन्होंसे पूर्णदृष्टिसे दीखे जांय तो विराट और आभीरक देशमें मेघ वर्षा नहीं करते हैं. ॥ २१ ॥ और प्रलयका आकार उत्पन्न होताहै. पुनः पृथ्वीमें अन्न नहीं

प्रचायाजाता. और रस, धान्य क्षयको प्राप्ते होते हैं. और परस्पर राजावोंका युद्ध होवे ॥ २२ ॥

रविसौरीयदादेविवृषराशौप्रतिष्ठितौ ॥ मृत्युश्चैवनरेंद्राणांधा न्यानांचमहर्घता ॥२३॥ कार्पासादिमहर्घस्यादग्निदाहंप्रजाय ते ॥ तदाशुक्रस्यास्तमयेचतुष्पादविनाशनं ॥ २४ ॥

अर्थ–हे देवि! जो सूर्य और शनैश्चर वृषराशिमें स्थित हों तो राजावोंकी मृत्यु होवे और धान्योंकी महँगई होवे ॥ २३ ॥ और कपास आदिकोंकी म-हँगई होवे, तथा अग्निका दाह होवे और तभी शुक्रके अस्त भयेपर चौपायोंका विनाश होवे ॥ २४ ॥

कन्यामीनालिसिंहेधनवृषमिथुनेवक्रगेमंदभौमे ॥ पृथ्वीसंक्रु द्धभूपाक्षितिपतिदलिताविग्रहंचातिघोरं ॥ दुर्भिक्षंसस्यनाशो जनपदमरणंयातिलोकेप्रकंपम् ॥ चक्रारूढंसमस्तंभ्रमयतिचद शदिक्मीनसंस्थेर्कपुत्रे ॥२५॥ सूर्योभौमस्तथासौरिरेकत्रयदि तिष्ठति ॥ तदातुभवतिराज्यंदेशेचैवकलिंगके ॥ २६ ॥

अर्थ–कन्या, मीन, वृश्चिक, सिंह, धन, वृषभ, मिथुन, इन्होंमें शनैश्चर मंग-लको वक्रभयेपर पृथ्वी क्रुधित हुये राजावोंसहित होवे, ऐसे पृथ्वी मालि-कोंसे पीड़ित कीजातीहै. और भयंकर विग्रह होताहै. और दुर्भिक्ष होताहै. तथा खेतियोंका नाश होताहै. और देशोंमें मृत्यु होतीहै और लोकमें कंप हो ताहै और शनैश्चरको मीनराशिमें स्थित भयेपर चक्रमें स्थित ऐसे संपूर्ण ज-गतको दशोंदिशामें भ्रमावतेहैं ॥ २५ ॥ सूर्य, मंगल तथा शनैश्चर जो एक जगा स्थित हों तो कलिंगदेशमें राज्य होतीहै ॥ २६ ॥

दुर्भिक्षंराष्ट्रभंगःस्याद्रौरवोजायतेमहत् ॥ तथैवाग्निभयंघोरंश्वेतं चास्थिमहीतले ॥ २७ ॥ स्वात्योदकस्तथाधात्रीरसधान्यक्षयं भवेत् ॥ शुक्रोभानुश्चसौरिश्चयदामेषेप्रतिष्ठति ॥ २८ ॥

अर्थ–और दुर्भिक्ष तथा देशोंका नाश होवे और भयंकर समय होवे तथा अग्निका भयंकर भय होवे और सफेद अस्थिवाला पृथ्वीतल होजावे ॥२७॥

तथा स्वातीका जल पृथ्वीमें पड़नेसे रस धान्योंका नाश होताहै. और शुक्र, सूर्य और शनैश्चर जो मेषमें स्थित हों ॥ २८ ॥

कनकंयवगोधूमंकोद्रवंकंगुशालयः ॥ दधिदुग्धादिकंदेविजा यतेचमहर्घता ॥ २९ ॥ गुरुभौमस्यसंयोगंयदादेविप्रवर्त्तते ॥ मिथुनेषुतदायांतिजनानाशंतदानृपः ॥ ३० ॥

अर्थ–तो हे देवि! सुवर्ण, जव, गेहूं, कोदो, कांकुनि, धान, दही, दूध आदिक इन्होंकी महँगई होतीहै ॥ २९ ॥ हे देवि! बृहस्पति और मंगलका संयोग होवे और तभी जो मिथुनमें प्राप्त होवें तो मनुष्योंका नाश तथा राजाका नाश होवे ॥ ३० ॥

भृगुभौमश्चसौरिश्चकर्कटेयदितिष्ठति ॥ विराटेलाटकेदेशेसर्वना शःप्रजायते ॥ ३१ ॥ सौम्यःशुक्रश्चभौमश्चरविगुरुशनैश्चराः ॥ एतद्वक्रत्रयेदेविजायतेचमहद्भयं ॥ ३२ ॥

अर्थ–शुक्र, मंगल, शनैश्चर, जो कर्कमें स्थित हों तो विराट और ललाट देशमें संपूर्णका नाश होताहै ॥ ३१ ॥ हे देवि! बुध, शुक्र, मंगल, सूर्य, बृहस्पति, शनैश्चर, ए जो वक्री होंवें तो महाभय होताहै ॥ ३२ ॥

सप्तद्वीपेषुपीडास्यान्नान्नंपचतिभूतले ॥ गजाश्वमहिषीधेनुमनु ष्याणांक्षयंभवेत् ॥३३॥ छत्रभंगस्तदादेविचतुर्दिक्षुप्रपीडनं ॥ मघवावर्षतेनैवश्वेतास्थिचमहीतले ॥ ३४ ॥

अर्थ–और सात द्वीपोंमें पीड़ा होतीहै. और पृथ्वीतलमें अन्न नहीं पचता, पुनः हाथी, घोड़ा, भैंसैं और मनुष्य इनका नाश होता है ॥ ३३ ॥ हे देवि! तभी राजाके चिन्हका नाश होताहै. और चारों दिशावोंमें पीड़ा होतीहै और मेघ वर्षा नहीं करते और पृथ्वीतल सफेद हड्डियोंसहित होजाताहै ॥ ३४ ॥

परस्परहृतंद्रव्यमग्नितस्करजंभयं ॥ एतत्सर्वंभवेत्सत्यमन्यथानै वभामिनि ॥ ३५ ॥ रव्यादौशनिपर्यंतंक्रूराक्रूरौव्यवस्थितौ ॥ एकराशिगतायेचगोलकंयोगजायते ॥ ३६ ॥

अर्थ–हे भामिनि! लोग परस्पर द्रव्य हरण करतेहैं. और अग्नि तथा चोरोंसे

भय होताहै. यह सब सत्य है. अन्यथा नहीं है. और सूर्यसे आदि लेकर शनिपर्यंत खोटे और बुरे ग्रह स्थित हों और जो एक राशिमें प्राप्त हों तो गोलक योग होताहै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

पीडयतिमहींसर्वांतदाभूमिभयंभवेत् ॥ देवताःपतनंयांतिपीडनंशेषमंडले ॥ ३७ ॥ अवर्षणंछत्रभंगंमहामारीतदाभवेत् ॥ दुर्भिक्षंरौरवाकाराजायतेसर्वमेदिनी ॥ ३८ ॥

अर्थ—वह योग संपूर्ण पृथ्वीको पीड़ा करताहै, तभी पृथ्वीको भय होताहै. और देवताभी अपने स्थानोंसे गिरतेहैं पुनः शेषजीके मंडलको पीड़ा होतीहै ॥ ३७ ॥ और मेघ वर्षा नहीं करतेहैं तथा देशोंका नाश और तभी महामारी होतीहै और भयंकर दुर्भिक्षयुक्त संपूर्ण पृथ्वी होतीहै ॥ ३८ ॥

राजनाशःप्रजायेतसेनयोरुभयोरपि ॥ अग्निदाहंजंतुपीडातथाद्विपदचतुष्पदां ॥ ३९ ॥ जायतेनात्रसंदेहोशिवस्यवचनंयथा ॥ अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाःशलभाःशुकाः ॥ ४० ॥

अर्थ—और दोनों सेनावोंमे राजावोंका नाश होताहै. और आग लगतीहै पुनः जीवोंको पीड़ा होतीहै. तथा मनुष्य और चौपयोंकोभी पीड़ा होती है. ॥ ३९ ॥ इसमें संदेह नहीं है. जैसा शिवबचन मिथ्या नहीं होता तैसे ये बातैंभी मिथ्या नहीं होतीं. और अत्यंत वर्षा होना तथा वर्षाको न होना, मूष, टाड़ी, शुवा, इनका लगना ॥ ४० ॥

स्वचक्रंःपरचक्रंवासप्तैतेईतयःस्मृताः ॥ अकालेपिफलंपुष्पंवृक्षाणांतत्रजायते ॥ ४२ ॥ स्वस्वज्ञातीयमांसभक्षाःदुर्भिक्षंतत्ररौरवं ॥ ऋतोर्विपर्ययंतत्रदुर्भिक्षंमंडलेभवेत् ॥ ४२ ॥

अर्थ—तथा अपनी सेना लूट लेवे अथवा परारी सेना लूट लेवे. ये सात ईती कहावती हैं. और तहां अकालमेंभी वृक्षोंके फल पुष्प उत्पन्न होते हैं ॥ ४१ ॥ और तहां भयंकर दुर्भिक्ष होता है इसीसे अपने जातिवालोंका मांस भक्षण करते हैं और ऋतु उलटी होजाती हैं अर्थात् गर्मीके समयमें जाड़ा होवे इसी प्रकार उलट होता है और पृथ्वीमंडलमें दुर्भिक्ष होता है ॥ ४२ ॥

भूमिकंपोरजःपातोरक्तवृष्टिश्चजायते ॥ देशध्वंसोप्रजापीडामृ

त्युःपरवधस्तथा ॥४३॥ परचक्रागमंतत्रदुर्भिक्षंस्वस्वराजके ॥ अतिचारगतेशुक्रेदेवेज्येचंद्रजस्तथा ॥ ४४ ॥

अर्थ–और पृथ्वी कंपायमान होवे और धूलिकी वर्षा होवे. पुनः रुधिरकी वर्षा होवे तथा देशोंका नाश होवे और प्रजावोंको पीड़ा होवे. मृत्यु तथा शत्रुका बध होवे ॥ ४३ ॥ और शुक्र बृहस्पति तथा बुध इनका अतीचार भयेपर तहांहीं परारी सेनाका आगमन और अपनी राज्यमें दुर्भिक्ष होवे ॥४४॥

वक्रगेभौममंदेचभयंरोगंतदाभवेत् ॥ अश्वप्लुवंमाधवगार्जितंच स्त्रियाश्चरित्रंभवतव्यताच ॥४५॥अवर्षणंचाप्यतिवर्षणंचदेवोन जानातिकुतोमनुष्यः॥४६॥इतिश्रीरुद्रयामलेसारोद्धारेउमामहेश्वरसंवादेमे० अर्घकांडेराशिग्रहोत्पातफलवर्णनंनामपंचमोध्यायः

अर्थ–मंगल तथा शनैश्चरको बक्र भयेपर तहां भय और रोग होता है और घोड़ाके गुण वैशाख महींनामें मेघको गर्जना और स्त्रीके चरित्र, तथा होनेवाली वार्ता अथवा मेघका न वर्षना, वा अति वर्षना, ये सब बातें ईश्वर नहीं जानता पुनः मनुष्य कैसे जानैगा ॥४५॥४६॥ इति श्रीरुद्रयामले सारोद्धारे उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकायुतमेघमालायां अर्घकांडे राशिग्रहोत्पातवर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ईश्वरोवाच ॥ ॥ मेषराशिगतेसूर्येतुलायांरजनीकरः ॥ वर्षणं जायतेस्वल्पंसर्वधान्यमहर्घता ॥ १ ॥ वृषराशिगतेसूर्येवृश्चिके यदिचंद्रमाः ॥ धान्यानांसंग्रहंःकार्योमासयुग्मंतुरक्षयेत् ॥ २ ॥

अर्थ–महादेवजी कहते हैं कि मेषराशिमें सूर्यको प्राप्त भयेपर और तुलाराशिमें चंद्रमाको प्राप्त भयेपर वर्षा थोड़ी होती है और सब धान्योंकी महँगई होतीहै ॥ १ ॥ वृष राशिमें सूर्यको प्राप्त भयेपर और जो वृश्चिक राशिमें चंद्रमा हों तो धान्योंका संग्रह करना और दो महींना रक्षा करै तो ॥२॥

लाभस्तुद्विगुणोदेवितृतीयेहानिमादिशेत् ॥ मिथुनेतुरवौयत्र धनुर्द्धरगतःशशी ॥ ३ ॥ संग्रहेत्सर्वधान्यानिमासमेकंतुरक्षयेत् ॥ लाभोद्विगुणतोज्ञेयोद्विमासेहानिरुच्यते ॥ ४ ॥

अर्थ–हे देवि! दूना लाभ होता है. और तीन महींना जो राखै तो हानि दीखपड़ती है और जहां मिथुन राशिमें सूर्य होंवें तथा धनमें चंद्रमा होवें तो ॥ ३ ॥ संपूर्ण धान्यका संग्रह करै और एक महींना रक्षा करै तो दूना लाभ होताहै. और दो महींनामें हानि कही है ॥ ४ ॥

कर्कटेपद्मिनीनाथोमृगस्योपगतःशशी ॥ धान्यानांसंग्रहःका र्योमासषट्कंतुरक्षयेत् ॥ ५ ॥ लाभोद्विगुणतोज्ञेयोसप्तमेहानिर्जा यते ॥ सिंहराशौदिवानाथःकुंभस्थेचनिशापतिः ॥ ६ ॥

अर्थ–कर्क राशिमें सूर्य होवें और सिंहमें चंद्रमा होवें तो धान्योंका संग्रह करै और छे महींना रक्षा करै ॥ ५ ॥ तो दूना लाभ जानना. और सातवें महींनेमें हानि होती है. सिंहराशिमें सूर्य होवें और कुंभराशिमें चंद्रमा होवें तो ॥ ६ ॥

पंचमासंभवेत्यावत्सर्वधान्यानिसंग्रहेत् ॥ लाभेद्विगुणताज्ञेया षष्ठमासेनलाभदः ॥ ७ ॥ कन्याराशिगतेसूर्येद्वादशेचनिशा करः ॥ धान्यानांसंग्रहःकार्योमासंचत्वारिरक्षयेत् ॥ ८ ॥

अर्थ–जबतक पांच महींना होवें तबतक संपूर्ण धान्योंका संग्रह करै तो दूना लाभ जानना. और छे महींनामें लाभ नहीं होताहै ॥ ७ ॥ कन्याराशिमें सूर्य होवें और मीनराशिमें चंद्रमा होवें तो धान्योंका संग्रह करै. और चार महींना रक्षा करै ॥ ८ ॥

लाभोद्विगुणतोदेविपंचमेहानिर्मासके ॥ तुलराशिगतोभानुर्मे षस्थोयदिचंद्रमाः ॥ ९ ॥ मासत्रयेणदेवेशित्रिगुणोलाभउच्य ते ॥ वृश्चिकेर्केवृषेचंद्रःधान्यानांसंग्रहंचरेत् ॥ १० ॥

अर्थ–तो हे देवि! दूना लाभ होता है. और पांचवें महींनामें हानि होती है. और तुलाराशिमें सूर्य होंवें और जो मेषमें चंद्रमा होंवें ॥ ९ ॥ तो हे देवि! धान्योंका संग्रह करनेसे तीन महींनासे तिगुना लाभ कहा है. पुनः वृश्चिक राशिमें चंद्रमा होवें तो धान्योंका संग्रह करै ॥ १० ॥

द्वितीयेमासिदेवेशिद्विगुणोलाभउच्यते ॥ धनुर्द्धरगतेभानुश्चंद्र

मामन्मथेस्थितः ॥ ११ ॥ संग्रहेत्सर्वधान्यानिमासमेकंतुरक्षये
त् ॥ द्विगुणोजायतेलाभोद्वितीयेनहिलाभदः ॥ १२ ॥

अर्थ–तो हे देवेशि! दूसरे महींनामें दूना लाभ कहा है और धनराशिमें सूर्य होवें पुनः मकरमें चंद्रमा होवें ॥ ११ ॥ तो संपूर्ण धान्योंका संग्रह करै और एक महीना रक्षा करै. तिससे दूना लाभ होता है और दूसरे महीनामें लाभ नहीं होता ॥ १२ ॥

मृगस्थेसंक्रमेभानुःकर्कटस्थोनिशाकरः ॥ धान्यानांसंग्रहःका
र्योमासषट्कंतुरक्षययेत् ॥ १३ ॥ लाभस्तुत्रिगुणःप्रोक्तःसप्तमेमा
सिहानिदः ॥ घटेरवौहरौचंद्रःसर्वधान्यानिसंग्रहेत् ॥ १४ ॥

अर्थ–सूर्य जो सिंहमें स्थित हो और संक्रांति हो और कर्कमें चंद्रमा स्थित हो तो धान्योंका संग्रह करै और छे महींना रक्षा करै ॥ १३ ॥ तो तिगुना लाभ कहा है. और सतयें महींनामें हानि होती है. और कुंभराशिमें सूर्य हों तथा सिंहमें चंद्रमा हों तो संपूर्ण धान्योंका संग्रह करै ॥ १४ ॥

रक्षयेत्पंचमासंतुद्विगुणोलाभउच्यते॥मीनेचभास्करेदेविकन्या
यांचनिशाकरः ॥ १५ ॥ धान्यानांलाभोज्ञेयश्चतुर्थेमासिपार्व
ति ॥ पंचमेहानिदःप्रोक्तोमयाख्यातंसुरेश्वरि ॥ १६ ॥

अर्थ–और पांच महीना रक्षा करै तो दूना लाभ कहा है. हे देवि! मीनराशिमें सूर्य हों और कन्याराशिमें चंद्रमा हों॥ १५ ॥ तो हे पार्वति! धान्योंका संग्रह करनेपर चार महींनोंमें लाभके देनेवाली धान्य जानना और हे सुरेश्वरि! पांच महींनामें मैने हानि कहा है ॥ १६ ॥ इति रविचंद्रसंयोगसंक्रांतिफलं ॥

इतिरविचंद्रसंयोगसंक्रांतिफलं ॥ पौषमासस्यसंक्रांतौरविवारो
यदाभवेत् ॥ द्विगुणंधान्यमूल्यंस्यात्कथितंमुनिपुंगवैः ॥१७॥
शनौतुत्रिगुणंप्रोक्तंभौमेप्रोक्तंचतुर्गुणम् ॥ तुल्यंचबुधशुक्राभ्यां
मूल्यार्द्धंगुरुसोमयोः ॥ १८ ॥

अर्थ–पौष महीनाकी संक्रांतिके दिन जो रविवार होवे तो श्रेष्ठ मुनियोंने

धान्यका दूना मूल्य कहा है. ॥ १७ ॥ और जो पौष महींनाकी संक्रांतिके दिन शनैश्चरवार हो तो तिगुना मूल्य कहा है. और जो मंगलवार हो तो चौगुना मूल्य कहा है. और बुधवार तथा शुक्रवार हो तो समान मूल्य कहा है. और बृहस्पतिवार वा चंद्रवार हो तो आधा मूल्य कहा है ॥ १८ ॥

शनिभानुकुजवारेसंक्रांतिर्जायतेयदा ॥ महर्घमतुलंरौद्रंकुरुतेराज्यविग्रहम् ॥१९॥ वारेचार्कार्किभौमानांसंक्रांतेमृगकर्कटे ॥ महर्घंस्यात्तदादेविकथितंमुनिनायकैः ॥ २० ॥

अर्थ–शनैश्चरवार रविवार मंगलवार इन दिनोंमें जो संक्रांति होवे तो अत्यंत भयंकर संख्यारहित दिनोंतक महँगई होवै और राज्यमें विग्रह करै ॥ १९ ॥ हे देवि ! रवि शनैश्चर मंगल इन वारोंमें और सिंह कर्क इन राशियोंमें जो संक्रांति हो तो श्रेष्ठ मुनियोंने महँगई होवे ऐसा कहा है॥२०॥

तत्रग्रंथांतरेसंक्रांतिविचारफलं ॥ संक्रांतिरादित्यदिनेसमेतंकरोतियुद्धंनृपतेर्नराणां ॥ धान्यंमहर्घंभयरोगवातंप्रजाभवेद्दुःखितदैवहीना ॥ २१ ॥ सोमेयदासंक्रमतेचभानुर्महोत्सवंसर्वजनेषुनित्यं ॥ प्रशाम्यतेव्याधिभयंनराणांगृहेगृहेशोभनमंगलानि ॥ २२ ॥

अर्थ–तहां अन्य ग्रंथके मतसे संक्रांतिके विचारका फल कहते हैं– जो रविवार दिनसंयुक्त संक्रांति हो तो राजा तथा मनुष्योंका युद्ध करती है और धान्य महँगी होती है तथा रोग वा पवनका भय होताहै. और भाग्यहीन प्रजा दुःखी होतेहैं ॥ २१ ॥ जो सूर्यकी संक्रांति सोमवारके दिन हो तो हमेसा संपूर्ण मनुष्योंमें महा उत्सव होवे और मनुष्योंके व्याधिभय शांत होवे, और घर घरमें उत्तम मंगलके कार्य होवें ॥ २२ ॥

भौमेयदासंक्रमतेदिनेशस्तदामहर्घंकुरुतेपृथिव्यां ॥ लवणंतिलास्तैलरसोमहर्घंकर्पूररत्नादिमितानिचैव ॥ २३ ॥ बुधेयदासंक्रमतेदिनेशोमंदंचवस्त्रादिभवेच्चधान्यं ॥ सौख्यानिलोकेसमताकुलानांवृक्षाकुलाचेदतिमंदवृष्टिः ॥ २४ ॥

अर्थ–जो सूर्यकी संक्रांति मंगलके दिन हो तो पृथ्वीमें महँगई करै और

निमक, तिल, तेल, संपूर्ण रस महँगे होवें. और कपूर रत्नादिकभी महँगे होवें ॥ २३ ॥ जो सूर्यकी संक्रांति बुधके दिन हो तो वस्त्र तथा धान्य थोड़े होवें और समतासे आकुल लोकमें सुख होवे, और वृक्षोंसे आकुल मंद वर्षाभी होवे ॥ २४ ॥

गुरौयदासंक्रमतेचभानुःपृथ्वीतदापूजितसिद्धिवृद्धिः ॥ जपंतिविप्रावहवोऽग्निहोत्रंमहोत्सवंसर्वजनेषुवर्तते ॥२५॥ भृगोर्दिनेभास्करसंक्रमेणसर्वाणिवस्त्राणिभवेच्चधान्यं ॥ असौस्थ्यलोके भयव्याकुलंचरसास्तिलातैलमहर्घताच ॥ २६ ॥

अर्थ—जो सूर्यकी संक्रांति बृहस्पतिके दिन हो तो पृथ्वी सिद्धिकी वृद्धिसे पूजी जावे और बहुतसे ब्राह्मण अग्निहोत्र करते हैं और संपूर्ण मनुष्योंमें महाउत्सव होताहै ॥ २५ ॥ जो सूर्यकी संक्रांति शुक्रवारके दिन हो तो संपूर्ण प्रकारके वस्त्र और सर्वधान्य होतेहैं, और लोकमें अस्वस्थता होवे तथा भयसे व्याकुलता होवे और रस, तिल, तेल, इन्होंकी महँगई होवे ॥ २६ ॥

सौरौयदासंक्रमतेदिनेशःसर्वत्रदुर्भिक्षंभवेद्धरित्र्यां ॥ तिलंचतैलंरसरत्नकानिअर्घंचआधिक्यतरंचयाति ॥२७॥ इतिवारसंक्रमयोगफलं ॥

अथसंक्रांतिवृष्टिफलं ॥ मीनेमेषेचकन्यायांकर्कटेचततःशृणु॥ संक्रांतौयदिवर्षतितदह्निविजयीभवेत् ॥ २८ ॥

अर्थ—जो सूर्यकी संक्रांति शनैश्चरके दिन हो तो पृथ्वीमें सब जगे दुर्भिक्ष होताहै, और तिल, तेल, संपूर्ण रस तथा संपूर्ण रत्न, इन्होंका मूल्य अधिक होताहै ॥ २७ ॥ इस प्रकार वारके संक्रांतियोगका फल भया, इसके अनंतर संक्रांतिके वृष्टिफलको कहतेहैं. (हे देवि !) तिससे मीन, मेष, कन्या, कर्क, इन्होंकी संक्रांतिका फल सुनो. संक्रांतिमें जो वर्षा होवे तो तिस दिन विजय होवे ॥ २८ ॥

राज्यंचार्थद्वितीयेह्निसस्योत्पत्तिश्चसत्तम ॥ तृतीयेह्निसुभिक्षंस्याच्चतुर्थेचैवमिश्रितं ॥२९॥ चौराग्निपंचमेविद्युत्षष्ठेह्निविजयी भवेत् ॥ सप्तमेह्नियदादेविनवर्षतिकदाचन ॥ ३० ॥

अर्थ—और दूसरे दिन राज्य होवे तथा उत्तम खेती होवे और तीसरे दिन सुभिक्ष होवे तथा चौथे दिन सुभिक्ष दुर्भिक्ष दोनों होवें ॥ २९ ॥ और पांचवें दिन चौर, अग्नि, बिजुली, इन्होंका भय होवे. और छठें दिन विजय होवे. और हे देवि! सातवें दिन वर्षा न होवे ॥ ३० ॥

प्रजाव्याधितथारोगंसुभिक्षंकृषिणांतथा ॥ सर्वोपद्रवनाशायसप्त वह्निप्रवर्षकं ॥ ३१ ॥ सिंहेभिन्नेकुतोवृष्टिरथवृष्टिर्निरंतरं ॥ पंचा ननपदाभिन्नस्तदावृष्टिःप्रजायते ॥ ३२ ॥ इतिसंक्रांतिवृष्टिफलं ॥

अर्थ—जो हो तो प्रजावोंको व्याधि तथा रोग तथा खेती करनेवालोंको सुभिक्ष, इत्यादिक संपूर्ण उपद्रवोंके नाशके लिये सातवें दिन वर्षा होती है ॥ ३१ ॥ सिंहसे भिन्न वर्षा कहां, अथवा निरंत वर्षा होवे. और सिंहके चरणोंसे भिन्न हो तो वर्षा न हो ॥३२॥ इसप्रकार संक्रांतिवृष्टिका फल हुवा.

भूपतेर्विक्रमस्यादौकालश्चत्रिगुणोभवेत् ॥ पश्चाच्चपंचभिर्युक्तंस प्तभिर्भागमाहरेत ॥३३॥ सुभिक्षंभुज २ वेदैश्च ४ रसै ६ रेकेनमध्य मः ॥ दुर्भिक्षमग्निबाणेषुशून्येरौरवमादिशेत् ॥ ३४ ॥ इति श्रीरुद्रयामलेउमामहेश्वरसंवादेसंक्रांतिवृष्टिफलकथनोनामष ष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

अर्थ—प्रथम विक्रम राजाके संवत्सरको तिगुना करै. पीछे पांच जोड़दे जोड़ेपर सातको भाग देवे ॥ ३३ ॥ फिर २, ४, ६, बचैं तो सुभिक्ष होवे, और १ बचैं तो मध्यम फल है. तथा ३, ५, बचैं तो दुर्भिक्ष होवे. और शून्य हो तो भयंकर समय होवे ॥ ३४ ॥ इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकायुतमेघमालायां संक्रांतिवृष्टिफलकथनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥

पार्वत्युवाच ॥ उदयास्तेकिंफलंस्याद्ग्रहाणांब्रूहिशंकर ॥ तद हंश्रोतुमिच्छामिभगवन्स्त्वत्प्रसादतः ॥ १ ॥ ईश्वरउवाच ॥ अथवक्ष्याम्यहंदेविअस्तेद्वादशराशिजं ॥ चंद्रादीनांफलंसम्य क्शृणुयत्नेनपार्वति ॥ २ ॥

अर्थ—पार्वतीजी पूंछतीहैं कि हे शंकर! ग्रहोंके उदय तथा अस्तमें क्या फल होताहै सो आप कहो. हे भगवन् ! आपके प्रसादसे सो मैं सुननेकी

इच्छा करतीहूं ॥ १ ॥ ऐसी पार्वतीजीकी प्रश्न सुनके श्रीमहादेवजी कहते- हैं कि हे देवि ! इसके अनंतर बारह राशियोंके अस्तमें जो फल होताहै. वह मैं कहताहूं सो हे पार्वति ! अच्छी प्रकार चंद्रादिकोंका फल यत्नसे सुनो ॥२॥

यदामेषोदयश्चंद्रोतुषधान्यमहर्घता ॥ वृषेचतिलमाषानिदुर्लभं जायतेप्रिये ॥ ३ ॥ मिथुनस्योदितश्चंद्रोजायतेसर्वशोभनं ॥ अनावृष्टिश्चकर्कस्थेक्षयंसिंहेचतुष्पदम् ॥ ४ ॥

अर्थ—हे प्रिये ! जो चंद्रमा मेषमें उदय होवें तो तुष तथा धान्य इन्हों की महँगई होवे. और जो वृषमें चंद्रमा उदय होवे तो तिल, उर्द, ये दुर्लभ होतेहैं ॥ ३ ॥ जो मुथुनका चंद्रमा उदय होवे तो संपूर्ण प्रकारका शोभन होता है. और जो कर्कका चंद्रमा उदय होवे तो वर्षा न होवे. और जो सिंहका चंद्रमा उदय होवे तो चौपयोंका नाश होवे ॥ ४ ॥

कन्यायामुदितेचंद्रेपीडास्याद्गोद्विजन्मनां ॥ तुलायांतुलभांडा निमहर्घंजायतेध्रुवं ॥ ५ ॥ वृश्चिकेसर्वसस्यानांनिष्पत्तिर्जाय तेबहु ॥ धनेसुभिक्षंदेवेशिसर्वसस्यंचजायते ॥ ६ ॥

अर्थ—और कन्यामें चंद्रमाका उदय होनेपर गौ और ब्राह्मणोंको पीड़ा होतीहै. और तुलामें उदय होनेपर रुई तथा पात्रोंकी निश्चय महँगई होती है ॥ ५ ॥ और वृश्चिकमें चंद्रमाका उदय भयेपर संपूर्ण धान्योंकी उत्पत्ति बहुत होवे. और हे देवेशि ! धनका चंद्रमा उदय भयेपर सुभिक्ष तथा संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतेहैं ॥ ६ ॥

कुंभस्योदितेचंद्रेद्विदलंमाषेचनश्यति ॥ मीनेसुभिक्षंदेवेशिसर्व सस्यंप्रजायते ॥ ७ ॥ इतिचंद्रोदयफलं ॥ अथशुक्रोदयफल माह ॥ आश्विनेसर्वसंपत्तिःशुभंकार्तिकमार्गयोः ॥ पौषेचै वतथामाघेछत्रभंगःप्रजायते ॥ ८ ॥

अर्थ—और कुंभका चंद्रमा उदय हो तो दाल और उर्दोंका नाश होवे और हे देवेशि ! मीनका चंद्रमा उदय होनेपर सुभिक्ष होताहै. और संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतेहैं ॥ ७ ॥ इस प्रकार चंद्रमाके उदयका फल हुवा इसके अनंतर शुक्रके उदयका फल कहतेहैं. कुँवारमें जो शुक्रका उदय होवे तो

संपूर्ण प्रकारकी संपत्ती होवें. और कार्तिक अगहनमें शुभ होवे. और पूस महीना तथा माघमें देशोंका नाश होवे ॥ ८ ॥

अथवृष्टिःफाल्गुनेस्याच्चैत्रेचतरुसंपदः ॥ वैशाखेविग्रहोराज्ञांज्येष्ठेवृष्टिश्चजायते ॥ ९ ॥ आषाढेचोदितेशुक्रेजलंभवतिदुर्लभं ॥ श्रावणेपशुपीडास्याद्भाद्रेधान्यसमृद्धयः ॥१०॥ इतिशुक्रोदयफलं॥

अर्थ—इसके अनंतर फागुनमें जो शुक्रका उदय होवे तो वर्षा होवे और चैत्रमें वृक्षोंकी संपत्ती होवे और वैशाखमें राजावोंका विग्रह होवे तथा ज्येष्ठमें वर्षा होवे ॥ ९ ॥ और जो आषाढ़में शुक्रका उदय होवे तो जल दुर्लभ होताहै. और श्रावणमें पशुवोंकी पीड़ा होतीहै. और भादोंमे धान्योंकी समृद्धि होतीहै ॥ १० ॥

अथशुक्रास्तफलमाह॥मेषराशौयदादेविशुक्रस्यास्तंप्रजायते॥ रसंधान्यंक्षयंयातिवृषेपीडाचतुष्पदां ॥ ११ ॥ मिथुनेवर्षतेदेवो कर्कटेजनपीडनं ॥ सिंहेचजायतेचास्तंभृगुपुत्रस्ययदाप्रिये ॥१२॥

अर्थ—इसप्रकार शुक्रके उदयका फल हुवा, इसके अनंतर शुक्रके अस्तका फल कहतेहैं. हे देवि ! जो मेष राशिमें शुक्रका अस्त होवे तो रस, धान्य, नाशको प्राप्त होतेहैं. और चौपयोंको पीड़ा होतीहै ॥ ११ ॥ और मिथुनमें जो अस्त होवे तो मेघ वर्षा करैं और कर्कमें मनुष्योंको पीड़ा होवे और हे प्रिये ! जो शुक्र सिंहमें अस्त होवें ॥ १२ ॥

चतुष्पदंस्तथाधान्यंनश्यतेसस्यपीडनं ॥ कन्यायांचवणिक्पीडातुलायांराजपीडनं ॥ १३ ॥ दुर्भिक्षंवृश्चिकेचान्नंदुर्भिक्षंधनुषेप्रिये ॥ मकरेचगतेचादौधान्यानांचक्षयंतदा ॥ १४ ॥

अर्थ—तो चौपया तथा धान्यका नाश होताहै. और खेतीभी सूख जाती है. और जो कन्यामें अस्त हों तो वैश्योंको पीड़ा होवे. और तुलामें राजावोंको पीड़ा होवे ॥ १३ ॥ हे प्रिये ! वृश्चिकमें जो शुक्र अस्त होवें तो अन्नका दुर्भिक्ष होवे और धनमेंभी अस्त भयेपर दुर्भिक्ष होवे. और जो मकरमें अस्त हों तो धान्योंका नाश होताहै ॥ १४ ॥

कुंभेचास्तंयदायातिभृगुपुत्रःसुरेश्वरि॥ तदापीडाब्राह्मणानांम

याख्यातंतुपार्वति ॥ १५ ॥ मीनराशौभृगुपुत्रोयदाचास्तमुपागतः ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंवृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ १६ ॥ इति शुक्रास्तफलं ॥

अर्थ–हे सुरेश्वरि ! जो शुक्र कुंभमें अस्त होवें तो हे पार्वति ! ब्राह्मणोंको पीड़ा मैंने कही है ॥ १५ ॥ जो मीनराशिमें शुक्र अस्तको प्राप्त हों तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य तथा अधिक वर्षा होतीहै ॥ १६ ॥ इसप्रकार शुक्रके अस्तका फल भया.

अथ शनेरस्तफलमाह ॥ यदामेषगतोदेविशनिरस्तंचगच्छति॥ तदाचसर्वधान्यानांनिष्पत्तिर्जायतेध्रुवं ॥ १७ ॥ वृषेचास्तंगते सौरौविनश्यंतिचतुष्पदः ॥ मिथुनेमंदगेचास्तंतदासद्वर्षणंभवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ–इसके अनंतर शनैश्चरके अस्त भयेका फल कहते हैं ! हे देवि ! जो शनैश्चर मेषमें प्राप्त भयेपर अस्तको प्राप्त होवें तो संपूर्ण धान्योंकी निश्चय सिद्धि होवे ॥१७॥ जो शनैश्चर वृषमें अस्त होवें तो चौपयोंका नाश होवे, जो शनैश्चर मिथुनमें प्राप्त भयेपर अस्त होवें तो उत्तम वर्षा होवे ॥ १८ ॥

कर्केवणिग्जनेपीडातथाधान्यमहर्घता ॥ तदाचतुष्पदांपीडासिंहेचैतत्फलंभवेत् ॥ १९ ॥ कन्यायांधान्यदुर्भिक्षंप्रजापीडाप्रजायते ॥ तुलायांसस्यबाहुल्यंजनानांसौख्यदोभवेत् ॥ २० ॥

अर्थ–कर्कमें जो शनैश्चर अस्त हों तो वैश्यजनोंको पीड़ा होवे तथा धान्योंकी महँगई होवे और तबहीं चौपयोंकोभी पीड़ा होतीहै. इसी प्रकार सिंहराशिमें भी शनैश्चरके अस्त भयेपर फल होताहै ॥ १९ ॥ और कन्यामें जो शनैश्चर अस्त हों तो धान्योंकी दुर्भिक्षता होवे तथा प्रजावोंको पीड़ा होवे. और तुलामें धान्यकी अधिकई होवे. वा मनुष्योंको सुखके देनेवाला समय होताहै ॥ २० ॥

वृश्चिकेधान्यनाशंचजलंस्वल्पंप्रजायते ॥ धनुषेमंदगेचास्तमन्नं भवतिदुर्लभं ॥ २१ ॥

अर्थ-और वृश्चिकमें जो शनैश्चर अस्त हों तो धान्योंका नाश होवे, और वर्षा थोड़ी होवे और जो शनैश्चर धनमें प्राप्त भयेपर अस्त हों तो अन्न दुर्लभ होताहै ॥ २१ ॥

मकरेचपशोःपीडारसधान्यमहर्घता ॥ स्त्रीणांनराणांदेवेशिपीडाभवतिनिश्चितं ॥ २३ ॥ घटस्थेमंदगेचास्तंविनश्यंतिचतुष्पदः ॥ मीनेषुजायतेचास्तंशनिर्दुर्भिक्षकृत्भवेत् ॥ २४ ॥

अर्थ-हे देवेशि ! मकरमें जो शनैश्चर अस्त हों तो पशुवोंको पीड़ा होवे और रस धान्योंकी महँगई होवे और स्त्री मनुष्योंको निश्चय पीड़ा होवे॥२३॥ कुंभराशिमें शनैश्चरको अस्त भयेपर चौपयोंका विनाश होताहै. और जो शनैश्चर मीनमें अस्त हों तो दुर्भिक्ष करनेवाले होतेहैं ॥ २४ ॥

मघवावर्षतेदेविपूर्णसस्याचमेदिनी ॥ फलंतिसर्ववृक्षाणिमहोत्साहंप्रवर्तते ॥ २५ ॥ इतिशनेरस्तफलं ॥

अर्थ-तथा हे देवि ! मेघ वर्षा करतेहैं और पूर्ण धान्यवाली पृथ्वी होती है और संपूर्ण वृक्षोंमें फूल फरतेहैं. और महाउत्साह होताहै ॥ २५ ॥ इसप्रकार शनैश्चरके अस्तका फल हुवा ॥

आषाढमासेयदिशुक्लपक्षेसोमस्यपुत्रःउदयंकरोति ॥ अस्तंचशुक्रोयदियातिभाद्रेअन्नंसुवर्णस्यसमंकरोति ॥ २६ ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेउमा०ग्रहाणामुदयास्तफलकथनोनामसप्तमोऽध्यायः॥७॥

अर्थ-आषाढ़ महीनाके शुक्लपक्षमें जो बुध उदय करैं और जो भादों महीनामें शुक्र अस्त होवें तो अन्न सुवर्णके समान करैं॥२६॥ इति श्रीरुद्रयामले उमा० भा० ग्रहाणामुदयास्तफल कथनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

पार्वत्युवाच ॥ मासिमासिकथंदेवकीदृशंगर्भलक्षणं ॥ किंवातंविघ्नयुक्तंचकस्मिन्कालेनवर्षति ॥ १ ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविपरंगुह्यंपूर्वोक्तंनारदंप्रति ॥ कार्तिकादिषुमासेषुयादृशंदृष्टिलक्षणं ॥ २ ॥

अर्थ-पार्वतीजी पूंछतीहैं कि हे देव ! (हे शंकर !) महींना महींनामें कैसा होताहै. और गर्भका लक्षण कैसाहै. और विघ्नसे युक्त पवन कौन है.

और कौन कालमें वर्षा नहीं होतीहै ॥ १ ॥ ऐसा पार्वतीजीका प्रश्न सुनके महादेवजी कहतेहैं कि हे देवि ! कार्तिक आदि महींनोंमें जैसा वर्षाका लक्षण है सो मैंने नारदके प्रति पूर्व कहा है. सो वही परम गुह्य तुम सुनो ॥२॥

स्यात्कार्तिकेपुष्पवतीचमार्गेस्नानंचपौषेहितुषारवातं ॥ माघे हिनित्यंघनमंडितारसास्यात्फाल्गुनेचातियुवातथैव ॥ ३ ॥ पौषेकामातुराज्ञेयामाघेगर्भंसुसंदधेत् ॥ एवंरूपाभवेत्पृथ्वीफाल्गुने चफलान्विता ॥ ४ ॥

अर्थ—कार्तिक महींनामें पृथ्वी पुष्पवती होतीहै. और अगहनमें स्नान माना है. और पूषमें पाला पवनसे युक्त होतीहै. और माघमें नित्य मेघोंसे मंडित होतीहै. और फागुनमें अत्यंत युवा होतीहै ॥ ३ ॥ और पूषमें कामसे आतुर जानना, और माघमें गर्भको धारण करतीहै. इस प्रकारकी पृथ्वी फागुन महींनामें फलसे युक्त होतीहै ॥ ४ ॥

चैत्रेकिंचित्पयोयुक्तावृष्टिःस्वच्छतराभवेत् ॥ मासाष्टकंनिमित्ते नचतुष्टयमभीष्टदं ॥ ५ ॥ द्वादश्यांकार्तिकेमासिशुक्लायां रजनीयदा ॥ सकलानिर्मलाभातिपुष्पबंधंभवेत्तदा ॥ ६ ॥

अर्थ—और चैत्र महींनामें थोड़े जलसे युक्त होतीहै और वैशाखमें स्वच्छ होतीहै. इस तरह आठ महींनाके निमित्तसे चार महींना पृथ्वी अभीष्ट फलको देतीहै ॥ ५ ॥ कार्तिक शुक्लपक्षकी द्वादशीके दिन जो रात्रि होतीहै. उसमें संपूर्ण नक्षत्रादिक निर्मल शोभतेहैं, तब पृथ्वीका पुष्पबंध होताहै. अर्थात् प्रसववती होतीहै ॥ ६ ॥

कार्त्तिकेपौर्णमास्यांचेत्पूर्णाकृत्तिकयायुता ॥ सर्वसस्यसमुत्पत्तिर्निर्वाधाधरणीभवेत् ॥ ७ ॥ पुष्पबंधंप्रवक्ष्यामिशृणुतत्वे नभामिनि ॥ कार्तिक्यांपौर्णमास्यांतुनक्षत्रंकृत्तिकायदा ॥८॥

अर्थ—जो कार्तिक महीनेमें पूर्णमासी कृत्तिका नक्षत्रसे युक्त हो तो संपूर्ण धान्योंकी उत्पत्ति होवे. और वाधारहित पृथ्वी होवे ॥ ७ ॥ और जो कहीं तिसी दिन भरणी नक्षत्रसे युक्त पूर्णिमा हो तो वर्षा होवे और देशोंका नाश होवे तथा कहीं वर्षा नहीं भी होवे ॥ ८ ॥

[1]भरण्यर्क्षपूर्णिमायांयदिस्यात्तद्दिनेक्वचित् ॥ भवेद्वृष्टिश्छत्रभंगो कुत्रचित्स्यादवर्षणं ॥ ९ ॥ रोहिणीचयदाचस्यात्प्रत्यक्षंपूर्णिमादिने ॥ तदास्यात्सर्वसंतापोदुर्भिक्षमसमंजसम् ॥१०॥

अर्थ–और जो रोहिणी पूर्णिमाके दिन प्रत्यक्ष होवे तो सबोंको संताप तथा दुर्भिक्ष और असमंजस होवे ॥ ९ ॥

ईश्वरोवाच ॥ ॥ पुष्पबंधंसमादिष्टंचतुर्मासेषुवर्षणं ॥ सुभिक्षं क्षेममारोग्यंसस्यनिष्पत्तिरेवच ॥ ११ ॥ अथेंदुराननादेवियाम्यऋक्षेणसंयुता ॥ दीर्घरोगमनावृष्टिःखंडखंडेषुवर्षणं ॥ १२ ॥

अर्थ–म[2]हादेवजी कहतेहैं कि हे भामिनि ! (हे पार्वति !) पुष्पबंधको मैं कहताहूं सो निश्चयसे सुनो. जब कार्तिकी पूर्णिमाके दिन कृत्तिका नक्षत्र होताहै ॥ १० ॥ उस दिन जो पुष्पबंध कहा है वह चार महीनामें वर्षा करताहै और सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य, तथा धान्योंकी उत्पत्ति होतीहै ॥ ११ ॥ हे देवि ! इसके अनंतर पूर्णिमा भरणीसे जो संयुक्त हो तो बहुत रोग और अवर्षण तथा कहीं कहीं वर्षा होवे ॥ १२ ॥

संतापोविविधाकारउत्पाताविविधास्तथा ॥ राजानश्चतथादेवियुध्यंतेचपरस्परं ॥ १३ ॥ अथवारोहिणीऋक्षंवर्त्ततेतद्दिने प्रिये ॥ द्विपाच्चतुष्पदोदेवितथाभूतःप्रणश्यति ॥ १४ ॥

अर्थ–हे देवि ! पुनः अनेक प्रकारके संताप होवें तथा अनेक प्रकारके उत्पात होवें तथा राजालोग परस्पर युद्ध करैं ॥ १३ ॥ अथवा हे प्रिये ! तिस पूर्णिमाके दिन जो रोहिणी नक्षत्र हो तो हे देवि ! दो पैरवाले तथा चार पैरवाले जानवर तथा मनुष्य विनाशको प्राप्त होतेहैं ॥ १४ ॥

अथाश्विनीचदेवेशियदिस्यात्पूर्णिमादिने ॥मध्यमंजायतेसस्यं मेघोवर्षतिमध्यमं ॥ १५ ॥ कार्तिकेमार्गशीर्षेवासंक्रांतौयदिवर्षति ॥ मध्यमंजायतेसस्यंपौषेसुभिक्षवर्धनं ॥ १६ ॥

अर्थ–हे देवेशि ! इसके अनंतर जो पूर्णिमाके दिन अश्विनी होवे तो

[1] इस श्लोकका अर्थ ८० पृष्ठमें आठवें श्लोककी टीकामें देखो.

[2] इसका मूल ८० पृष्ठमें आठवां श्लोक है सो देखो. यहां प्रमादसे इधरका उधर होगया है.

मध्यम धान्य उत्पन्न होवे. और मेघ मध्यम वर्षा करैं ॥ १५ ॥ कार्तिक अथवा अगहनकी संक्रांतिके दिन जो मेघ वर्षै तो धान्य मध्यम होवे और पूषमें जो संक्रांतिके दिन मेघ वर्षै तो सुभिक्षकी वृद्धि होवे ॥ १६ ॥

दीपोत्सवदिनेदेविभौमार्कौनशुभप्रदौ ॥ संक्रांतिरर्घवृद्धिश्चशुभकर्मेणभौमगे ॥ १७ ॥ गर्भितेकार्तिकेमासिचतुर्मासेषु वर्षति ॥ सुभिक्षंजायतेतत्रसस्यसंपत्तिरुत्तमा ॥ १८ ॥

अर्थ–हे देवि ! दीपमालिकाके दिन मंगल और सूर्य ये शुभके देनेवाले नहीं हैं और हे देवि ! जो शुभ स्थानमें मंगलको प्राप्त भयेपर संक्रांति हो तो मूल्यकी वृद्धि होतीहै ॥ १७ ॥ मेघोंको कार्तिक महींनामें गर्भ भयेपर चार महींना वर्षा करतेहैं. और तहां सुभिक्ष होताहै और खेतीकी उत्पत्ति उत्तम होतीहै ॥ १८ ॥

सर्ववर्णास्तथामेघाजायंतेचपृथक्पृथक् ॥ कार्तिकादिषुमासेषु ईदृशंगर्भलक्षणं ॥ १९ ॥ कार्तिकादिषुमासेषुयदींदुग्रहणंभवेत् ॥ तारकापतनंचैवउल्कापातोयदाभवेत् ॥ २० ॥

अर्थ– तथा कार्तिक महींनामें सब वर्णके मेघ पृथक् २ होतेहैं. इसप्रकार गर्भका लक्षण है ॥ १९ ॥ कार्तिकआदि महींनोंमें जो चंद्रग्रहण होवे और तारोंका पड़ना होवे और जो उल्कापात होवे ॥ २० ॥

संग्रहेत्सर्वधान्यानिप्रयत्नेनतुमानवः ॥ मासेसुपंचमेदेविलाभस्तुद्विगुणोभवेत् ॥२१॥ इतिकार्तिकफलं॥मार्गादिपंचमासेषुआदिपक्षेतिथिक्षयः॥छत्रभंगश्चदुर्भिक्षंजायतेराजविग्रहः ॥२२॥

अर्थ–तो मनुष्य यत्नकरके संपूर्ण धान्योंको संग्रह करै तो हे देवि ! पांच महींनोंमें दूना लाभ होताहै॥२१॥ इसप्रकार कार्तिकका फल हुवा. अगहनसे आदि लेकर पांच महींनोंमें कृष्णपक्षमें जो तिथिका क्षय होवे तो देशोंका नाश और दुर्भिक्ष होवे तथा राजावोंका विग्रह होवे ॥ २२ ॥

मार्गशीर्षेमहेशानिसप्तमीनवमीदिने ॥ ईशानदिशमाश्रित्यदृश्यतेमेघमंडलं ॥ २३ ॥ स्तोकंवर्षतिपर्जन्योह्यथवावातमादिशेत् ॥ अमायामुत्तरेवातःसितायांयदिजायते ॥ २४ ॥

अर्थ–हे महेशानि ! (हे पार्वति !) अगहनमें सप्तमी अथवा नौमीके दिन ईशान दिशाका आश्रय लेकर मेघोंका मंडल जो दीख पड़े ॥ २३ ॥ तो मेघ थोड़ी वर्षा करैं अथवा पवन चलै. जो शुक्लपक्षकी अमावास्याको उत्तर दिशामें पवन चलै ॥ २४ ॥

मार्गशीर्षेह्यहोरात्रंतदास्नानमुदीरितं ॥ मार्गशीर्षेषुमासेषुन क्षत्रंपितृदैवतं ॥ २५ ॥ कृष्णपक्षेचतुर्थ्यांतुसविद्युन्मेघदर्शनं ॥ तदैवमृक्षमाषाढेजलपूर्णामहीभवेत् ॥ २६ ॥

अर्थ–तो अगहन महीनामें दिन तथा रात्रिके प्रति स्नान कहा है. अगहन आदि महीनोंमें जो नक्षत्र हैं उन्होंके पितृ देवताहैं ॥ २५ ॥ कृष्णपक्षमें चौथिके दिन बिजुलीसहित जो मेघके दर्शन हैं वह दर्शन आषाढ़में पृथ्वीको जलसे पूर्ण करते हैं ॥ २६ ॥

चतुर्थ्यांजलयोगेचसुभिक्षंचसमादिशेत् ॥ रात्रौदृष्टादिनेवृष्टिं दिनेदृष्टाभवेन्निशि ॥२७॥ यूनास्त्रीगर्भसंयोगोविद्युन्मेघस्तथै वच ॥ ऋक्षेत्वार्द्रेतथाष्टम्यांनवम्यांवायुदैवतं ॥ २८ ॥

अर्थ–और चौथिके दिन जलका योग भयेपर सुभिक्ष देखनेमें आताहै. सो जो बिजुलीसहित मेघ रात्रिमें दिखैं तो दिनमें वर्षा होतीहै. और दिनमें दिखैं तो रात्रिमें वर्षा होतीहै ॥ २७ ॥ जैसा स्त्रीपुरुषका गर्भसंयोग होताहै. तैसे बिजुलीमेघका गर्भसंयोग होताहै. आर्द्रा नक्षत्रके तथा अष्टमी वा नौमीके वायु देवताहैं ॥ २८ ॥

सर्वतोदिशिदृश्येतविद्युदभ्रेणसंयुता ॥ तदर्क्षेचैवमाषाढेजल पूर्णमहीतलम् ॥२९॥ सुभिक्षंसस्यनिष्पत्तिर्बहुधान्यंदिनेदिने ॥ चतुर्थीपंचमीषष्ठीआश्लेषाचमघातथा ॥ ३० ॥

अर्थ–संपूर्ण दिशोंमें मेघोंसे संयुत जो बिजुली दीख पड़े तो तिस नक्षत्रमें तथा आषाढ़में पृथ्वी जलसे पूर्ण होवे ॥ २९ ॥ और चौथि, पंचमी, छठि, आश्लेषा, तथा मघा, इन्होंमें जो बिजुलीसहित मेघ सब दिशोंमें दीखैं तो सुभिक्ष, खेतीकी उपज, और दिनदिनके प्रति बहुत धान्य होवे ॥ ३० ॥

यदातुपूर्वाफाल्गुन्यांत्रिरात्रंवर्षतेध्रुवं ॥ नवमीदशमीचैवएका

दश्यांयदाभवेत् ॥३१॥ चित्रास्वातिविशाखासुअमायांचप्रव र्षति ॥ सर्वऋक्षैस्तुसंयुक्तेसर्वंमारुतसंयुतम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–जो पूर्वाफाल्गुनी हो तो तीनरात्रि मेघ निश्चय वर्षा करैं, जो नौमी, दशमी, और एकादशी होवे ॥ ३१ ॥ और चित्रा, स्वाती, विशाखा, इन्होंमें वही पूर्वका योग दीख पड़ै तो अमावास्यामें मेघ वर्षा करैं, और संपूर्ण नक्षत्रोंमें पवन चलै ॥ ३२ ॥

वर्षतेतद्दिनेदेविनात्रकार्याविचारणा ॥ आषाढेशुक्लपक्षेतुवारु णर्क्षसुसंयुतं ॥ ३३ ॥ नवमीदशमीचैववर्षतेनात्रसंशयः ॥ द्वादश्यांचत्रयोदश्यांचतुर्दश्यांतथैवच ॥ ३४ ॥

अर्थ–हे देवि ! आषाढ़ शुक्लपक्षमें शतभिषा नक्षत्र हो तो तिस दिन वर्षा होतीहै, इसमें विचार नहीं करना ॥ ३३ ॥ नवमी, दशमी, जो हो तो वर्षा होतीहै, इसमें संदेह नहीं है. द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, इन्होंमे भी वर्षा होतीहै ॥ ३४ ॥

अमावास्यायांचविज्ञेयासर्वनक्षत्रजातयः ॥ यदिमारुतसंयुक्तो मेघोविद्युत्समन्वितः ॥३५॥ आषाढेशुक्लपक्षेतुवर्षतेनात्रसंश यः ॥ एवंदेविसमायोगेमेघानांगर्भलक्षणं ॥ ३६ ॥

अर्थ–इसीप्रकार अमावास्यामें संपूर्ण नक्षत्रोंको जानना. और जो पवन-संयुक्त तथा बिजुलीयुक्त जो मेघ हों तो ॥ ३५ ॥ आषाढ़के शुक्लपक्षमें वर्षा होवे, इसमें संशय नहीं है, हे देवि ! ऐसा योग भयेपर मेघोंका गर्भ लक्षण ॥ ३६ ॥

कार्त्तिक्यांमार्गशीर्षेचमयाख्यातंवरानने ॥३७॥ इतिमार्गशी र्षफलं ॥ ॥ अथपौषफलमाह ॥ पौषेभाद्रपदेमाघेशुक्लपक्षेति थिक्षयः ॥ यत्संख्येजायतेचाह्नितत्संख्योदेशविग्रहः ॥ ३८ ॥

अर्थ–हे वरानने ! कार्तिक तथा अगहनमें मैंने कहा. इसप्रकार अगहन-का फल भया ॥ ३७ ॥ इसके अनंतर पूषमहीनाका फल कहतेहैं. पूष, भादौं माघ, इन महीनोंमें शुक्लपक्षमें जो तिथिका क्षय होवे तो जितनी संख्याका पक्ष होवे उतने देशोमें विग्रह होवे ॥ ३८ ॥

पौषेशुक्लचतुर्थ्यांतुसविद्युद्दर्शमुत्तमं ॥ अभ्रच्छन्नंनभःश्रेष्ठंम
त्स्यमैंद्रधनुस्तथा ॥ ३९ ॥ अजपादंप्रयत्नेनअहोरात्रंनिरी
क्षयेत् ॥ परिवेषंगर्जितंवापतंतिजलविंदवः ॥ ४० ॥

अर्थ–पूष महींनामें शुक्लपक्षकी चौथके दिन मेघोंसे आच्छादित बिजुली-
का देखना उत्तम है, तथा मछली, इंद्रधनुष, इनसे युक्त आकाश श्रेष्ठ है॥३९॥
पूर्वाभाद्रपदको रात्रिदिन यत्नसे देखै, जो उसका मंडल दीख पड़ै तो मेघ
गर्जना करैं, और जलके बिंदु गिरैं ॥ ४० ॥

सर्वेषामेवचिह्नानांविद्युद्दर्शनमुत्तमं ॥ कृष्णपक्षेतथाषाढेमत्स्य
मैन्द्रधनुःशुभं ॥ ४१ ॥ विद्युन्मेघोधनुर्मत्स्यंयद्येकमपिनोभ
वेत् ॥ नक्षत्रंवर्षतेतत्रनकालंवर्षतेतदा ॥ ४२ ॥

अर्थ–संपूर्ण चिन्होंमें बिजुलीका देखना उत्तम है, कृष्णपक्षमें तथा आ-
षाढ़में मत्स्यका उदय होना, और इंद्रधनुषका उदय होना शुभ है ॥ ४१ ॥
बिजुलीयुक्त मेघ, इंद्रधनुष, मछली (इन चिन्होंमेंसे) जो एकभी न होवे
तहां वही नक्षत्र भर वर्षा होतीहै, और समयमें वर्षा नहीं होती ॥ ४२ ॥

अनेनज्ञायतेसर्वंवर्षणंचाप्यवर्षणं ॥ एतद्धैपरमंगुह्यंगर्भाधानस्य
लक्षणं ॥ ४३ ॥ विद्युत्संयोगजंचिह्नंनदेयंयस्यकस्यचित् ॥
पौषमासेशुक्लपक्षेशततारार्क्षगेपुनः ॥ ४४ ॥

अर्थ–इसीसे वर्षण तथा अवर्षण संपूर्ण जाना जाताहै. यह परमगुह्य
गर्भाधानका लक्षण है ॥ ४३ ॥ बिजुलीके संयोगसे उत्पन्न चिन्हको जिस
किसीको नहीं देना, पूष महींनाके शुक्लपक्षमें शततारा नक्षत्रसे युक्त जो
फिर बिजुलीका संयोग हो ॥ ४४ ॥

पंचमीअजपादेनअन्नंमारुतसंयुतं ॥ विद्युन्मेघसमायुक्ताग
र्भश्चैवप्रजायते ॥ ४५ ॥ आषाढेकृष्णपक्षेतुचतुर्थ्यांवर्षतेध्रुवं ॥
द्रोणसंख्याचविज्ञेयासप्तरात्रंतुवर्षणं ॥ ४६ ॥

अर्थ–और पूर्वभाद्रपदसे युक्त पंचमी हो तभी अन्न हवासे संयुत बिजु-
लीके मेघसे युक्त गर्भ उत्पन्न होताहै ॥ ४५ ॥ तभी आषाढ़के कृष्णपक्षमें

चौथके दिन मेघ निश्चय वर्षतेहैं, वह द्रोणसंख्यासे वर्षा जानना, और सात रात्रि वर्षा होतीहै ॥ ४६ ॥

धनुराशिस्थितेसूर्येमूलाद्येगर्भधारणं ॥ गर्भाद्येचध्रुवंवृष्टिः पंचविंशतिमेदिने ॥ ४७ ॥ दिनसंख्यावरारोहेवर्षतेनात्रसंशयः ॥ गोपितंसर्वशास्त्रेषुमयाचात्रप्रकाशितं ॥ ४८ ॥

अर्थ–धनराशिमें सूर्यको स्थित भयेपर मूलके आदिमें मेघका गर्भधारण होताहै, इससे गर्भकी आदिमें निश्चय वर्षा होतीहै. हे वरारोहे ! (हे पार्वति !) पचीसदिनकी संख्यासे मेघ वर्षतेहैं इसमें संशय नहीं है. यह वार्ता संपूर्ण शास्त्रोंमें गुप्त है. मैंने इस समय प्रकाशित किया है ॥४७॥४८॥

मूलंचआर्द्राकथितापूर्वाषाढंपुनर्वसुः ॥ उत्तराचतथापुष्यंश्रवणंपितृदैवतं ॥ ४९ ॥ धनिष्ठाचमघाचैवशतभःपूर्वाफाल्गुनी ॥ भाद्रपदोत्तराहस्तपूभाचदैवतंयमः ॥ ५० ॥

अर्थ–मूल, आर्द्रा, पूर्वाषाढा, पुनर्वसु, उत्तरा, पुष्य, श्रवण, ये पितृदैवत नक्षत्र हैं ॥४९॥ धनिष्ठा, मघा, शतभिषा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त और पूर्वाभाद्रपदाके यम देवता हैं ॥ ५० ॥

रेवतीत्वाष्ट्रभंदेविज्ञेयेपुंसोवरानने ॥ वर्षतेचचतुर्मासेसुभिक्षंसर्वदाभवेत् ॥ ५१ ॥ पौषमासेषुदेवेशिकृष्णपक्षस्यसप्तमी ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तायदामारुतसंयुता ॥ ५२ ॥

अर्थ–हे देवि ! हे वरानने ! रेवती, आर्द्रा इन्होंकी पुंस संज्ञा है, इन नक्षत्रोंके वर्षनेपर चार महींनोंमें हमेसा सुभिक्ष होताहै ॥ ५१ ॥ हे देवेशि ! (हे पार्वति !) पूस महींनामें जो कृष्णपक्षकी सप्तमी संपूर्ण लक्षणोंसे युक्त तथा हवासे संयुत हो तो ॥ ५२ ॥

आषाढेशुक्लपक्षेचवर्षतेनात्रसंशयः ॥ अभ्रैश्चवेष्टिताकाशेभूमिर्नादैश्चपूरिता ॥ ५३ ॥ अहोरात्रप्रयुक्तेनपंचम्यांवर्णस्तुजायते ॥ दिव्यगर्भस्तुविज्ञेयोसप्तमीशुक्लश्रावणे ॥ ५४ ॥

अर्थ–आषाढ़के शुक्लपक्षमें मेघ वर्षते हैं. इसमें संशय नहीं है. और मेघोंसे आच्छादित आकाश भयेपर पृथ्वी शब्दसे पूरित होवे ॥ ५३ ॥ इस

प्रकार रात्रिदिनके प्रेरणासे पांच वर्णवाले मेघ उत्पन्न होतेहैं. सो श्रावणशुक्ल सप्तमीके दिन दिव्यगर्भ जानना ॥ ५४ ॥

चित्रास्वातीविशाखाचपराह्णेजलसंयुतः ॥ ऐरावतोनाममेघो ह्यष्टमीनवमीयुतः ॥५५॥ वर्षतेनात्रसंदेहोसप्तरात्रंवरानने ॥ त्रयोदश्यांचतुर्दश्याममावस्यायांचसुंदरि ॥ ५६ ॥

अर्थ–चित्रा, स्वाती, विशाखा, (इन नक्षत्रोंमें) अष्टमी, नौमीसे युक्त ऐरावत नाम मेघ पराह्णमें जलसे संयुक्त भयेपर ॥ ५५ ॥ हे वरानने ! सात रात्रि वर्षा करताहै, इसमें संदेह नहीं है. हे सुंदरि ! त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावास्यामें ॥ ५६ ॥

वर्षतेचत्रिरात्रंहिविद्युन्मेघसमन्वितः ॥ श्रावणेपौर्णमास्यांतु श्रवणंचैववर्षति ॥ ५७ ॥ द्रोणसंख्याविजानीयात्प्राहैतद्भैरवःस्वयं ॥ पौषेपुष्यंपूर्णिमायांश्रावणेश्रवणंतथा ॥ ५८ ॥

अर्थ–बिजुली और मेघका संयोग होताहै वही मेघ तीन रात्रि वर्षता है. और श्रावणमें पौर्णमासीके दिन श्रवण वर्षताहै ॥ ५७ ॥ वह द्रोणसंख्यासे जानना, यह महादेवजीने आपही कहा है. और पूसमें पुष्यनक्षत्र पूर्णमासीके दिन वर्षताहै, जैसे श्रावणमें श्रवण ॥ ५८ ॥

पौर्णमास्यांप्रवर्षंतिसितेपक्षेनसंशयः ॥ पौषस्यशुक्लपक्षेतुशतभिषाऋक्षमेवच ॥ ५९ ॥ अभ्रच्छन्नंतथाकाशमष्टमारुतसंयुतम् ॥ श्रावणेकृष्णपक्षेतुपूर्वाभाद्रपदातथा ॥ ६० ॥

अर्थ–सो शुक्लपक्षमें पूर्णमासीके दिन मेघ वर्षते हैं, इसमें संशय नहीं है. और पूस महींनाके शुक्लपक्षमें शतभिषा नक्षत्रमें ॥ ५९ ॥ आठ पवनोंसे युत आकाश मेघोंसे आच्छादित होताहै. तैसे श्रावणके कृष्णपक्षमें पूर्वाभाद्रपद वैसेही होताहै ॥ ६० ॥

मध्याह्नेजलसंभूतंवर्षतेचदिनद्वयं ॥ पौषेषुपुष्यसंयुक्ताश्रावणेश्रवणंतथा ॥ ६१ ॥ श्रावणेपुष्यश्रवणाभ्यांपूर्वाह्णेजलमादिशेत् ॥ निष्पत्तिःसर्वधान्यानांप्रजाश्चनिरुपद्रवं ॥ ६२ ॥

अर्थ—कि मध्यान्हमें जलसे पूर्ण मेघ दो दिन वर्षतेहैं, जैसे पूसमें पुष्य-संयुक्त वर्षा होतीहै और श्रावणमें श्रवण नक्षत्रसंयुक्त तैसे ॥ ६१ ॥ जो श्रावण महींनामें पुष्यनक्षत्रयुक्त आमावास्याके दिन पूर्वदिनमें जल वर्षता दीख पड़ै तो संपूर्ण धान्योंकी उत्पत्ति होवे, और प्रजा उपद्रवरहित होवें ॥ ६२ ॥

पौषस्यशुक्लपक्षेषुसावधानेनचिंतयेत् ॥ सप्तमीरेवतीयुक्ताअष्टम्यांचाश्विनीयदा ॥ ६३ ॥ नवमीभरणीयुक्तावातंविद्युद्विनिर्दिशेत् ॥ हेमंतेजायतेवर्षासंदेहोनास्तिपार्वति ॥ ६४ ॥

अर्थ—और पूस महींनाके शुक्लपक्षमें सावधान होकर चिंतना करै कि सप्तमी रेवती नक्षत्रसे युक्त होवे और अष्टमीके दिन जो अश्विनी नक्षत्र होवे ॥ ६३ ॥ और नौमी भरणीसे युक्त हो तब पवन तथा बिजुली दीख पड़ै तो हे पार्वति! हेमंत ऋतुमें वर्षा होतीहै, इसमें संदेह नहीं है ॥ ६४ ॥

एकादश्यांतथादेविपूर्णमास्यांतथैवच ॥ आषाढस्यत्वमावस्यांप्रभूतंजलमादिशेत् ॥ ६५ ॥ विद्युत्स्फुरतितत्वेनगर्जिनीप्राणनाशिनी ॥ एवंविज्ञायतेतत्रमेघानांवृष्टिलक्षणं ॥ ६६ ॥

अर्थ—हे देवि ! एकादशी तथा पूर्णिमाको तिसी प्रकार (वर्षा होगी ऐसा जानना) और आषाढ़की अमावास्याको जो अधिक जल दीखपड़ै ॥ ॥ ६५ ॥ और जो बिजुली स्फुरित हो तो निश्चय करके उसका गर्जना प्राणोंका नाशक है. इसीप्रकार तहां मेघोंका वर्षाका लक्षण जानना ॥ ६६ ॥

एकादश्यांतथाज्ञेयामहिमाविद्युतोयुता ॥ सजलारोहिणीयोगंसदादृश्यंविचक्षणैः ॥६७॥ द्वितीयापूर्णिमाचैवसंयोगोविद्युतासह ॥ कालनिष्पत्तिरादिश्यंमेघाच्छन्नंतथाम्बरम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—तैसे एकादशीके दिनभी बिजुलीकी महिमा जानना, और हमेसा जलसहित रोहिणीको बुद्धिमानोंने देखना ॥ ६७ ॥ इसीप्रकार दुइज, व पूर्णिमाको बिजुलीके साथ संयोग हो तो समयकी सिद्धि अर्थात् समय अच्छा होवे, तथा आकाश मेघोंसे आच्छादित होवे ॥ ६८ ॥

प्रथमेश्रावणेमासिपक्षेद्रोणंसमादिशेत् ॥ गवांपयसोबाहुल्यं

वत्सानांचततोप्रिये ॥ ६९ ॥ पौषेमूलभरण्यंतेचंद्रचारेण साभ्रके ॥ आर्द्रादौचविशाखांतेवर्षाभवतिगरीयसी ॥ ७० ॥

अर्थ–यह प्रथम श्रावण महींनाके कृष्णपक्षमें देखै तो हे प्रिये ! गौवैं और दूधकी अधिकता होवे, और बछओंकीभी आधिक्यता होवे ॥ ६९ ॥ चंद्रमाके अतीचारयुक्त मेघको भयेपर पूस महींनामें मूल तथा भरणीके अंतमें और आर्द्रा विशाखाके अंतमें अधिक वर्षा होतीहै ॥ ७० ॥

पौषस्यपौर्णिमायांतुचंद्रमाविचरिष्यति ॥ उत्तरेदक्षिणेचैवयदाविद्युत्प्रदृश्यते ॥ ७१ ॥ अभ्रच्छन्नंतथाकाशंयदावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ आषाढस्यत्वमायांचजलयोगोभविष्यति ॥ ७२ ॥

अर्थ–पूस महींनेकी पौर्णमासीके दिन जो चंद्रमाका अतीचार हो और जो उत्तर दक्षिणमें बिजुली दीख पड़ै ॥ ७१ ॥ तथा आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तो वर्षा होतीहै. यहां पूर्वोक्त जो अमावसके दिन हो तो जलका योग होताहै ॥ ७२ ॥

पौषकृष्णनवम्यांतुस्वातियोगेजलंभवेत् ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंजायतेनात्रसंशयः ॥ ७३ ॥ अभ्राणियदिपूर्वंतुजलंवापतितंभुवि ॥ अभ्रच्छन्नेजलंस्वल्पंजलंचपरिवर्षति ॥ ७४ ॥

अर्थ–पूसकृष्ण नौमीके दिन जो स्वाती नक्षत्रके संयोगमें जल बर्सै तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य होवे. इसमें संशय नहीं है ॥ ७३ ॥ जो मेघ पूर्वकी तरफ् हों तो पृथ्वीमें जल गिरै, और आकाश जो मेघोंसे घेरा हो तो जल स्वल्प वर्षै ॥ ७४ ॥

पौषस्यकृष्णसप्तम्यामभ्रैर्वेवेष्टितंनभः ॥ अष्टम्यांशतभिषायुक्तंदिव्यंगर्भंप्रजायते ॥ ७५ ॥ श्रावणेशुक्लपक्षेतुस्वातीऋक्षेणसप्तमी ॥ ध्रुवंवर्षतिपर्जन्यमेतत्सर्वंवरानने ॥ ७६ ॥

अर्थ–और पूसकी कृष्णपक्षकी सप्तमीके दिन इसीप्रकार आकाश आच्छादित हो और अष्टमीके दिन शतभिषा नक्षत्रसे युक्त (मेघोंका) दिव्य गर्भ उत्पन्न होताहै ॥ ७५ ॥ और हे वरानने ! श्रावण महींनाके शुक्लपक्षमें स्वाती नक्षत्रसे युक्त सप्तमीके दिन मेघ निश्चय वर्षतेहैं. यह सत्य है ॥ ७६ ॥

अष्टमीनवमीचैवदशमीचप्रवर्षति ॥ एवंनक्षत्रसंयोगेश्रावणे
वृष्टिसंभवः ॥ ७७ ॥ त्रयोदश्यांचतुर्दश्याममायांचैवसुंदरि
गर्ज्जितेचत्रिरात्रेणविद्युन्मेघसमन्वितं ॥ ७८ ॥

अर्थ—और अष्टमी, नौमी, दशमी, इन तिथियोंमेंभी (स्वाती नक्षत्रके संयोगसे) वर्षा होतीहै. इसी प्रकार नक्षत्रोंका संयोग भयेपर श्रावण महींनामें वर्षा होतीहै ॥ ७७ ॥ हे सुंदरि ! त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस, इन तिथियोंमें बिजुली मेघसे युक्त तीन रात्रिके गर्जनेसे वर्षा होतीहै ॥७८॥

श्रावणेपौर्णमास्यांतुश्रवणेषुचवर्षति ॥ द्रोणसंख्याभवेन्मेघः
सुभिक्षंजायतेतदा ॥ ७९ ॥ यदाविद्युदमायांचदर्शनंवाहि
मस्यच ॥ अभ्रच्छन्नंनभोवापिजलंवायदिजायते ॥ ८० ॥

अर्थ—और श्रावणमें पौर्णमासीके दिन और श्रवणमें वर्षा होतीहै. और जो मेघोंकी द्रोणसंख्या हो तो सुभिक्ष होताहै ॥ ७९ ॥ जो श्रावणमें अमावास्याके दिन बिजुलीका दर्शन होवे अथवा हिम (पाला) दीखपड़ै अथवा आकाश मेघोंसे आच्छादित हो अथवा जो जल होवे तो ॥ ८० ॥

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांस्वातीयोगेजलंभवेत् ॥ निष्पत्तिःसर्वस
स्यानांप्रजाश्चनिरुपद्रवाः ॥ ८१ ॥ पौषस्यकृष्णसप्तम्यांनिरभ्रं
चेन्नभःस्थलं ॥ सहिमंजायतेयोगमीशानेविद्युतोभवत् ॥८२॥

अर्थ—श्रावणमें शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन स्वाती नक्षत्रके संयोगमें जल होताहै. और संपूर्ण धान्योंकी उत्पत्ति तथा प्रजा उपद्रवरहित होतेहैं ॥८१॥ पूस महींनाके कृष्णपक्षमें जो आकाश मेघोंसे रहित हो तो सहिम योग होताहै. और ईशानमें विद्युतयोग होताहै ॥ ८२ ॥

श्रावणीपौर्णिमायांतुश्रवणेजलसंभवः ॥ सुभिक्षंचसमादृश्यं
तस्मिन्वर्षेनसंशयः ॥ ८३ ॥ अमावस्यायांपौषस्यशनिसूर्यम
हीसुताः ॥ संग्रहेत्सर्वधान्यानिलाभस्तुद्धिगुणोभवेत् ॥ ८४ ॥

अर्थ—श्रावणी पौर्णमासीके दिन श्रवणनक्षत्रमें जो जल होवे तो तिस वर्षमें सुभिक्ष देखनेमें आवै. इसमें संशय नहीं है ॥ ८३ ॥ पूसकी अमावा-

स्याके दिन शनैश्चर, सूर्य, मंगल (ये सब एकस्थानमें हों) तो संपूर्ण धान्योंको संग्रह करै तो दूना लाभ होताहै ॥ ८४ ॥

शुष्यतेसागरजलंसनदीससरोवरं ॥ छत्रभंगश्चभवतिजनानां मरणंभवेत् ॥ ८५ ॥ पौषस्यपौर्णमास्यांतुयदेंदुग्रहणंभवेत् ॥ मौक्तिकंविद्रुमंशंखंकुसुमंकुंकुमंतथा ॥ ८६ ॥

अर्थ–तबहीं नदी तालावोंके साथ समुद्रका जल सूखताहै. और देशोंका नाश होताहै. और मनुष्योंका मरण होताहै ॥ ८५ ॥ पूसमें पौर्णमासीके दिन जो चंद्रग्रहण होवे तो मोती, विद्रुम, शंख, कुसुम, तथा कुंकुम, ॥ ८६ ॥

संग्रहेत्त्रीणिमासानिद्विगुणंलाभमादिशेत्॥पौषस्यलक्षणंदेवि सर्वंतेकथितंमया ॥८७॥ इतिपौषफलं ॥ वर्षतेमाघमासस्यसंक्रांतिर्जायतेयदा ॥बहुक्षीरघृतागावोबहुसस्यावसुंधरा॥८८॥

अर्थ–इन्होंको तीन महीना संग्रह करै तो दूना लाभ होताहै. हे देवि ! (इसप्रकार) पूस महींनाका संपूर्ण लक्षण हमने तुमको कहा ॥ ८७ ॥ इति पौषफलं॥जो माघमासकी संक्राति वर्षा करै तो बहुत घी दूधवाली गौवैं और बहुत धान्यवाली पृथ्वी होतीहै ॥ ८८ ॥

माघादिदिवसेवारोबुधोभवतिचेत्तदा ॥ मासत्रयंमहर्घंस्यात्तथावृष्टिर्विनश्यति॥ ८९॥ बुधस्यप्रथमोवारोयदिमाघस्यजायते ॥ ततःप्रभृतिभिर्मासैर्महर्घंराजविग्रहं ॥ ९० ॥

अर्थ–माघके प्रथम दिनमें जो बुधवार हो तो तीन महींना महँगई होवे, अथवा वर्षाका विनाश हो अर्थात् वर्षा न होवे ॥ ८९ ॥ जो माघ महींनामें बुधका प्रथम वार होवे तो तहां तिस माघ महींनासे लेकर संपूर्ण महींनोंमें महँगई होवे और राजावोंमें विग्रह होवे ॥ ९० ॥

प्रतिपत्सर्वमासेषुबुधोदुर्भिक्षकारकः ॥ ज्येष्ठमासितथानूनंपरवर्षविनाशकृत् ॥ ९१ ॥ नमाघेपतितंशीतंपौषेनैवाभिजायते ज्येष्ठमासितथानूनंपरवर्षविनाशकृत् ॥ ९२ ॥

अर्थ–और संपूर्ण महींनोंमें प्रतिपदायुक्त बुध दुर्भिक्ष करनेवाला है. तथा

ज्येष्ठ महींनामें निश्चय प्रतिपदायुक्त बुध दूसरे ग्रहोंके योगसे उत्पन्न वर्षाको विनाश करताहै ॥ ९१ ॥ और न माघमें शीत होवे न पौषमें होवे तथा ज्येष्ठ महींनामें निश्चय करके दूसरे ग्रहोंके योगसे उत्पन्न वर्षाका विनाश करताहै ॥ ९२ ॥

नमाघेपतितंशीतंचैत्रेनैऋतिवृष्टिकृत् ॥ नार्द्रायांपतितंतोयंदुष्टकालस्तदाभवेत् ॥ ९३ ॥ माघशुक्लयमाश्विन्यांमेघयुक्सस्यंजायते ॥ अथवामेघहीनस्यसस्यानांधारयेत्सुधीः ॥९४॥

अर्थ–पुनः माघमें शीत नहीं पड़ता और चैत्रमें नैऋत्यकोणमें वर्षा करताहै. और जो आर्द्रानक्षत्रमें जल न गिरै तो दुष्ट समय होताहै ॥ ९३ ॥ माघशुक्लपक्षमें भरणी अश्विनी नक्षत्रमें मेघोंसे युक्त खेती होतीहै. अथवा मेघोंसे हीन खेतियोंका ज्ञानवान् धारण करै ॥ ९४ ॥

पौषेभाद्रपदेमाघेशुक्लपक्षेतिथिक्षयः ॥ यत्संख्येजायतेचाह्नि तत्संख्यंदेशविग्रहं ॥ ९५ ॥ पंचार्काःपंचभौमाश्चपंचसूर्यसुतास्तथा ॥ एकस्मिन्नपिमासेषुतदारौरवमादिशेत् ॥ ९६ ॥

अर्थ–पूस, भादों, माघ, इन महींनोंके शुक्लपक्षमें जो तिथिका क्षय होवे तो जितनी संख्या दिनोंकी होवे उतनी संख्या देशोंमे विग्रह होवे ॥९५॥ एकही महीनामें पांच रविवार और पांच मंगलवार तथा पांच शनैश्चर वार हों तो भयंकर समय देखनेमें आवे ॥ ९६ ॥

गुरुचंद्रौविहायान्येवाराःपंचभवंतिचेत् ॥ एकस्मिन्नपिमासेन दुर्भिक्षंराजविग्रहं ॥ ९७ ॥ पूर्वंअश्विन्यादिभिर्येचउक्तंतस्यफलंशृणु ॥ भ्रामयंतिकुलालइवचक्रेकृत्वातुमेदिनीम् ॥ ९८ ॥

अर्थ–और जो बृहस्पति, सोमवारको छोंड़के और वार पांच होंवें तो एकही महींनासे दुर्भिक्ष तथा राजावोंका विग्रह होवे ॥ ९७ ॥ पूर्व जे अश्विन्यादिक नक्षत्र कहेहैं तिन्होंका फल सुनो. वे नक्षत्र पृथ्वीको चक्रमें करके कुलाल अर्थात् कुह्मारकी नाहीं भ्रमावतेहैं ॥ ९८ ॥

माघफाल्गुनचैत्रेषुवैशाखज्येष्ठमासयोः ॥ स्वातियोगंतदाविद्याद्यदासूर्येणसंयुता ॥ ९९ ॥ पराह्नेजलसंपूर्णंवर्षतेघटिकाद्ध

यं ॥ दशम्यांकृत्तिकायोगोस्वातियोगेनसंशयः ॥ १०० ॥

अर्थ–माघ, फागुन, चैत्र, और वैशाख तथा ज्येष्ठमें स्वातीयोग तब जानना जब स्वाती सूर्यकी संक्रांतिसे युक्त हो ॥ ९९ ॥ और दशमीके दिन कृत्तिका नक्षत्रका योग स्वाती नक्षत्रके योगसे संयुत हो तो दशमीके दिन पीछले पहर जलसे पूर्ण मेघ दो घड़ी वर्षा करैं ॥ १०० ॥

अष्टमीनवमीदेविवर्षतेचसमुच्चयं ॥ अमावास्यायांमहेशानि वारिदोयदिदृश्यते ॥ १ ॥ पौर्णमास्यांभाद्रपदेपूर्णमेघःप्रवर्षति ॥ माघस्यप्रतिपदिदेविसंवातेनविवर्जितः ॥ २ ॥ यदाभवेत्तदाग्राह्यंतैलंसौगंधसंयुतं ॥ मासेतृतीयगेदेविपुष्कलंलाभकांक्षिभिः ॥ ३ ॥ द्वितीयायांघनैर्युक्तंमेघच्छन्नंनभस्थलं ॥ सविद्युज्जायतेयत्रतत्रधान्यमहर्घता ॥ ४ ॥

अर्थ–हे देवि ! हे महेशानि ! अमावसके दिन जो मेघ दीख पड़ैं तो अष्टमी नौमीको बहुत जल वर्षताहै ॥ १ ॥ और भादों महींनामें पौर्णमासीके दिन जलसे पूर्ण मेघ वर्षतेहैं. और हे देवि ! पवनसे वर्जित मेघ माघमासमें प्रतिपदाके दिन जो हों तो अधिक लाभकी इच्छावालोंने सुगंधयुक्त तेलको खरीदना, तीन मास बीतनेपर (अधिक लाभ होता है) ॥ २ ॥ ३ ॥ दुइजके दिन मेघोंसे युक्त आकाश मेघोंसे आच्छादित होवे और जहां मेघोंसहित होवे तहां धान्यकी महँगई होवे ॥ ४ ॥

तृतीयामेघसंयुक्तामेघोगर्जतिनिर्जलः ॥ गोधूमांस्तत्रगृह्णीयाद्यवांश्चैवविशेषतः ॥ ५ ॥ मासानांत्रितयस्यांतेत्रिगुणोलाभजायते ॥ सर्वेषुचैवमासेषुऋद्धिवृद्धिसुभिक्षकृत् ॥ ६ ॥

अर्थ–और घेरे मेघोंसे युक्त तीजको जलसे रहित मेघ जो गजैं तो तहां गोहूं खरीदना और यवोंको विशेष करके खरीदना ॥ ५ ॥ तीन महीनोंके अंतमें तिगुना लाभ होताहै. और संपूर्ण मासोंमें (मेघयुक्त तीज) ऋद्धि, वृद्धि तथा सुभिक्षको करतीहै ॥ ६ ॥

चतुर्थीमेघसंयुक्तायदाचेंदुविवर्जिता ॥ नारकानिचपात्राणि महर्घाणिभवंतिहि ॥ ७ ॥ पंचमीमेघसंयुक्ताथवाचेंदुविव

र्जिता ॥ उदक्पवनसंयुक्ताभाद्रेमासिनवर्षति ॥ ८ ॥

अर्थ–जो चौथि मेघोंसे युक्त हो अर्थात् मेघ चौथके दिन घेरे हों और चंद्रमासे रहित हो तो मनुष्योंके पात्र महँगे होतेहैं ॥ ७ ॥ पंचमी मेघोंसे युक्त हो अथवा चंद्रमासे रहित हो और जल पवनसे संयुक्त हो तो भादों महींनामें वर्षा नहीं होती ॥ ८ ॥

षष्ठीतुमेघसंयुक्ताजलेनैवविवर्जिता ॥ कार्पासंसंग्रहेत्तत्रला भोभवतिपुष्कलः ॥ ९ ॥ सप्तमीसोमवारेणयदामेघैःसुसंयु ता ॥ घोरधारास्तथामेघाराज्ञोपद्रवमेवच ॥ ११० ॥

अर्थ–और छठि मेघोंसे युक्त हो अर्थात् मेघ छठिके दिन घेरे हों और जल वर्षै तो कपास संग्रह करनेसे अर्थात् खरीदनेसे अधिक लाभ होताहै ॥ ९ ॥ जो सप्तमी सोमवारके दिन मेघ घेरे हों तो मेघ मोटी धारसे वर्षा करतेहैं. और राजावोंका उपद्रव होताहै ॥ ११० ॥

सप्तम्यांसोमवारेणमाघेपक्षेसितेयदा ॥ दुर्भिक्षंजायतेरौद्रंविग्र होपिचभूभुजां ॥ ११ ॥ अष्टम्यांयदिपश्यंतिआदित्यमुदयं गतं ॥ नवर्षतेतदामेघोश्रावणेचवरानने ॥ १२ ॥

अर्थ–और माघ महींनाके शुक्लपक्षमें सप्तमी सोमवारके दिन जो (मेघ घेरैं) तो भयंकर दुर्भिक्ष होवे. और राजावोंका विग्रह होवे ॥ ११ ॥ हे वरानने ! जो अष्टमीके दिन उदय हुये सूर्यको देखै तो श्रावणमें मेघ नहीं वर्षतेहैं ॥ १२ ॥

यदाचकुरुतेदेविनवम्यांचंद्रमंडलं ॥ आषाढेपूर्ववृष्टिःस्यात्धा न्यंलोकेसमर्घता ॥ १३ ॥ माघस्यशुक्लपक्षेतुसप्तम्यादिदिन त्रयं ॥ गर्जितेवर्षतेदेवितदाषाढेसुवृष्टिकृत् ॥ १४ ॥

अर्थ–हे देवि ! नौमीके दिन चंद्रमाका मंडल जो होवे तो आषाढ़में प्रथम वर्षा होवे. और लोकमें धान्यकी महँगई होवे ॥ १३ ॥ हे देवि ! माघ महींनाके शुक्लपक्षमें सप्तमीसे आदि लेकर जो तीन दिन मेघ गजैं अथवा वर्षा करैं तो (वह बर्षना अथवा गर्जना) आषाढ़में सुभिक्ष करताहै ॥१४॥

माघस्यशुक्लसप्तम्यांसावधानैरहर्निशं ॥ वीक्षणीयंप्रयत्नेनका

लनिश्चयकारणं ॥ १५ ॥ अहोरात्रंभवेत्साभ्रंवारुणंविद्युता
सह ॥ ऐंद्रोवातोथविज्ञेयोशर्वरीषुदिवापिवा ॥ १६ ॥

अर्थ–माघ महींनाके शुक्लपक्षमेंकी सप्तमीके दिन समयके निश्चय करनेके लिये सावधान होकर रात्रिदिन यत्न करके देखै ॥ १५ ॥ जो रात्रिदिन मेघोंसे घेरा हो और शतभिषा नक्षत्रसे युक्त बिजुली चमके तो रात्रि वा दिनमें इंद्रपवन जानना ॥ १६ ॥

महासुभिक्षकंदेवितद्वर्षेनिरुपद्रवं ॥ भवंतिचेतिचिह्नानिमया
ख्यातंशृणुप्रिये ॥ १७ ॥ शुक्लपक्षस्यसप्तम्यांयन्माघेवर्षतेघ
नः ॥ दुर्भिक्षंचयदापश्येत्तद्वर्षंतुतदाशुभं ॥ १८ ॥

अर्थ–हे देवि ! तिस वर्षमें उपद्रवरहित महासुभिक्ष होताहै. हे प्रिये ! ये चिन्ह हमने कहा. और जो कहतेहैं सो सुनो. ॥ १७ ॥ जो माघ महींनामें शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन मेघ वर्षा करैं. तो तिस वर्षमें सुभिक्ष और शुभ देखना ॥ १८ ॥

माघस्यशुक्लसप्तम्यांमेघैश्छन्नंयदांबरं ॥ तत्प्रदेशेषुवृष्टिःस्यात्सु
भिक्षंतत्रनिर्दिशेत् ॥ १९ ॥ पौर्णिमायाममायांचसलग्नोता
रकाक्षयः ॥ महर्घंतत्रपूर्वार्द्धमासमध्येपिजायते ॥ २० ॥

अर्थ–जो माघ महींनाके शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तो तिस देशमें वृद्धि होवे. और तहां सुभिक्ष देखनेमें आवे ॥ ॥ १९ ॥ हे देवेशि ! (हे पार्वति !) पौर्णिमा अथवा अमावास्याको लग्नसहित जो तारोंका क्षय होवे तो महींनाके बीचमें महँगई होवे ॥ २० ॥

सप्तम्यांस्वातियोगेषुहिमंपततिचेद्यदि ॥ अंधकारेमाघमासेवा
युर्वातिचवेगतः ॥ २१ ॥ सप्तम्यांस्वातियोगेयदिपततिहिमो
माघमासेंधकारेवायुर्वाचंडवेगः सजलजलधरोवर्षतेचैवनूनं ॥
विद्युन्मालाकुलंवातदपिचभवेन्नष्टचंद्रार्कतारंविज्ञेयावैविशेषादु
दितजनपदैःसर्वसस्यैरुपेतं ॥ २२ ॥

अर्थ–माघ कृष्ण सप्तमीके दिन स्वाती नक्षत्रके योगमें जो पाला परै तो

माघ महींनामें अँधेरे पक्षमें वेगसे पवन चलताहै ॥ २१ ॥ और जो माघ महींनाके अँधेरे पक्षमें सप्तमीके दिन स्वाती नक्षत्रके योगमें पाला परै और बड़े बेगसे वायु चलै तो जलयुक्त मेघ निश्चय माघ महींनामें वर्षा करते हैं. अथवा बिजुलीकी मालासे व्याप्त और तहांहीं चंद्रमा, सूर्य, तारा, इन्होंका पतन होवे तो संपूर्ण धान्योंसे युक्त विशेषता करके समयको मनुष्योंने जानना. ॥ २२ ॥

माघफाल्गुनमासेषुचैत्रवैशाखयोस्तथा ॥ स्वातियोगंविजानीयादाषाढेचविशेषतः ॥ २३ ॥ आषाढस्यसिताष्टम्यांघनच्छन्नोदयेशशी ॥ तथासुवर्षतेमेघःसर्वसस्यंभवंतिहि ॥ २४ ॥

अर्थ—माघ, फाल्गुन, महींनामें तथा चैत्र वैशाखमें स्वातीयोगको जानना. और आषाढ़में विशेषताकरके स्वातीयोगको जानना. ॥ २३ ॥ और आषाढ़की शुक्लपक्षकी अष्टमीके दिन मेघोंसे आच्छादित चंद्रमाको उदय भयेपर मेघ वर्षा करतेहैं. तथा संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतेहैं ॥ २४ ॥

माघस्यनवमीकृष्णमूलर्क्षेणचसंयुता ॥ विद्युन्मेघधनुर्मत्स्यमभ्रैर्वावेष्टितंनभः ॥२५॥ मासेभाद्रपदेदेविवर्षतेनवमीदिने ॥ द्रोणसंख्योभवेन्मेघोमयाख्यातंशृणुप्रिये ॥ २६ ॥

अर्थ—मूल नक्षत्रसे युक्त माघ महींनामें कृष्णपक्षकी नौमीके दिन आकाश बिजुली, मेघ, धनुष, मछली, इन चिन्होंसे युक्त हो अथवा मेघोंसे घेरा हो ॥ २५ ॥ तो हे देवि ! भादों महींनामें नौमीके दिन वर्षा होवे. हे प्रिये! सो द्रोणसंख्यासे मेघ होतेहैं यह मैं कहता हूं सो तुम सुनो. ॥ २६ ॥

माघस्यनवमीकृष्णादशम्येकादशीतथा ॥ सप्तमीमाघमासस्याथवाकृष्णात्रयोदशी ॥ २७ ॥ चतुर्दश्यांतथादेविपूर्वस्यांदिशिसंस्थितं ॥ बहूदककरामेघात्वाषाढेसप्तरात्रकं ॥ २८ ॥

अर्थ—कि माघ महींनाके कृष्णपक्षकी नौमी, दशमी तथा एकादशी वा माघ महींनाकी सप्तमी अथवा कृष्णपक्षकी त्रयोदशी ॥ २७ ॥ तथा चतुर्दशी, इन दिनोंमें पूर्व दिशामें स्थित (मेघोंको देखै) तो बहुत जलके वर्षनेवाले मेघ आषाढ़में सात रात्रि वर्षा करतेहैं ॥ २८ ॥

अमावास्यातिथौधिष्ण्यंयदारेवतिकार्तिके ॥ नूनंघनान्वितेदेविवर्षातत्रभविष्यति ॥ २९ ॥ अथवापंचवर्णानांदिव्यगर्भसमुद्भवः ॥ तदाभाद्रपदेमासिपौर्णिमायांप्रवर्षति ॥ ३० ॥

अर्थ-और जो रेवतीनक्षत्र अमावास्याके दिन हो तो हे देवि ! मेघोंसे युक्त कार्तिकमें निश्चय तहां वर्षा होतीहै ॥ २९ ॥ अथवा पांच वर्णवाले मेघोंकी दिव्य गर्भकी उत्पत्ति होतीहै. तब भादों महींनामें पौर्णिमाके दिन वर्षा होतीहै ॥ ३० ॥

माघस्यकथितंदेवियादृशंगर्भलक्षणं ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिशृणुभामिनियत्नतः॥ ३१ ॥ इति माघफलं ॥ शुक्रास्तंफाल्गुनेमासिएकादश्यांचजायते ॥ तदादुर्भिक्षामादेश्यंषण्मासेविविधामता ॥३२॥

अर्थ-हे देवि ! माघ महींनाका जैसा (मेघोंका) गर्भका लक्षण है सो हमने कहा. हे भामिनि ! इसके उपरांत और भी कहताहूं सो तुम यत्नसे सुनो. ॥ ३१ ॥ इति माघफलं ॥ जो फाल्गुन महींनामें एकादशीके दिन शुक्रास्त होवे तो छः महींनोंमें अनेक प्रकारका दुर्भिक्ष देखनेमें आताहै॥३२

फाल्गुनेसौरिसंक्रांतौयदावर्षतिनीरदः ॥ विचित्रंजायतेसस्यंवैशाखज्येष्ठयोस्तथा ॥ ३३ ॥ फाल्गुनेशृणुदेवेशियथाजानंतिमानवाः ॥ सप्तमीशुक्लपक्षस्यकृत्तिकाऋक्षसंयुता ॥ ३४ ॥

अर्थ-फागुन महींनामें शनैश्चरकी संक्रांतिमें जो मेघ वर्षा करैं तो चित्र विचित्र खेती उत्पन्न होवे, तथा वैशाख ज्येष्ठमें भी वैसेही होवे ॥ ३३ ॥ हे देवेशि ! फाल्गुन महींनेमें जिसप्रकार मनुष्य जानैं तैसा तुम सुनो. कि कृत्तिकानक्षत्रसे युक्त (फाल्गुनमहींनाके) शुक्लपक्षकी सप्तमी ॥ ३४ ॥

अष्टमीनवमीचैवदशम्येकादशीतथा ॥ नभस्येअमावस्यायांद्रोणमेघःप्रवर्षति ॥ ३५ ॥ अथवाश्वियुजेमासिचतुर्थीपंचमीतथा ॥ एवंयोगेनदेवेशिवर्षतेनात्रसंशयः ॥ ३६ ॥

अर्थ-अष्टमी, नौमी, दशमी, तथा एकादशी और भाद्रपद अमावास्याको द्रोणनामक मेघ बर्षताहै ॥ ३५ ॥ अथवा हे देवेशि ! अश्विनी नक्षत्रसे

युक्त फागुन महींनामें ऐसा ही योग भयेपर चौथ तथा पंचमीको वर्षा होतीहै, इसमें संशय नहीं है ॥ ३६ ॥

फाल्गुनेशुक्लसप्तम्यांपौर्णिमायांतथैवच ॥ निर्वातोगगनेमेघो यदाभवतिभामिनि ॥ ३७ ॥ तदादेविभविष्यतिसुभिक्षंक्षेम मेवच ॥ पूर्वोत्तरर्क्षेनिर्वातस्तृतीयेजलमुत्तमं ॥ ३८ ॥

अर्थ-हे भामिनि ! फागुन महींनामें शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन तथा पौर्णिमाके दिन जो पवनसे रहित मेघ आकाशमें हों ॥ ३७ ॥ तो हे देवि ! सुभिक्ष और क्षेम होताहै. और पूर्वा उत्तरा नक्षत्रमें पवन न चलै तो तीजके दिन उत्तम वर्षा होतीहै ॥ ३८ ॥

नभस्यकृष्णसप्तम्याममावास्यायांतथैवच ॥ वर्षतेनात्रसंदेहोम याख्यातंवरानने ॥३९॥ फाल्गुनेकृष्णसप्तम्यामष्टम्यादिदिनत्रयं ॥ एभिर्दिनैःसमादेश्यंजलयोगसमुद्भवं ॥ ४० ॥

अर्थ-और हे वरानने ! भादोंमें कृष्णपक्षकी सप्तमीको तथा अमावसको वर्षा होवे. इसमें संदेह नहीं है. यह मैने कहा है ॥ ३९ ॥ कि फागुनमासमें कृष्णपक्षकी सप्तमीके दिन अथवा अष्टमी आदि लेकर तीन दिन इन दिनोंसे जलके योगको देखना ॥ ४० ॥

उज्वलोमारुतोयातिसमेघश्चजलान्वितः ॥ योगंसमुद्भवंदे विचाश्वियुक्मासवर्षणं॥४१॥फाल्गुनस्यचमासस्यवर्षतेचाष्टमी दिने ॥ सुभिक्षंचसमादेश्यंसस्यसंपत्तिरुत्तमा ॥ ४२ ॥

अर्थ-(इनहीं दिनोंमें) जलयुक्त मेघोंसे पवन प्रचंड चलै तो हे देवि ! इस योगसे उत्पन्न आश्विन मासमें महींनाभर वर्षा होतीहै ॥ ४१ ॥ और फागुन महींनाके अष्टमीके दिन जो वर्षा हो तो सुभिक्ष और उत्तम धान्योंकी उत्पत्ति देखनेमें आतीहै ॥ ४२ ॥

कृष्णफाल्गुनतृतीयायांसवातोदृश्यतेघनः॥आश्विनेशुक्लतृती यायांदिवारात्रौचवर्षति ॥ ४३ ॥ फाल्गुनेकृष्णनवम्यांमूलऋ क्षेणसंयुतः ॥ अभ्रच्छन्नंतथाकाशमष्टमारुतसंभवः ॥ ४४ ॥

अर्थ-फागुनकी कृष्णपक्षकी तीजके दिन पवनसहित मेघ दीख पड़ैं तो

कुँवारशुक्ल तीजके दिन रात्रि दिन वर्षा होतीहै ॥ ४३ ॥ तथा फागुनके कृष्णपक्षकी नौमीके दिन आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तब मूल नक्षत्रसे युक्त आठपवनोंकी उत्पत्ति होतीहै ॥ ४४ ॥

आश्विनेकृष्णसप्तम्यांवर्षतेनात्रसंशयः ॥ रात्रेर्वृष्टिर्दिवावर्षंदिनेवृष्टिर्भवेन्निशि ॥ ४५ ॥ इतिफाल्गुनस्यफलं ॥ ईश्वरउवाच चैत्रेचगौरिसंक्रांतौयदिवर्षतिनीरदः ॥ विचित्रंजायतेसस्यं वैशाखज्येष्ठमासयोः ॥ ४६ ॥

अर्थ-(इसीसे) कुवांरकृष्णसप्तमीको वर्षा होतीहै. इसमें संशय नहीं है. रात्रिकी वर्षा दिनमें हो और दिनकी वर्षा रात्रिमें हो ॥ ४५ ॥ इति फाल्गुनस्य फलम् ॥ महादेव पार्वतीजीसे कहतेहैं कि हे गौरि ! जो चैत्रकी संक्रांतिके दिन मेघ वर्षा करैं तो वैशाख ज्येष्ठके बीचमें विचित्र खेती उत्पन्न होवे ॥ ४६ ॥

वैशाखेश्रावणेचैत्रेचतुर्थीपंचमीषुच ॥ वर्षणंप्राक्शुभंकिंचित्क्रमादुत्तरतोधमः ॥ ४७ ॥ चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांअभ्रच्छन्नंयदा नभः ॥ गोधूमैःश्रावणेमासिद्विगुणंलाभमादिशेत् ॥ ४८ ॥

अर्थ-वैशाख, श्रावण, चैत्र, इन महींनोंमें चौथि और पंचमीके दिन क्रमसे पूर्व कुछ वर्षा शुभ है और क्रमहीसे अगाड़ी अधम है ॥ ४७ ॥ जो चैत्र महींनाके शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तो श्रावण महींनामें गेहुंओंसे दुगुना लाभ होताहै ॥ ४८ ॥

निर्मलावादिशःसर्वादृश्यंतेवायुनायुताः ॥ गोधूमास्तत्रविज्ञेयामहर्घाणिभवंतिहि ॥४९॥ द्वितीयेदिवसेप्राप्तेउत्तरोयदिमारुतः ॥ नूनंमेघाःप्रदृश्यंतेवृष्टिर्भाद्रपदेभवेत् ॥ ५० ॥

अर्थ-अथवा चैत्रशुक्ल पंचमीको वायुसे युक्त संपूर्ण दिशा निर्मल दीख पड़ैं तो गेहूं महँगे होंगे ऐसा जानना ॥ ४९ ॥ और चैत्रशुक्ल छठिको जो पवन उत्तरकी तर्फ चलै तो और निश्चय करके मेघ (उसी दिन घेरे दीख पड़ैं) तो भादों महींनामें वर्षा अधिक होवे. ॥ ५० ॥

तृतीयेदिवसेप्राप्तेचैत्रेवातैश्चपूरिताः ॥ नचमेघाःप्रदृश्यंतेका

र्तिकेवृष्टिमादिशेत् ॥५१॥ चतुर्थेदिवसेप्राप्तेयदिवातिचमारुतः दुर्भिक्षंजायतेघोरमनावृष्टिर्नसंशयः ॥ ५२ ॥

अर्थ–और चैत्रमें शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन (सब दिशा पवनसे पूर्ण हों) और मेघ न दीख पड़ैं तो कार्तिकमें वर्षा होवे ॥ ५१ ॥ और चैत्रशुक्ल अष्टमीके दिन जो पवन चलै तो भयंकर दुर्भिक्ष होवे. और वर्षा न होवे. इसमें संशय नहीं है. ॥ ५२ ॥

दिनद्वयंयदावातिवायुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ तदानपच्यतेधान्यं दुर्भिक्षंनात्रसंशयः ॥५३॥ तृतीयायांचपंचम्यांवायुःप्रागुत्तरेयदि ॥ सर्वसस्यानिजायंतेप्रजाःकृतयुगोपमाः ॥ ५४ ॥

अर्थ–जो पवन दक्षिण तथा पछाँहमे दो दिन चलै तो धान्य अच्छी प्रकार नहीं पकतीहै. और दुर्भिक्ष होताहै. इसमें संशय नहीं है ॥ ५३ ॥ (चैत्रशुक्ल) तीजको अथवा पंचमीको जो पवन पूर्व अथवा उत्तरकी तर्फ चलै तो संपूर्ण धान्य उत्पन्न होतेहैं. और प्रजा सतयुगकी समान होतेहैं ॥ ५४ ॥

चैत्रमासस्यदेवेशिशुक्लपक्षस्यपंचमी ॥ सप्तम्यांचत्रयोदश्यांयदामेघःप्रवर्षति ॥५५॥ तारकापतनंदेविगर्जितंविद्युतैःसह ॥ तदावर्षाकालेतुदुर्भिक्षंभवतिध्रुवं ॥ ५६ ॥

अर्थ–हे देवेशि ! चैत्र मासके शुक्लपक्षकी पंचमी अथवा सप्तमी और त्रयोदशीके दिन जो मेघ वर्षा करैं ॥ ५५ ॥ और हे देवि ! तारोंका पतन होवे अथवा बिजुलीके साथ मेघ गर्जैं तो वर्षाके समयमें निश्चय दुर्भिक्ष होवे ॥ ५६ ॥

चैत्रादिदिग्दिनंयावत्कल्पयित्वाक्रमेणतु ॥ आर्द्रादिस्वातिपर्यंतंवृष्टेर्हेतुंविलोकयेत् ॥ ५७ ॥ दुर्दिनंवाजलपातंतच्छंख्या भवतिध्रुवं ॥ तत्संख्याजायतेवृष्टिःएतच्छृणुवरानने ॥ ५८ ॥

अर्थ–चैत्रकी आदिके दशदिन क्रमसे कल्पना करै फिर आर्द्रासे आदि लेकर स्वातीपर्यंत नक्षत्रोंकी वृष्टिका कारण देखै ॥ ५७ ॥ तिसकी संख्यासे

दुर्दिन वा जल वर्षनेका निश्चय होताहै. और हे वरानने ! तिसकी संख्यासे वृष्टि होतीहै. यह सुनो ॥ ५८ ॥

मूलाद्यानिचऋक्षाणिचैत्रेकृष्णेनिरीक्षयेत् ॥ एभिश्चगलितै ऋक्षैर्गर्भश्रावोविधीयते ॥ ५९ ॥ साभ्रैर्निहन्यतेवृष्टिर्निरभ्रैर्वृ ष्टिरुत्तमा ॥ एतच्छृणुष्वयोगादीन्सावधानतयाप्रिये ॥६०॥

अर्थ–मूलादिक नक्षत्रोंको चैत्रके कृष्णपक्षमें देखै. इतने नक्षत्रोंसे गर्भस्रा-वविधान किया जाताहै ॥५९॥ मेघोंसहित वृष्टि नहीं होतीहै और जो मेघ न होवें तो वृष्टि उत्तम होतीहै. हे प्रिये ! सावधान होकर ये योगा-दिकोंको सुनो ॥ ६० ॥

चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांसप्तमीनवमीषुच ॥ पौर्णिमायांतथादेवि जलयोगस्यनिश्चयः ॥६१॥ पंचमीसहरोहिण्यांसप्तमीशिवभा निच ॥ नवमीसहपुष्येणज्ञातव्यंकालचिंतकैः ॥ ६२ ॥

अर्थ–हे देवि ! चैत्रके शुक्लपक्षकी पंचमीको अथवा सप्तमीको वा नौ-मीको और पौर्णिमाको जलका योग निश्चय होताहै ॥ ६१ ॥ पंचमीके दिन रोहिणी होवे और सप्तमी आर्द्रासे युक्त हो और नौमी पुष्यनक्षत्रसे युक्त हो तो ज्योतिषीलोगोंको योग जानना चाहिये ॥ ६२ ॥

पौर्णमास्यांस्वातियोगोविद्युन्मेघसमन्वितः ॥ एभिश्चगलितै र्ऋक्षैर्गर्भश्रावोविधीयते ॥६३॥ पुष्येवृष्टिःसमादेश्यानान्यऋ क्षैःकदाचन ॥ भवंतिमिलितागर्भाएभिर्ज्ञानैर्विचक्षणैः॥६४॥

अर्थ–बिजुली मेघोंसे युक्त पौर्णमासीके दिन स्वातियोग होताहै. इस न-क्षत्रसे गलित गर्भश्रावविधान होताहै. ॥ ६३ ॥ पुष्यनक्षत्रसे अधिक वृष्टि होतीहै तथा और नक्षत्रोंसे कोईप्रकारसे भी वृष्टि नहीं होतीहै. इस नक्षत्रसे मिलित (मेघोंका गर्भ) विचक्षण लोगोंने जानना. ॥ ६४ ॥

चैत्रस्यशुक्लपक्षेतुत्रयोदस्यांविशेषतः ॥ धूमिकाजायतेयत्रमे घस्तत्रनवर्षति ॥ ६५ ॥ इतिचैत्रफलं ॥ वैशाखेपंचरूपीस्या ज्ज्येष्ठघर्मान्वितंशुभं॥मासाष्टकनिमित्तेनचतुष्टयफलप्रदं ॥६६

अर्थ–चैत्रके शुक्लपक्षमें और त्रयोदशीको विशेषता करके जहां धूमरंगके बादल होंवें तहां मेघ वर्षा नहीं करतेहैं ॥ ६५ ॥ इति चैत्रफलं ॥ वैशाखमें (मेघोंके) पांच रूप होतेहैं. और ज्येष्ठमें घामसे युक्त तथा शुभ होताहै. इसीप्रकार आठ महींनाके निमित्तसे चार महींना मेघ फलको देतेहैं ॥६६ ॥

वैशाखेगर्जितेभूरिसलिलंपवनोघनः ॥ उष्णोज्येष्ठेयदाच स्यात्तदाकालोशुभप्रदः ॥ ६७ ॥ वैशाखेशुक्लपंचम्यामभ्रच्छन्नंयदानभः ॥ गर्जितेवर्षितेवापिपूर्ववातोयदाभवेत् ॥ ६८ ॥

अर्थ–और जलपवनयुक्त मेघ वैशाखमें गजैं और जो ज्येष्ठमें गर्मी होवे तो समय शुभके देनेवाला है ॥६७॥ और वैशाखमें शुक्लपंचमीके दिन जो आकाश (मेघोंसे) आच्छादित हो और गर्जना हो वा वर्षा हो और जो पुरवाई चलै ॥ ६८ ॥

उदयास्तमनंयावत्ज्ञातव्यंचविचक्षणैः ॥ संग्रहेत्सर्वसस्यानिप्रचुराणिसुरेश्वरि ॥ ६९ ॥ मासभाद्रपदारंभेमहर्घाणिभवंतिहि वैशाखेप्रतिपच्चैवसप्तमीनवमीषुच ॥ ७० ॥ अष्टम्यांचतथादेविमेघोगच्छतिचांबरे ॥ मघवावर्षतेनैववृष्टिर्मध्याचजायते ॥७१॥

अर्थ–तो जबतक उदय अस्तको बुद्धिमान् लोगोंने जानना. कि हे सुरेश्वरि ! संपूर्ण धान्योंका अधिक संग्रह करै ॥ ६९ ॥ (कारण कि) भादों महींनाके आरंभमें (सब धान्योंकी महँगई होवेगी) हे देवि ! वैशाख महींनामें परीवा, सप्तमी, नौमी, तथा अष्टमीको जो मेघ आकाशमें होवें तो मेघ वैशाखमें वर्षा नहीं करतेहैं. और (वर्षासमयमें) मध्यम वर्षा होती है ॥ ७० ॥ ७१ ॥

मेषेसंक्रांतिकालेचेन्नंदास्वपिदिनेतथा ॥ यत्राभ्रंवातविद्युद्वा आर्द्रादौतत्रवर्षति ॥ ७२ ॥

अर्थ–और जो मेषकी संक्रांतिके समय तथा नंदादिक तिथियोंमें जहां मेघ होंवें अथवा पवन चले वा बिजुली चमकै तो आर्द्रा नक्षत्रके आदिमें वर्षा न होवे ॥ ७२ ॥

अथवानवमासेषुवाताभ्रादिषुनिर्णयः॥ यस्यांदिशिघनोयाति

तस्मिन्देशेचवर्षति ॥ ७३ ॥ यदानवेषुमासेषुवाताभ्रादिशु भंभवेत् ॥ यस्यांदिशिचसंपूर्णतद्देशेप्यखिलंजलं ॥ ७४ ॥

अर्थ–अथवा नव महींनामें वात और मेघोंका निर्णय है कि जिस दिशामें मेघ प्राप्त होतेहैं तिसही दिशामें वर्षा होतीहै ॥ ७३ ॥ जो नव महींनामें पवन मेघ शुभ होवें और जिस दिशामें संपूर्ण शुभ हो तिस दिशामें अच्छी प्रकार जल होवे. ॥ ७४ ॥

मेषराशिस्थितेसूर्येअश्विनीऋक्षसंयुते ॥ यदातुवर्षतेदेविमूल गर्भोविनश्यति ॥७५॥ पंचमेप्रथमेस्थानेगर्भपततिनान्यथा ॥ एवंऋक्षेप्रवर्षतिगर्भश्रावंशृणुप्रिये ॥ ७६ ॥

अर्थ–और अश्विनी नक्षत्रसे युक्त सूर्यके मेष राशिमें स्थित भयेपर जो वर्षा होवे तो मूल गर्भका विनाश होवे ॥ ७५ ॥ (इसी प्रकार सूर्यको) पंचम स्थानमें प्राप्त भयेपर मेघोंका गर्भ पड़ताहै और किसीप्रकार नहीं गिरताहै. इसीप्रकार संपूर्ण नक्षत्र वर्षा करतेहैं. हे प्रिये ! उन्होंका गर्भश्राव सुनो. ॥ ७६ ॥

आर्द्रापुनर्वसुःपुष्यःह्यश्लेषाचमघातथा ॥ पंचभिर्गलितेऋक्षेछि द्रंवर्षतितोयदः ॥ ७७ ॥ आर्द्राप्रवर्षतेदेविराजतेवाकथंच न ॥ सर्वेगर्भाश्चतत्रैवप्रहृष्टावर्षतेप्रिये ॥ ७८ ॥

अर्थ–आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, इन पांच नक्षत्रोंको गलित भयेपर मेघ थोड़ी वर्षा करतेहैं ॥ ७७ ॥ हे देवि ! आर्द्रा नक्षत्रको वर्षनेपर किसी प्रकार शोभा होतीहै. और हे प्रिये ! तहां संपूर्ण मेघोंके गर्भ आनंदसे वर्षतेहैं ॥ ७८ ॥

वैशाखेशुक्लसप्तम्यांपूर्ववातोयदाभवेत् ॥ अभ्रच्छन्नंयदाकाशं पतंतिजलबिंदवः ॥ ७९ ॥ तदाव्रीहयोसंग्राह्यालाभोभवति पुष्कलः ॥ तच्छर्वंविक्रयेच्छीघ्रंमासिभाद्रपदेप्रिये ॥ ८० ॥ इतिवैशाखफलं ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थ–वैशाखमें शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन जो पुरवाई चलै और जो आकाश मेघोंसे आच्छादित हो वा जलके बिंदु गिरैं ॥ ७९ ॥ तो संपूर्ण धा-

न्योंका संग्रह करै इससे अधिक लाभ होताहै. और हे प्रिये ! भादों महीं-नामें तिस संपूर्ण धान्यको शीघ्र बेंच देवे. ॥ ८० ॥ इति वैशाखफलं ॥

ज्येष्ठस्यप्रथमेपक्षेयातिथिःप्रथमाभवेत् ॥ तद्दिनेयोभवेद्वारस्त न्निरीक्षेत्प्रयत्नतः ॥ ८१ ॥ भानुनापावकोयातिकुजेव्या धिंजलक्षयं ॥ बुधवारेणदुर्भिक्षंप्रभवंतिनसंशयः ॥ ८२ ॥

अर्थ–ज्येष्ठमहींनाके कृष्णपक्षमें जो तिथि प्रथम होवे और तिस दिन जो बार हो तिसको यत्नसे देखै. ॥ ८१ ॥ जो रविवार हो तो अग्नि लगती है और जो मंगलवार हो तो व्याधि होवे अथवा जलका नाश होवे. और जो बुधवार हो तो दुर्भिक्ष होवे इसमें संदेह नहीं हैं॥८२॥

गुरुभार्गवसोमेषुयद्येकोपिप्रजायते॥जलेनपूरितापृथ्वीधनधा न्यसमाकुलम् ॥८३॥ कदाचिद्दैवयोगेनशनिवारःप्रजायते ॥ जलशोषःप्रजानाशंछत्रभंगंभवेत्तदा ॥ ८४ ॥

अर्थ–बृहस्पति शुक्र सोमवार इनमेंसे जो एकभी होवे तो पृथ्वी जलसे पूर्ण होवे और धन धान्यसे (जगत) पूर्ण होवे. ॥८३॥ कदाचित् दैवयोगसे शनिवार होवे तो जलका सूखना, प्रजावोंका नाश, व छत्रभंग होवे ॥ ८४ ॥

आर्द्रादौनवनक्षत्रंज्येष्ठशुक्लेनिरीक्षयेत् ॥ साभ्रेणहन्यतेवृष्टिर्नि रभ्रंवर्षतेसदा ॥८५॥ ज्येष्ठेमासेसितेपक्षेआर्द्रादौदशतारकाः॥ सजलानिर्जलादेविनिर्जलासजलाभवेत् ॥ ८६ ॥

अर्थ–ज्येष्ठ महींनाके शुक्लपक्षमें आर्द्राके आदिके नवनक्षत्र देखै वे नक्षत्र जो बादलोंसहित हों तो वृष्टि न होवे. और जो इनहीं नक्षत्रोंमें बादल न होंवें तो हमेसा वर्षा होवे ॥८५॥हे देवि ! ज्येष्ठ महींनाके शुक्लपक्षमें आर्द्राके आदिके दश नक्षत्र जलवाले निर्जल होतेहैं. और निर्जल जलवाले होतेहैं८६

ज्येष्ठस्यप्रतिपच्छुक्लेसूर्यस्यास्तंगतेप्रिये ॥ द्वितीयायांनिरीक्षं तिचंद्रेवृद्धामहर्षयाः ॥ ८७ ॥ अलिसिंहेधनुश्चक्रेशुभाभा कन्यकातुले ॥ दक्षिणाभिन्नलोमीनेमेषेकुंभेवृषेसमः ॥ ८८ ॥

अर्थ–ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाको जो सूर्यका अस्त होवे तो

दुइजके दिन चंद्रमाको देखनेमें चतुरपुरुष चंद्रमाको देखैं ॥ ८७ ॥ वृश्चिक, सिंह, धन, इनको चंद्रमा गोल होताहै. और कन्यातुलाका चंद्र शुभ कांतिवाला होताहै. और मीनका चंद्र दक्षिणकी तर्फ उन्नत होताहै और मेष, कुंभ, वृष, इनमें सम होताहै ॥ ८८ ॥

मिथुनेचेंदुरशुभंभवेच्चैवनसंशयः ॥ विद्रवंचसमंचंद्रेदुर्भिक्षंचोत्तरोन्नतं ॥ ८९ ॥ शूलेरोगभयंकुर्याद्दुर्भिक्षंदक्षिणोन्नतं ॥ ज्येष्ठस्यशुक्लपंचम्यांगर्जितंश्रूयतांयदि ॥ ९० ॥

अर्थ—और मिथुनका चंद्रमा शुभ होताहै. इसमें संशय नहीं है. सम चंद्रमा विद्रव होताहै और जो उत्तरको उन्नत हो तो सुभिक्ष होताहै. ॥८९॥ जो चंद्रमा पूर्वकी तरफ उन्नत हो तो रोग अथवा भयको करताहै. और जो दक्षिणकी तर्फ उन्नत हो तो दुर्भिक्ष करताहै. ज्येष्ठ महीनाके शुक्ल पक्षकी पंचमीको जो मेघोंका गर्जना सुन पड़ै ॥ ९० ॥

दक्षिणस्यांभवेद्वायुरभ्रच्छन्नंयदाभवेत् ॥ धान्यानांसंग्रहंकार्यं आश्विनेत्रिगुणंभवेत् ॥ ९१ ॥ ज्येष्ठेसितेचह्यष्टम्यांचत्वारोवायुधारणं ॥ ज्येष्ठस्यशुक्लपक्षस्यशृणुदेविकथामिमां ॥ ९२ ॥

अर्थ—और दक्षिणकी तर्फ पवन चलै और जो (आकाश मेघोंसे) घेरा हो तो संपूर्ण धान्योंका संग्रह करना. कुँवांर महीनेंमें तिगुना होताहै ॥९१॥ ज्येष्ठ महींनाके शुक्लपक्षमें चारप्रकारका वायु शरीर धारण करताहै इससे हे देवि ! ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी यह कथा सुनो ॥ ९२ ॥

एकादश्यांमहादेविपूजांकुर्यात्सुशोभने ॥ अभ्रंमंडलकंदत्वापुष्पैर्धूपैरलंकृतं ॥ ९३ ॥ तेषुस्थानेषुसंस्थाप्यमहादंडंमहाध्वजं ॥ कृत्वातेनविधानेनशोधयेत्कालनिर्णयम् ॥ ९४ ॥

अर्थ—हे देवि ! सुशोभने ! ज्येष्ठशुक्ल एकादशीके दिन मेघोंका मंडल बनायके पुष्प धूपसे अलंकृतकर पूजा करै ॥९३॥ और तिसी स्थानमें महादंड और महाध्वजा स्थापित करके तिसी विधानसे कालका निर्णय करै ॥ ९४ ॥

एकोवातोयदायातिचतुर्दिनानिचोत्तरे ॥ तदाचतुर्षुमासेषुध्रु

वंवर्षतिनीरदः ॥ ९५ ॥ विपरीतंयदायातियानिचिह्नानिवा
युभिः ॥ तानिचिह्नानिवर्षतिप्रावृट्कालेनसंशयः ॥ ९६ ॥

अर्थ–जो एकही पवन चार दिन उत्तरकी तर्फ चलै तो चार महींनामे मेघ निश्चय वर्षा करैं ॥ ९५ ॥ जो चिन्ह पवनके हैं वे विपरीत होवें तो भी वे चिन्ह वर्षाकालमें वर्षतेहैं. इसमें संशय नहीं है ॥ ९६ ॥

यदातुपश्चिमेवातोजायतेचचतुर्दिनं ॥ चत्वारोवार्षिकान्मासा
न्मेघावर्षंतिवैभृशं ॥ ९७ ॥ विपरीतायदावांतुवाताश्चैवचतु
र्दिशि ॥ रविमार्गपरिभ्रष्टाःशृणुतस्यापिलक्षणं ॥ ९८ ॥

अर्थ– जो पश्चिमकी तर्फ चार दिन पवन चलै तो वर्षातके चार महीं-नोंमे मेघ अत्यंत वर्षा करैं ॥ ९७ ॥ जो सूर्यमार्गसे भ्रष्ट चारही दिशोंमे पवन विपरीत चलै तो तिसको भी लक्षण सुनो ॥ ९८ ॥

शीतकालेभवेद्वृष्टिर्वर्षाकालेनविद्यते ॥ समवातेभवेत्साम्यंवर्षा
कालेनविद्यते ॥९९॥ वायव्यांपश्चिमेदेविनैर्ऋतेवायदातदा ॥
भाद्रपदाश्विनौछिद्रंचोत्तराषाढश्रावणे ॥ २०० ॥

अर्थ–कि, शीतकालमें वर्षा होतीहै. और वर्षाकालमें वर्षा नहीं होतीहै. और जो सम पवन होवे तो साम्य होवे परंतु वर्षा कालमें न होवे ॥ ९९ ॥ हे देवि ! वायव्यकोणमें और पश्चिममें अथवा नैऋत्यमें जो पूर्वप्रकारकी वायु चलै तो भादों कुंवारमें दुःख हो और उत्तराषाढ नक्षत्रमें श्रावणमें दुःख होवे ॥ २०० ॥

वैशाखेरोहिणीयोगंज्येष्ठाषाढेशुभप्रदं ॥ अवृष्टिर्हन्यतेप्यंभोस
मेघैर्वृष्टिकारणं ॥ १ ॥ सुभिक्षंजायतेतेननचईतिभयंभवेत् ॥
अनभ्रंमध्यमावृष्टिर्वृष्टिंवृष्टास्तथोत्तमा ॥ २ ॥

अर्थ–वैशाख महीनामें (पूर्वोक्त) रोहिणीयोग ज्येष्ठ आषाढ़में शुभके देनेवाला है. उस योगमें जो वर्षा न होवे तो वह मेघोंके वर्षनेका कारण है ॥ १ ॥ तिससे सुभिक्ष होताहै. और वर्षण अवर्षण आदि सात ईतियोंका भय नहीं होताहै. और (तिसही योगमें) जो मेघ न होंवें तो मध्यम वृष्टि होवे और जो वृष्टि हो तो उत्तम वृष्टि होवे ॥ २ ॥

निरभ्रेणचऋक्षस्यरोहिणींदुसमागमे ॥ दुर्भिक्षंप्रथमेस्वांशेद्वितीयेसर्पकीटकाः ॥ ३ ॥ तृतीयांशेतदादेविमध्यमांवृष्टिमादिशेत् ॥ चतुर्थेमंदवृष्टिःस्यात्सर्वसस्यानिपंचमे ॥ ४ ॥

अर्थ—और रोहिणी चंद्रमाके समागममें जो रोहिणी नक्षत्र मेघोंसे रहित होवे तो प्रथम अपने अंशमें दुर्भिक्ष होवे और दूसरेमें सर्प कीटक होवें ॥३॥ और हे देवि ! तृतीय अंशमें मध्यम वर्षा देखनेमें आवे और चौथेमें मंद वर्षा होवे. और पांचवेंमें संपूर्ण धान्य होवें ॥ ४ ॥

षष्ठेमाषाश्चमुद्गाश्चतुषधान्यानिसप्तमे ॥ अष्टमेषुयदावृष्टिःखंडवृष्टिंसमादिशेत् ॥ ५ ॥ नमाघेपतितंशीतंज्येष्ठेमूलंनवृष्टिकृत्॥ नार्द्रायांपतितंतोयंदुष्टकालस्तदाभवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—और छठेंमें उर्द, मूंग होवें, और सातवें अंशमें तुष धान्य उत्पन्न होतेहैं. और अष्टम अंशमें जो वृष्टि होवे तो खंडवृष्टि देखनेमें आवे. अर्थात् कहीं वृष्टि होवे कहीं न होवे. ॥ ५॥ और न माघमें शीत पड़ै तथा ज्येष्ठमें मूलनक्षत्रमें जो वृष्टि न हो और आर्द्रा नक्षत्रमें पानी न वर्षै तो दुष्ट समय होताहै ॥ ६ ॥

ज्येष्ठस्यपूर्णिमायांतुमूलंप्रस्रवतेयदि ॥ षष्टिघस्रंनवर्षंतिपश्चाद्वर्षंतिनीरदाः ॥ ७ ॥ ज्येष्ठस्यमासेबहुलेचपक्षेनक्षत्रयुग्मंश्रवणंधनिष्ठा ॥ गर्जंतिवर्षंतिचविद्युदभ्रंवातंशुभंयातिचगर्भभावं ॥ ८ ॥

अर्थ—ज्येष्ठमें पौर्णिमाके दिन जो मूलनक्षत्रमें वर्षा हो तो ६० दिन वर्षा न होवे पीछे मेघ वर्षै ॥७ ॥ ज्येष्ठमहींनेके अधिक पक्षमें श्रवण, धनिष्ठा दो नक्षत्रोंमें बिजुलीयुक्त मेघ वर्षा करैं वा गर्जना करैं और शुभ पवन चलै तो (मेघोंका) गर्भपात होताहै ॥ ८ ॥

ज्येष्ठेवापरपक्षेचद्वेऋक्षेश्रवणादिके॥ अवर्षणेचवृष्टिःस्याद्वर्षितेवर्षितंसदा ॥ ९ ॥ यदानसंख्यायावृष्टिर्वृष्टिरोधंविनिर्दिशेत् ॥ अस्तमानेरवौज्येष्ठमावस्यांवीक्ष्यचिह्नितां ॥ १० ॥

अर्थ—वा ज्येष्ठ महींनाके कृष्णपक्षमें श्रवण आदिके दो नक्षत्रोंकी वर्षा न होंनेसे वर्षा होतीहै. और जो दोनों नक्षत्रोंमें वर्षा हों तो चार महींना हमेस वर्षा होतीहै ॥ ९ ॥ जो संख्यासे वृष्टि न होवे अर्थात् बे प्रमाण वर्षा होवे तो वर्षाका अवरोध देखनेमें आवे. और सूर्यको ज्येष्ठमें अस्तभयेपर अमावास्याको अवश्य देखके चिन्ह जानै ॥ १० ॥

तदुत्तरेभवेदिंदुरस्तंचेन्नशुभंभवेत् ॥ ज्येष्ठमासेष्वमावस्यांपूर्ण मास्यामथापिवा ॥११॥ दिवावायदिवारात्रौमेघोभवतिचांबरे॥ अनावृष्टिर्भवेत्तत्रनात्रकार्याविचारणा ॥१२॥ इतिज्येष्ठफलं ॥

अर्थ—और जो सूर्यके उत्तर चंद्रमाका अस्त होवे तो शुभ नहीं है. और ज्येष्ठ महींनामें अमावास्याको अथवा पौर्णमासीको ॥ ११ ॥ दिनको वा रात्रिको मेघ जो आकाशमें हों तो तहां अनावृष्टि होवे. इसमें कुछ विचार नहीं करना ॥ १२ ॥ इति ज्येष्ठफलं ।

आषाढेषुचमासेषुरोहिणीयोगमुत्तमं ॥ यदाभ्रंविद्युदंभोवाका लंनिष्पद्यतेतदा ॥ १३ ॥ विनष्टेरोहिणीयोगेनपूर्वंचोत्तरा नलः ॥ वृषादुच्चग्रहाःसर्वेजायंतेवृष्टिकारणं ॥ १४ ॥

अर्थ—आषाढ़महींनामें रोहिणीयोग उत्तम होताहै. तिस रोहिणीयोगमें जलयुक्त मेघ वा बिजुली चमकै तो अकाल होताहै ॥ १३ ॥ और रोहिणी-योगके विनाश भयेपर उत्तर और पूर्वकी तर्फ पवन न चलै तो वृषराशिसे संपूर्ण उच्च ग्रह वृष्टिके कारण होते हैं ॥ १४ ॥

माघेचफाल्गुनेचैवचैत्रवैशाखयोस्तथा ॥ स्वातियोगंविजानी यात्आषाढेहितथैवच ॥ १५ ॥ आषाढेस्वातिनक्षत्रेजलयोगं स्फुटंभवेत् ॥ यद्यभ्रावातविद्युद्वाधान्यनिष्पत्तिकारणं ॥१६॥

अर्थ—माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, इन महींनोंमें स्वातियोगको जानना. और तिसीप्रकार आषाढ़में भी स्वातियोग जानना. ॥ १५ ॥ आषाढ़में स्वाती नक्षत्रमें जलयोग स्फुट होताहै. उसी योगमें जो मेघ, पवन, वा बिजुली ये हों तो धान्यके उत्पत्तिका कारण है ॥ १६ ॥

आषाढमासेप्रथमेचपक्षेनिरभ्रदृष्टेरविमंडलेच ॥ नविद्युतोगर्जि

तमेववृष्टिर्मासद्वयंवर्षतिनैवमेघः ॥ १७ ॥ आषाढशुक्लपंच
म्यांपश्चिमेयदिमारुतः ॥ गर्जतेवर्षतेचापिइंद्रचापंनदृश्यते ॥१८॥

अर्थ—आषाढ़महींनामें कृष्णपक्षमें सूर्यका मंडल मेघोंसे रहित देखनेपर न तो बिजुली हो और न मेघ गजैं. वा वृष्टि न हो तो दो महींना मेघ नहीं वर्षा करतेहैं ॥ १७ ॥ आषाढशुक्ल पंचमीके दिन पश्चिमकी तर्फ जो पवन चलै और गर्जने तथा वर्षनेपर इंद्रधनुष न दीख पड़ै ॥ १८ ॥

मेघरुद्धदिशःसर्वादृश्यंतेधनुषान्विताः ॥ सर्वधान्यानिसंग्रह्य
तदामासचतुष्टयं ॥ १९ ॥ कार्तिकेद्विगुणोलाभोभवत्येवनसं
शयः ॥ नवम्यांयदिवाषाढेशुक्लायांनिर्मलोरविः ॥ २० ॥

अर्थ—और मेघोंसे रुद्ध संपूर्ण दिशा इंद्रधनुषसे युक्त दीख पड़ैं तो चार महींनातक संपूर्ण धान्योंका संग्रह करै ॥ १९ ॥ कार्तिकमें दूना लाभ होता है. इसमें संशय नहीं है. अथवा जो आषाढ़में शुक्लपक्षमें नौमीके दिन सूर्य निर्मल हों ॥ २० ॥

उदयेवाथमध्याह्नेघनैश्छन्नंयदानभः ॥ वर्षतेचतुरोमासान्वि
पर्यासेविपर्ययं ॥ २१ ॥ एवंदेविसमायोगंमयाख्यातंसुनिश्चि
तं ॥ पार्वतिभुक्तिराषाढेशुक्लप्रतिपदादिने ॥ २२ ॥

अर्थ—अथवा जो उदयमें वा मध्याह्नमें आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तो चारमहींना (चौमासामें) मेघ वर्षा करतेहैं. और जो इस क्रमसे विपरीत हो तो विपरीतही फल होताहै ॥ २१ ॥ हे देवि ! इसप्रकार निश्चयकरके हमने ये योग कहे. हे पार्वति ! आषाढ़महींनाके शुक्लपक्षमें प्रतिपदाके दिन रसकी भुक्ति होतीहै ॥ २२ ॥

पुनर्वसौमासेनवृष्टिःस्यात्तावतीस्फुटं ॥ आषाढेमासिसंक्रांतौ
यदावर्षतितोयदः ॥ २३ ॥ व्याधिरुत्पद्यतेघोराश्रावणेशोभन
स्तथा ॥ आषाढेतुयदादेविद्वादश्यांप्रतिपद्दिने ॥ २४ ॥

अर्थ—और पुनर्वसुमें महींना भरसे वृष्टि होतीहै, यह स्फुट है. और आषाढ़महींनेमें संक्रांतिके दिन जो मेघ वर्षा करैं ॥ २३ ॥ तो भयंकर व्या-

धि उत्पन्न होवें तथा श्रावणमें शुभ होवे. और हे देवि ! आषाढ़में जो द्वादशी तथा प्रतिपदाके दिन ॥ २४ ॥

पूर्णमास्याममावास्यांमहावातंविनिर्दिशेत् ॥ तदादेविभवेद्दुःखंदेवोवर्षतियत्नतः ॥ २५ ॥ वर्षाकालेत्रिमासेषुनक्षत्रंवर्द्धतेस्फुटं ॥ तिथिस्तुवर्द्धतेतत्रध्रुवंकालोविनश्यते ॥ २६ ॥

अर्थ–वा पौर्णमासी अथवा अमावास्याके दिन जो अधिक पवन दीख पड़ै तो हे देवि ! दुःख होवे और मेघ यत्नसे वर्षा करैं ॥ २५ ॥ वर्षासमयमें तीन महींनोंमें नक्षत्र बढ़ै है और तीन महींनोंमें जो तिथि बढ़ै तो निश्चय समयविनाश होताहै ॥ २६ ॥

वारुणंचैवनक्षत्रंशीघ्रंवर्षतिनीरदः ॥ आषाढेतुघटीषष्ठंमासद्वादशनिर्णयः ॥ २७ ॥ पंचनाडीभवेन्मासेषष्ठ्यावार्षस्यनिर्णयः सर्वरात्रौयदाभ्राणिवायुपूर्वोत्तरोयदि ॥ २८ ॥

अर्थ–शतभिषानक्षत्रके प्रति जो मेघ शीघ्र वर्षा करैं तो आषाढ़में छह घड़ीमें बारह महीनाका निर्णय होताहै ॥ २७ ॥ जो महींनामे पांच नाड़ी होवें तो छठिके दिन वर्षाका निर्णय होताहै. और जो संपूर्ण रात्रिमें मेघ होवें और वायु पूर्व अथवा उत्तरकी तर्फ चलै ॥ २८ ॥

तत्रमासविभागेननिर्मलंदृश्यतेनभः ॥ नाभ्रमंभोनमेघोवावायुःपूर्वोत्तरोनहि ॥ २९ ॥ नवर्षतितदादेविदुष्टंकालंतदावदेत ॥ तत्रमासविभागेननिर्मलंजायतेप्रिये ॥ ३० ॥

अर्थ–तो तहां मासके विभागसे आकाश निर्मल दीख पड़ताहै. और न जल वर्षै न आकाशमें मेघ हों और न पूर्वउत्तरकी वायु चलै ॥ २९ ॥ तो हे देवि ! मेघ वर्षा नहीं करते और तब दुष्टकाल कहना. हे प्रिये ! तहां महींनाभरसे (आकाश) निर्मल होताहै ॥ ३० ॥

तत्रहानिश्चवृद्धिश्चविज्ञेयंगर्भभाषितं ॥ यत्राभ्रंपंचनाडीषुवातौपूर्वोत्तरोयदि ॥ ३१ ॥ तस्मिन्मासेषुविज्ञेयोवृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ तद्रात्रौचविजानीयात्पवनाभ्रादिमानतः ॥ ३२ ॥

अर्थ–तहां हानिऔर वृद्धि गर्गाचार्य करके कहीहुई जानना. और जहां मेघ पांच नाड़ियोंमें होवें और पूर्वउत्तरकी तर्फ पवन होवे ॥३१॥ तो तिस महींनामें वृष्टि अधिक होगी ऐसा जानना. पवन और मेघके अनुमानसे तिस रात्रिमें जानना. ॥ ३२ ॥

षष्ठ्याभिरहितैरेभिःपूर्णिमाशुभदायिनी ॥ दिवारात्रिविभागेन यदाभ्राणिभवंतिचेत् ॥ ३३ ॥ तस्मिन्कालेसुवृष्टिःस्याद्भुक्तनाडीप्रमाणतः ॥ येषुमासेषुयेदग्धागर्भापौषादिसंभवाः ॥३४॥

अर्थ– षष्ठीसे रहित इन्होंसे युक्त पौर्णिमा शुभके देनेवालीहै. और दिनरात्रिके विभागसे जो मेघ होवें ॥ ३३ ॥ तो तिस कालमें भुक्त नाड़ीके प्रमाणसे उत्तम वर्षा होतीहै. जिस महींनोंमें जे गर्भ दग्धगर्भ पूस आदि मासोंमें उत्पन्न होतेहैं ॥ ३४ ॥

तत्रादौपंचनाडीषुचंद्रोभवतिनिर्णितः ॥ पौषादौसंभवेद्गर्भेध्रूमसुत्पातसंभवं ॥ ३५ ॥ तेनाषाढीदिनंसर्वंद्रष्टव्यंवृष्टिहेतवे ॥ तदाषाढीदिनेरात्रावभ्रैर्वातैश्चधारितं ॥ ३६ ॥

अर्थ–तहां आदिमें पांच नाड़ीमें चंद्रमाका निर्णय होताहै. पूसआदिक महींनोंमें जो (मेघोंके) गर्भका संभव होवे तो उत्पातसे उत्पन्न भयंकर समय होताहै ॥३५॥ तिससे आषाढ़ीके दिन वृष्टिका संपूर्ण कारण देखना. तब आषाढ़ीके दिन रात्रिमें मेघ पवनसे युक्त होतेहैं अर्थात् मेघोंका गर्भ-धारण होताहै ॥ ३६ ॥

तदागर्भोशुभोज्ञेयःशीतकालेपिसर्वदा ॥ एकमेवदिनंप्रोक्तंकालनिष्पत्तिहेतवे ॥ ३७ ॥ अष्टयामभ्रवातौचवृष्टिर्यावत्तदाशुभं ॥ आषाढीपौर्णिमारात्रौयदिचंद्रंनपश्यति ॥ ३८ ॥

अर्थ–तब शीतकालमें गर्भ शुभ जानना. सर्वदा वह कालको सिद्धिके लिये एकही दिन शुभ कहा है ॥ ३७ ॥ आषाढ़ी पौर्णिमाकी रात्रिमें जो चंद्रमा न दीख पड़ै तो जबतक आठ प्रहर मेघोंकी पवनयुक्त वृष्टि शुभ है ॥३८॥

तदाचतुर्षुमासेषुजलंवर्षतिनीरदः ॥ चतुर्दशीतथाषाढीहीनव

र्षायदाभवेत् ॥ ३९ ॥ गर्भस्रावेणतद्ग्राह्यंमहर्घंचसमेसमं ॥
अन्यच्चकथयिष्यामितिथिगर्भस्यलक्षणं ॥ ४० ॥

अर्थ–और फिर तब चार महींना (चौमासामें) मेघ जल वर्षा करतेहैं. तथा चतुर्दशी व आषाढ़ीके दिन जो वर्षा होवे ॥ ३९ ॥ तो मेघोंके गर्भ-स्रावसे मंहंगई ग्रहण करना. और सममें सम होता है (हे देवि !) औ-रभी तिथिके गर्भका लक्षण कहताहूं ॥ ४० ॥

आषाढशुक्लपक्षस्यचतुर्थीपंचमीतथा ॥ षष्ठीचसप्तमीदेव्यमा
वस्यांप्रदिपद्दिने ॥ ४१ ॥ स्वयमेवभवेद्गर्भोवर्षतेनात्रसंश
यः ॥ शुचौकृष्णचतुर्थ्यांतुउद्यत्प्रच्छादितोरविः ॥ ४२ ॥

अर्थ–हे देवि! आषाढ़के शुक्लपक्षकी चौथि, पंचिमी, षष्ठी, सप्तमी, वा अमावास्याके दिन तथा प्रतिपदाके दिन ॥ ४१ ॥ (मेघोंका) गर्भ आ-पहीसे होताहै. वह वर्षा करताहै इसमें संशय नहीं है. कृष्णपक्षमे चौथिके दिन जो सूर्य उदय होके अस्त हो जावें ॥ ४२ ॥

त्रिमासंपक्षसंयुक्तंतदावर्षतितोयदः ॥ शुचौकृष्णचतुर्थ्यांतुचे
द्वारोपिक्षयंगतः ॥४३॥ जलपक्षंतदासर्वंस्वस्थंभवतिभूतलं॥
शुचौकृष्णचतुर्थ्यांतुभग्नंभास्करमंडलं ॥ ४४ ॥

अर्थ–तो साढ़े तीन महींना मेघ वर्षा करैं. पश्चात्ताप है कि कृष्णपक्षमें चौथिके दिन जो कदाचित् वारका क्षय होवे ॥४३॥ तो पक्षभर जल वर्षता है और संपूर्ण पृथ्वीतल स्वस्थ होताहै. पुनः पश्चात्ताप है कि कृष्णपक्षकी चौथिके दिन सूर्यका मंडल भग्न हो ॥ ४४ ॥

नवर्षतितदादेवःसदाकष्टतरंजलं ॥ आषाढस्यचतुर्थ्यांतुपूर्वा
भाद्रपदाभवेत् ॥ ४५ ॥ तदावर्षतिपर्जन्यःप्रावृट्कालेसदाभ
वेत् ॥ नतभाद्रपदेमन्येयत्तद्देवोनवर्षति ॥ ४६ ॥

अर्थ–तब मेघ वर्षा नहीं करते और जल सदा अत्यंत कठिन होताहै. और आषाढ़की चौथिके दिन जो पूर्वाभाद्रपद हो ॥ ४५ ॥ तो मेघ वर्षा समयमें वर्षतेहैं. इसमें संशय नहीं है. और भादोंमें जो मेघ वर्षा नहीं करताहै उस मेघको मैं नहीं मानताहूं ॥ ४६ ॥

एवंदेविसमायोगेमयाख्यातंतवप्रिये ॥ अभ्राणिपीतवर्णानि कृष्णवर्णानिपार्वति ॥ ४७ ॥ पश्चिमेचैवसंध्यायामेतदेवभविष्यति ॥ आषाढदशमीकृष्णासुभिक्षाचसरोहिणी ॥ ४८ ॥

अर्थ—हे प्रिये ! हे देवि ! इसप्रकार योग मैंने तुमको कहा. और हे पार्वति ! मेघ पीतवर्णवाले और कृष्णवर्णवाले होतेहैं ॥ ४७ ॥ हे देवि ! पिछली संध्यामें ये होतेहैं तथा आषाढ़कृष्णपक्षकी दशमी जो रोहिणीसे युक्त हो तो सुभिक्षा कही है ॥ ४८ ॥

एकादशीतुमध्यमास्याद्द्वादशीकालभंजनी ॥ किंवसंतादिभियोंगेतदाधात्रीजलप्लुता ॥ ४९॥ आषाढेरोहिण्यांदेविदशम्यां तुयदाभवेत् ॥ सार्द्धंगर्जतिअंभोदैर्नदीदूरेगृहंकुरु ॥ ५० ॥

अर्थ—और एकादशी मध्यम कही है. और द्वादशी कालको भंजन करनेवाली है. और जो वसंतादिक युक्त हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण होती है॥४९॥ हे देवि! आषाढ़में दशमीके दिन जो रोहिणी होवे तो मेघ आधी गर्जना करतेहैं तब नदीसे दूर घर करना ॥ ५० ॥

चतुरोपितदामासाञ्जलंवर्षतिनीरदः ॥ तस्मिन्दिनेचसूर्यश्चेन्निर्मलंदृश्यतेनभः ॥ ५१ ॥ तत्रतोयंनपश्यामिवर्जयित्वामहानदीं ॥ आषाढीपूर्णिमायांतुपूर्ववातोयदाभवेत् ॥ ५२ ॥

अर्थ—तब मेघ चौमासेभर जल वर्षते हैं और तिसी दिन सूर्य हों तो आकाश निर्मल दीख पड़ताहै॥ ५१ ॥ तहां मैं महानदी अर्थात् गंगादिकोंको छोंड़ अन्यत्र जल नहीं देंखताहू. और आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो पूर्वकी तर्फ पवन चलै ॥ ५२ ॥

निष्पत्तिःसर्वधान्यानामारोग्यंचभविष्यति ॥ आषाढ्यामग्निवातश्चेदस्थिशेषामहीतदा ॥ ५३ ॥ आषाढीपौर्णिमायांतुदक्षिणेयदिमारुतः ॥ सकूपेषुतडागेषुतथानिर्झरणेषुच ॥५४॥

अर्थ—तो संपूर्ण धान्योंकी उत्पत्ति और आरोग्यता होतीहै. और आषाढीके दिन अग्निकोणसें जो पवन चलै तो पृथ्वीमें हाड़मात्र बाकी रहैं और

कुछभी न रहै ॥ ५३ ॥ आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो दक्षिणकी तर्फ पवन चलै तो कुँवांसहित तलावोंमें तथा झरणोंमे ॥ ५४ ॥

तदानदृश्यतेतोयंदेविदेवोनवर्षति ॥ आषाढीपौर्णिमायांतुनैर्ऋतोयदिमारुतः ॥ ५५ ॥ विक्रयित्वातदासर्वंकर्त्तव्योधान्यसंग्रहः ॥ मासेषुपंचमेदेविलाभस्तुद्विगुणोभवेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ–हे देवि ! तबहीं जल नहीं दीख पड़ता और मेघ वर्षा नहीं करतेहैं, और आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो नैर्ऋतकोणमें पवन चलै ॥ ५५ ॥ तो सबको बेंचके धान्यके अर्थात् गेहूं आदिकोंको संग्रह करै. हे देवि ! पांच महींनामे दूना लाभ होताहै ॥ ५६ ॥

आषाढीपौर्णिमायांतुपश्चिमेयदिमारुतः ॥ निष्पत्तिःसर्वसस्यानांलोकेवर्षतिनीरदः ॥ ५७ ॥ आषाढीपौर्णिमायांतुवायव्यांयदिमारुतः ॥ नकुलाःशलभाश्चैवमूषकाश्चपतंतिवा ॥ ५८ ॥

अर्थ–आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो उत्तरकी तर्फ पवन चलै तो संपूर्ण प्रकारकी खेती उत्पन्न होतीहैं और लोकमें वर्षा होतीहै ॥ ५७ ॥ आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो वायव्यकोणमें पवन चलै तो नकुल (नेवला) टाड़ी अथवा मूष पड़तेहैं ॥ ५८ ॥

आषाढीपौर्णिमायांतुह्युत्तरेयदिमारुतः ॥ धनधान्यंसदादेविसमर्घेणसमन्वितः ॥ ५९ ॥ आषाढीपौर्णिमायांतुईशानेयदिमारुतः ॥ धर्मशीलास्तदालोकाधनंधान्यंगृहेगृहे ॥ ६० ॥

अर्थ–और आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन उत्तरकी तर्फ जो पवन चलै तो हे देवि ! धन धान्य सदा महँगईसे युक्त होताहै ॥ ५९ ॥ और आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो ईशान कोणमें पवन चलै तो मनुष्य धर्मशील होवें और घरघरके प्रति धन धान्य होवे ॥ ६० ॥

गीतवाद्यरतालोकाःसुभिक्षंप्रबलंभवेत् ॥ आषाढीपौर्णिमायांतुचतुर्दिक्षुचमारुतः ॥ ६१ ॥ धान्यानिचमहर्घाणिवह्निदाहः प्रकीर्तितः ॥ आषाढीत्वधिकांतस्यसमर्घंतुतदामतम् ॥ ६२ ॥

अर्थ—और मनुष्य गीतवाद्यमें रत होवें तथा प्रबल सुभिक्ष होवे. और आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो चारों तर्फ पवन चलै॥ ६१ ॥ तो संपूर्ण धान्य महँगी होवे और अग्निसे जलना कहा है. और जो आषाढ़ी पौर्णिमा अधिक हो तो महँगई कही है ॥ ६२ ॥

संवत्सरंवर्त्तमानंपश्चान्निष्पत्तिरुत्तमा ॥ निर्वातगगनादेविय दाषाढस्यपूर्णिमा ॥ ६३ ॥ तदाशुसर्वमेदिन्यांजलंनास्तीति कथ्यते ॥ पूर्णिमाहर्निशंदेविइदंचिन्हंप्रदृश्यते ॥ ६४ ॥

अर्थ—वह महँगई वर्षभर रहतीहै पीछे धान्योंकी उत्पत्ति अच्छी होतीहै. हे देवि ! जो आषाढ़की पौर्णिमाके दिन आकाश पवनसे रहित हो॥ ६३ ॥ तो शीघ्र संपूर्ण पृथ्वीमें जल नहीं है. ऐसा कहना. और हे देवि ! पौर्णिमा-को रात्रि दिन ये चिह्न देखना ॥ ६४ ॥

अस्तंगच्छतितीक्ष्णांशुःसस्यस्योत्पत्तिरुत्तमा ॥ आषाढीपौर्णि माषाढेवर्षायावच्छुभाभवेत् ॥६५॥ आवर्त्तेधान्यनिष्पत्तौप्रजा सौख्यमविग्रहं ॥ मूलश्चउत्तराषाढमधिसर्वत्रदृश्यते ॥ ६६ ॥

अर्थ—कि (उसी दिन) जो सूर्य अस्त होवें तो खेतीकी उत्पत्ति उत्तम होवे. और आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन आषाढ़में जबतक वर्षा शुभ होवे ॥६५॥ और जलके वर्षनेसे धान्यकी उत्पत्ति होवे. और विग्रहरहित प्रजावोंका सुख होवे. यह मूल, उत्तराषाढ़ ये नक्षत्रोंमें सब जगा देखना. ॥ ६६ ॥

एतच्चपरमंगुह्यंगर्भाधानसमुद्भवं ॥ विद्युत्संयोगजंसर्वंनदेयं यस्यकस्यचित् ॥ ६७ ॥ आषाढीपौर्णिमायांतुयदेंदुग्रहणंभवे त् ॥ तदावैसर्वसस्यानांसंग्रहंकारयेद्बुधः ॥ ६८ ॥

अर्थ—(हे पार्वति !) यह बिजुलीके संयोगसे उत्पन्न परमगुह्य (मेघोंके) गर्भा-धानकी उत्पत्ति तुह्मारेको कहा. सो यह संपूर्ण जिस किसीको न देना ॥६७॥ आषाढ़ी पौर्णिमाके दिन जो चंद्रग्रहण होवें तो निश्चय करके बुद्धिमान्के पुरुष संपूर्ण धान्योंका संग्रह करावै ॥ ६८ ॥

मासार्द्धेत्रिगुणोलाभोजायतेचवरानने ॥ नचात्रसंशयःकार्यो

मयाख्यातंतवप्रिये ॥ ६९ ॥ वर्षाकालेयदाभानुरार्द्राक्षेंयदिपा र्वति ॥ जलयोगस्तदाचिंत्योवृष्ट्यर्थेचप्रयत्नतः॥ ७० ॥

अर्थ–हे वरानने ! आधे महींनामें तिगुना लाभ होताहै. हे प्रिये ! यह हमने तुमको कहा है. इसमें संशय नहीं करना. ॥ ६९ ॥ हे पार्वति ! वर्षाके समय जो सूर्य आर्द्रा नक्षत्रके हों तो वृष्टिके लिये यत्नसे जलयोगकी चिंतना करै ॥ ७० ॥

एकनाडीसमायुक्तौचंद्रमाधरणीसुतौ ॥ यदितत्रभवेज्जीवस्त दाह्येकार्णवामही ॥ ७१ ॥ बुधःशुक्रसमीपस्थःकरोत्येकार्ण वांमहीं ॥ तयोरंतर्गतोभानुःसमुद्रमपिशोषयेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ–चंद्रमा मंगल एक नाड़ीमें हों और जो बृहस्पति तहांहीं हों तो पृथ्वी समुद्र एक हो जाताहै ॥७१॥ और जो बुध शुक्रके समीपमें स्थित हों तो एकार्णवा पृथ्वीको करतेहैं. अर्थात् पृथ्वी समुद्र एक हो जाताहै. और जो तिनके अंतर्गत सूर्य हों तो समुद्रको भी सुखा देवें ॥ ७२ ॥

हस्तत्रयंतथामूलःपूर्वात्रयंचरेवती ॥ पराणिचोत्तरात्रीणिरोहि णीजलयोगभं ॥ ७३ ॥ मकरस्थश्चमहिजोवृषस्थश्चदिवाकरः ज्येष्ठामूलगतःशुक्रःसमुद्रमपिशोषयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–हस्तसे आदि लेकर तीन नक्षत्र तथा मूल, तीनो पूर्वा, और रेवती वा पर तीनो उत्तरा, रोहिणी, ये जलयोगके नक्षत्र हैं ॥ ७३ ॥ मकरराशिमें मंगल स्थित हों और वृषराशिमें सूर्य हों और जेष्ठा या मूलमें शुक्र हों तो समुद्र भी सुखा देवें ॥ ७४ ॥

अश्लेषायांगतेभानौप्लावयेत्पर्वतानपि ॥ यदिचित्रांभृगौप्राप्ते समुद्रमपिशोषयेत् ॥ ७५ ॥ नानापतीनांकुराजसेनांस मुद्रवेलामिवदुर्निवार्यं ॥ निवारयत्येकरथेनपार्थश्चित्रांगतेशु क्रमिवापिवृष्टिं ॥ ७६ ॥

अर्थ–और आश्लेषानक्षत्रमें सूर्यको प्राप्त भयेपर पर्वतको डुबा देतेहैं और जो चित्रा नक्षत्रमें शुक्र प्राप्त हों तो समुद्रकोभी सुखा देवैं ॥ ७५ ॥ (श्री-

कृष्ण महाराज कहतेहैं कि) हे पार्थ ! (हे अर्जुन !) जैसे चित्रामें प्राप्त शुक्र अतिवर्षाको दूर करतेहैं तैसे अनेक देशोके पति कुत्सित राजों-की समुद्रकी बेलाकी नाईं दुःखसे निवारण करनेयोग्य सेनाको एकरथसे निवारण करो. ॥ ७६ ॥

चलत्यंगारकोदृष्टिरुदयेचबृहस्पतिः॥शुक्रस्यास्तसमयेचैवत्रिधावृष्टिःशनैश्चरः ॥ ७७ ॥ व्रजतियदिकुजःपतंगमार्गेघटमिवभिन्नतलंजलंददाति ॥ अथभयदोमंदश्चभौमश्चदेवतानांपुरोहितः ॥ ७८ ॥

अर्थ–मंगलको एकराशिसे दूसरी राशिमें चलनेपर वृष्टि होतीहै. और बृहस्पतिके उदयमें वृष्टि होतीहै. और शुक्रके अस्तसमयमें शनैश्चर तीन प्रकारसे वर्षा करतेहैं ॥ ७७ ॥ जो मंगल पतंगमार्गमें गमन करैं तो फूटे घड़ेकी नाईं जलको देतेहैं. इसके अनंतर भयके देनेवाले ग्रह मंद होवें. और मंगल, बृहस्पति एक राशिमें हों तो हे देवि! मेघ जलकी वर्षा करतेहैं ॥७८॥

एकराशिगतौदेवितदामेघोजलप्रदः ॥ यदिदिवाकरोग्रगश्चेत्प्रलयघनानपिशोषयत्यवश्यं ॥ ७९ ॥ उदयास्तगतेमार्गेववक्रयुक्तेचसंक्रमे॥जलराशिगताःखेटामहावृष्टिप्रदाग्रहाः॥८०॥

अर्थ–और जो मंगल बृहस्पति एक राशिमें हों तो मेघ जल देते हैं और इनके आगे सूर्य हों तो प्रलयके मेघोंकोभी अवश्य सुखा देवें ॥ ७९ ॥ और सूर्यको उदय अस्तके मार्गमें प्राप्त भयेपर और वक्र होके सक्रांतिभावको प्राप्त हों और जलराशिमें क्रूरग्रह प्राप्त हों तो वे क्रूरग्रह अत्यंत वृष्टिके देनेवाले हैं ॥८०॥

विशाखात्रिनपुंसाख्यंमूलात्पुंसश्चतुर्दश ॥ आर्द्रादिदशऋक्षाणिदेवियोषित्प्रकीर्तिताः ॥ ८१ ॥ द्वंद्वेस्त्रीशीतलंज्ञेयंउभयोःपुरुषेणच ॥ आषाढेनैववृष्टिःस्यात्तदाकिंचित्कृतोबुधैः ॥८२॥

अर्थ–विशाखासे तीन नक्षत्र नपुंसक हैं और मूलसे चौदा नक्षत्र पुरुष हैं और हे देवि ! आर्द्रासे आदि लेंकर दश नक्षत्र स्त्री कहे हैं ॥ ८१ ॥ वे स्त्री पुरुष नक्षत्रोंमें शीतलता जानना. और जो दोनो पुरुषसंज्ञक नक्षत्र

हों तो आषाढ़में वृष्टि न होवे तब बुधजनोंने कोई योग कहा है. ॥ ८२ ॥
इति आषाढ़फलं ॥

भविष्यतिवरोयोगःश्रावणेनोजलंयदि ॥ सप्तम्यांश्रावणेदेवि
यदास्तंव्रजतेरविः ॥ ८३ ॥ नदृष्टिर्नापिपर्जन्योघनामुंचंति
सर्वथा ॥ चित्रास्वातिविशाखासुश्रावणेचजलंयदि ॥ ८४ ॥

अर्थ–और जो श्रावणमें जल न वर्षे तो श्रेष्ठ योग होताहै. और हे देवि ! श्रावण महींनामें सप्तमीके दिन जो सूर्य अस्त होवें ॥ ८३ ॥ तो न तो वृष्टि होवे न मेघ आकाशमें होवें सब प्रकारसे मेघ निकल जातेहैं. चित्रा, स्वाती, विशाखा, इन नक्षत्रोंमें जो श्रावणमें जल न होवे ॥ ८४ ॥

तदाजलादिकंदुःखंसंकटंचापिसेवनं ॥ चित्रास्वातिविशाखा
सुयस्मिन्कालेनवर्षति ॥ ८५ ॥ तन्मासेनिर्जलामेघायदिवर्ष
तिवर्षति ॥ श्रावणेकृष्णपक्षेवापूर्वाभाद्रपदाभवेत् ॥ ८६ ॥

अर्थ–तो जलादिकका दुःख और संकटभी सेवनीय है. और चित्रा, स्वाती, विशाखा, इन नक्षत्रोंमें जिस समय वर्षा न होवे ॥ ८५ ॥ तिस महींनामें निर्जल मेघ वर्षतेहे हैं अथवा श्रावण महींनाके कृष्णपक्षमें जब पूर्वा-भाद्रपद नक्षत्र होवे ॥ ८६ ॥

चतुर्थ्यांयदिवर्षतितदावर्षतिनीरदः ॥ श्रावणेशुक्लसप्तम्यां
स्वातियोगेजलंभवेत् ॥ ८७ ॥ निष्पत्तिःसर्वसस्यानांप्रजाश्च
निरुपद्रवाः ॥ श्रावणेशुक्लसप्तम्यांचास्तंगच्छतिभास्करः ॥८८॥

अर्थ–तभी चौथिके दिन जो वर्षा होवे तो मेघ वर्षा करतेहैं और श्राव-णशुक्लपक्षमें सप्तमीके दिन जो स्वाती नक्षत्रमें जल होवे. ॥ ८७ ॥ तो संपूर्ण धान्योंकी उत्पत्ति होवे. और प्रजा उपद्रवसे रहित होवें. और श्रावणशुक्ल सप्तमीके दिन जो सूर्य अस्त होवें ॥ ८८ ॥

नवृष्टिर्नचपर्जन्योजलासाम्यंचसर्वथा ॥ श्रावण्यांतुअमावास्यां
गर्भमुत्प्लवतेतदा ॥ ८९ ॥ उत्तरेकृष्णमेघःस्यात्पूर्वेदेवितथैव
च ॥ श्रावणीपौर्णिमायांचश्रवणर्क्षजलंभवेत् ॥ ९० ॥

अर्थ–तो न तो वृष्टि होवे न मेघ (आकाशमें) दीख पड़ैं तब सब प्रकारसे जलकी आशा छोंड़ देना. और श्रावणी अमावास्याको जो मेघोंका गर्भ उत्प्लव न करै ॥ ८९ ॥ तो उत्तरदिशामें कृष्ण मेघ हैं और हे देवि ! पूर्वमें तिसी प्रकार जानना. और पौर्णिमाके दिन श्रवणनक्षत्रमें जो जल होवे ॥ ९० ॥

सुभिक्षंचसमादेश्यंतस्मिन्वर्षेनसंशयः ॥ श्रावणेमासिसंक्रांतौ यदावर्षतिनीरदः ॥ ९१ ॥ बहुसस्याभवेत्पृथ्वीप्रजासौख्यम विग्रहं ॥ श्रावणीपौर्णिमायांतुयदींदुग्रहणंभवेत् ॥ ९२ ॥

अर्थ–तो तिस वर्षमें संशयरहित सुभिक्ष होवेगा. और श्रावणमासमें संक्रांतिके दिन जो मेघ वर्षा करैं ॥९१॥ तो पृथ्वी बहुत खेतियोंकी उत्पन्न करनेवाली होतीहै. और विग्रहरहित प्रजाको सुख होताहै. और श्रावणी पौर्णिमाके दिन जो चंद्रग्रहण होवे ॥ ९२ ॥

घृतंतैलंतथाधान्यंसंग्रहेच्चविचक्षणैः ॥ मासेवैआश्विनेदेविद्धि गुणंलाभमादिशेत् ॥ ९३ ॥ दुर्भिक्षंजायतेवश्यंमयाख्यातंतव प्रिये ॥ श्रवणेश्रवणंदेवियदिवर्षतिमाधवः ॥ ९४ ॥

अर्थ–तो बुद्धिमान् लोगोंने घृत, तेल तथा धान्यको संग्रह करना. हे देवि ! निश्चय करके कुँवांर महींनामें दूना लाभ दीखताहै. ॥ ९३ ॥ और हे देवि ! श्रावणमासमें श्रवण नक्षत्रमें जो मेघ वर्षा करैं तो दुर्भिक्ष होताहै. हे प्रिये ! यह हमने तुमको कहा. ॥ ९४ ॥

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांदशम्येकाशीदिने ॥ पूर्णमासीद्धितीया दियावैभवतिपंचमी ॥ ९५ ॥ मध्याह्नेजलसंभूतेसंध्याकालेषु वर्षति ॥ पश्चिमेदिवसेभागेवर्षाभवतिभूयसी ॥ ९६ ॥

अर्थ–और श्रावणशुक्लमें सप्तमीके दिन और दशमी तथा एकादशीके दिन और पूर्णिमाके दिन वा दुइजके दिन अथवा पंचमी होवे ॥ ९५ ॥ इन दिनोंमें दुपहरके समयमें मेघ जलसे घेरे होंवें और सायंकाल वर्षा होवे तो दूसरे दिन पीछले पहर अत्यंत वर्षा होतीहै. ॥ ९६ ॥

त्रिरात्रंवर्षतेमेघःप्रभातेविमलंभवेत् ॥ अमावस्यांभवेच्चैवश्राव

णेपरमेश्वरि ॥ ९७ ॥ गर्भउत्पतेतस्मिन्नुत्तरेकृष्णकालिका ॥ भवंतिपर्वताकारंधूम्रवर्णसुरेश्वरि ॥ ९८ ॥

अर्थ—और तीनरात्रि मेघ वर्षा करते हैं परंतु प्रातःकाल निर्मल होतेहैं. और हे परमेश्वरि! श्रावणमें अमावास्याके दिन ऐसाही होताहै ॥ ९७ ॥ और तिसी अमावास्याके दिन मेघोंका गर्भ पतन होताहै. और उत्तर दिशामों पर्वतके समान कालीघटा घेरतीहै. और हे सुरेश्वरि! धूम्रवर्ण होजाता है ॥ ९८ ॥

पीतवर्णोभवेन्मेघःसंध्याकालेषुजायते ॥ सविद्युताभवेद्वृष्टिः शुभंमारुतैर्युतः ॥९९॥ सार्कचंद्रंनभच्छन्नंधारणाशुभउच्यते ॥ मौक्तिकंशंखवर्षासुशुभवायुक्रियाप्रिये ॥ ३०० ॥ इतिश्रावणफलं ॥

अर्थ—और पीतवर्ण मेघ जो संध्यासमयमें होवें तो उत्तम पवनोंसे युक्त बिजुलीसहित वृष्टि होतीहै. ॥ ९९ ॥ और (मेघोंकी घटासे) चंद्रसहित सूर्य छिप जावें तो शुभ धारणा कही है. और हे प्रिये ! मौक्तिक, शंख, ये शुभ वायुकी क्रिया कहीं हैं ॥ ३०० ॥ इति श्रावणफलम् ॥

भाद्रस्यशृणुदेवेशियेनजानंतिपंडिताः ॥ १ ॥ चतुर्थीशुक्लपक्षस्यपंचमीचैवसुंदरि ॥ सप्तमीचाष्टमीचैवपूर्णिमायांतुजायते ॥ २ ॥

अर्थ—हे देवेशि ! भादों महींनाका (वृत्तान्त) सुनो. जिससे विद्वान् लोग सब बातको जानै ॥ १ ॥ और हे सुंदरि! भादों महींनामें शुक्लपक्षकी चौथि वा पंचमी सप्तमी तथा अष्टमी वा पूर्णिमा इन तिथियोंमें एक जगा वा अंतरसे (मेघोंकी पंक्ति) पर्वतकी मालासमान होतीहै. हे देवि ! पांचदिन ये तिथि तिसप्रकार हों ॥ २ ॥

एकत्रसंधिकाचैवभेवत्पर्वतमालिका ॥ दशपंचदिनंदेविएतानितिथयस्तथा ॥ ३ ॥ गर्भतेनात्रसंदेहोवर्षतेसप्तरात्रिकं ॥ इत्येवंकथितंदेवियादृशंगर्भलक्षणं ॥ ४ ॥

अर्थ–तो मेघोंका गर्भ संदेहरहित सातरात्रि वर्षा करताहै. हे देवि ! जिसप्रकार भादोंमें मेघोंके गर्भका लक्षण है सो इसप्रकार हमने कहा. ॥३॥४॥

एकमेघार्णवाचैवपृथ्वीभाद्रपदेभवेत् ॥ मासिभाद्रपदेदेविसंक्रांतौयदिवर्षति ॥ ५ ॥ बहुरोगाःसदाप्रोक्ताआश्विनेनैव शोभनाः ॥ एकमासेक्रूरवारानैवपंचशुभावहाः ॥ ६ ॥

अर्थ–भादोमें पृथ्वी जलयुक्त मेघोंसहित होतीहै. और हे देवि ! भादों महींनामें संक्रांतिके दिन जो वर्षा होवे ॥ ५ ॥ तो सदा बहुत रोग कहेहैं. और कुँवांरमे भी शुभ नहीं होता और एकही महींनामें शनैश्चरादिक पांच क्रूर वार शुभ नहीं हैं ॥ ६ ॥

अमावस्यार्कवारेणमहर्घाणिभवंतिहि ॥ यदाभाद्रपदेमासिप्रतिपद्दशमीतिथौ ॥ ७ ॥ सप्तमीपूर्णिमादेविनवमीचयथाक्रमं ॥ तथामेघांश्चपश्यामिपश्चिमायांदिशिस्थितान् ॥ ८ ॥

अर्थ–और अमावास्या रविवारसे युक्त हो तो महँगई होतीहै. और जो भादों महींनामें प्रतिपदा वा दशमी तिथिमें ॥ ७ ॥ और हे देवि ! सप्तमी, पूर्णिमा, नौमी, इन्होंमें यथाक्रमसे पश्चिम दिशामें स्थित मेघ देखना ॥ ८ ॥

तावद्वर्षतिसततंबहूदकंविनिर्दिशेत् ॥ मासर्क्षात्पूर्णिमाहीना समानायदिवाधिका ॥ ९ ॥ समर्घंचसमार्घंचमहर्घंचक्रमाद्भवेत् ॥१०॥ इतिभाद्रपदफलं ॥ सप्तमीचाश्विनीयुग्मासिताष्टमीजलान्विता ॥ सुभिक्षंतत्रचादिश्यंराजानःशांतविग्रहाः ॥११॥

अर्थ–तो निरंतर मेघ वर्षतेहैं और बहुत जल दीख पड़ताहै. और महीनाके नक्षत्रसे पूर्णिमा हीन हो वा समान हो अथवा अधिक हो ॥ ९ ॥ तो (अन्नादिकोंका) सस्तापन और समतापन वा महँगापन क्रमसे होताहै. इति भाद्रपदफलम् ॥ और सप्तमी, अश्विनी भरणीसे युक्त हो तो सिताष्टमी जलसे युक्त होतीहै. तब तहां सुभिक्ष होताहै. और राजालोगोंका विग्रह शांत होताहै ॥ ३१० ॥ और जो कुँवार महींनामें प्रतिपदा और दशमीमें और चैत्रमें अष्टमीके दिन जो मेघ आकाशमें गमन करैं अर्थात् आकाशमें प्राप्त हों ॥ ११ ॥

यदाचाश्वियुतेमासिप्रतिपद्दशमीषुच ॥ चैत्रेचैवचाष्टम्यांमेघा गमनमम्बरे ॥ १२ ॥ क्षिप्रंवृष्टिंविजानीयादग्रकालेभविष्य ति॥ आश्विनेकथितंदेवियादृशंवृष्टिलक्षणं ॥ संध्याकालेषुयेमे घापर्वताकारसंनिभाः ॥ १३ ॥ आदित्यास्तमनंतत्रअहोरात्रं प्रवर्षति ॥ इतिआश्विनफलं ॥ इतिश्रीमेघमालायांसारोद्धारे उमामहेश्वरसंवादेकार्त्तिकादिमासानांगर्भस्वरूपदृष्टिफलकथ नोनामाष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

अर्थ–तो अगाड़ीके समयमें शीघ्र वृष्टि होवेगी. ऐसा जानना. हे देवि ! कुँवारमें जैसा वृष्टिका लक्षण है सो हमने कहा ॥ १२ ॥ और सायंकालमें पर्वतके आकारवाले जे मेघ हैं वे सूर्यका अस्त हो तहां रात्रि दिन वर्षतेहैं॥१३॥ इति आश्विनफलम् ॥ इति श्रीभाषाटीकायुतमेघमालायां सारो-द्धारे उमामहेश्वरसंवादे कार्तिकादिमासानां गर्भस्वरूपवृष्टिफलकथनो नामा-ष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

अथमेघविद्युत्वातफलं ॥ ईश्वरउवाच ॥ अन्यंचकथयिष्या मिश्रृणुतत्वेनभामिनि ॥ मेघविद्युत्समायोगंयेनजानंतिपंडि ताः ॥ १ ॥ पूर्वस्यांदिशिसंध्यायांयदामेघाकुलंनभः ॥ कश्चि द्दंष्ट्रासमाकारःकश्चिद्धस्तिसमःप्रिये ॥ २ ॥

अर्थ–इसके अनंतर मेघ, बिजुली, अथवा पवनका फल कहतेहैंः– महा-देवजी कहते हैं कि हे भामिनि ! और भी मेघ बिजुलीके संयोगको कहता-हूं. सो निश्चयसे सुनो. जिससे पंडितलोग जानैं. ॥ १ ॥ हे प्रिये ! पूर्वदि-शामें संध्यासमय जो आकाश मेघोंसे आकुल हो और मेघ कोई डाढ़की आकारवाले कोई हाथीकी समान ॥ २ ॥

केचित्सिंहसमाकाराःकेचित्पर्वतसन्निभाः ॥ केचिन्मकरम त्स्यास्याकेचिन्मृगसमाःप्रिये ॥ ३ ॥ एवमेवयदामेघाःपंचरा त्रंप्रवर्षते ॥ विज्ञेयंसप्तरात्रंवावृष्टिंवर्षतितोयदः ॥ ४ ॥

अर्थ—कोई सिंहके समान आकारवाले, कोई पर्वताकार, कोई मकर वा मत्स्यके मुखकी आकार और हे प्रिये ! कोई मृगके समान ॥ ३ ॥ इस प्रकारके जो मेघ हों तो पांच रात्रि वर्षतेहैं अथवा सात रात्रि मेघ वर्षतेहैं ऐसा जानना ॥ ४ ॥

उत्तरादिशिसंध्यायांदृश्यतेनगमालिका ॥ अर्बुदैःसदृशामेघा यदादृश्यंतिपार्वति ॥ ५ ॥ वर्षतेसप्तरात्राणिचार्द्धरात्राणिभैरवि ॥ मकरैःसदृशोमेघोयदादेविप्रदृश्यते ॥ ६ ॥

अर्थ—और उत्तर दिशामें सायंकाल जो पर्वताकार मेघोंकी माला दीख पड़ै और अर्बुदकी सदृश मेघ दीखैं ॥ ५ ॥ तो हे भैरवि ! (हे पार्वति !) अर्धरात्रिके समय सात रात्रि वर्षा होतीहै. और हे देवि ! जो मकरकी सदृश मेघ देंख पड़ें ॥ ६ ॥

वर्षतेचत्रिरात्रेणसप्तरात्रंतथापिवा ॥ आग्नेय्यांचयदामेघोदृश्यतेसुरसुंदरि ॥ ७ ॥ रात्रौवर्षतिजीमूतोभैरवेणेतिभाषितं ॥ ईशानेचयदामेघाजायंतेकृष्णपर्वताः ॥ ८ ॥

अर्थ—तो तीन रात्रि अथवा सात रात्रि वर्षा होतीहै. और हे सुरसुंदरि ! वही मेघ जो आग्नेयकोणमें देख पड़ें ॥ ७ ॥ तो रात्रिमें मेघ वर्षतेहैं. यह भैरवने कहा है. और ईशानकोणमें मेघ काले पर्वतकी समान होवें ॥ ८ ॥

वर्षतिचयदामेघाःसंध्याकालेथवाप्रिये॥वायव्यांचयदामेघोजायतेवरवर्णिनि ॥ ९ ॥ वातवृष्टिर्हिजानीयाद्रात्रौस्यात्प्रहरादिमे ॥ मेघास्तुकथितादेविदिशाचाष्टौप्रकीर्त्तिताः ॥ १० ॥

अर्थ—अथवा हे प्रिये ! जो मेघ सायंकाल वर्षैं और हे वरवर्णिनि ! जो वायव्यकोणमें मेघ होवें ॥ ९ ॥ तो रात्रिके प्रथम पहरमें पवनयुक्त वर्षा होवेगी, ऐसा जानना. और हे देवि ! इसप्रकार मेघ कहे. और आठ दिशा कहीं ॥ १० ॥

वायुधारिणंमेघंचशृणुतत्वेनसुंदरि ॥ वायुलक्षणंविज्ञेयंपूर्वादौ

यत्फलंभवेत् ॥ ११ ॥ सुभिक्षंपूर्ववातेनजायतेनात्रसंशयः ॥
दक्षिणेक्षेममारोग्यंनैऋत्यांदुःखदोभवेत् ॥ १२ ॥

अर्थ–अब हे सुंदरि ! निश्चयसे पवनका धारण करनेवाले मेघको सुनो. और वायुका लक्षण जाननेयोग्य है. जो पूर्व आदिक दिशावोंमें फल होताहै ॥ ११ ॥ पूर्वदिशामें जो पवन चलै तो सुभिक्ष होवे, इसमें संशय नहीं है. और दक्षिणमें क्षेम तथा आरोग्य होतीहै. और नैऋत्यकोणमें वायु चलै तो दुःखकारी होतीहै ॥ १२ ॥

वारुण्यांदिव्यधान्यानिवायव्यांवायुःखेभवेत् ॥ उत्तरेशुभदादेविऐशान्यांसर्वसंपदः ॥ १३ ॥ इतिमेघवातफलं ॥ वायुधारणंमेघानांकथितंतवसुंदरि ॥ विद्युलक्षणचिह्नानिह्यष्टदिक्पूर्वतःफलं ॥ १४ ॥

अर्थ–और वारुणी दिशामें दिव्य धान्य होतीहै. और वायव्यकोणमें जो पवन चलै तो वायु आकाशमें है. और हे देवि ! उत्तरकी वायु शुभके देनेवाली है, और ईशानकोणकी वायु संपूर्ण संपदाको देतीहै ॥ १३ ॥ इति मेघवातफलं ॥ हे सुंदरि ! वायुके धारण करनेवाले मेघ तुमको हमने कहा. और बिजुलीके लक्षण तथा चिन्ह और आठ दिशा, इन्होंका पूर्वसे फल कहा ॥ १४ ॥

पूर्वेविद्युत्करामेघाआग्नेय्यांजलशोषकाः ॥ दक्षिणेरौरवंघोरंनैऋत्यांभयमादिशेत् ॥ १५ ॥ सुभिक्षंपश्चिमेदेविवायव्यांसुखसंपदः ॥ उत्तरेवर्षतेमेघस्त्वीशानेविजयीभवेत् ॥ १६ ॥
इति मेघमालायांविद्युत्फलकथनोनामनवमोध्यायः ॥ ९ ॥

अर्थ–पूर्वके मेघ बिजुली करनेवाले हैं और आग्नेयकोणके मेघ जलके सुखानेवाले हैं और दक्षिणके भयंकर अकाल करनेवाले हैं. और नैऋत्यकोणके मेघ भयको दिखातेहैं ॥ १५ ॥ और हे देवि ! पश्चिमके मेघ सुभिक्ष करतेहैं. और वायव्यकोणके मेघ सुख तथा संपत्तिको देतेहैं. और जो उत्त-

रमें मेघ वर्षा करैं तो ईशानकोणमें विजय होताहै ॥ १६ ॥ इति श्रीभाषाटीकायुतमेघमालायां विद्युत्फलकथनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथदेशविदेशान्मेघानामावाहनंलिख्यते ॥ यदिमेघानवर्षंति शृणुसुंदरितत्त्वतः ॥ आकर्षणमंत्रयंत्रंपूर्वाच्चैवविशेषतः ॥१॥ दिशोमेघसमाह्वानंयेनजानंतिपंडिताः ॥ अमदःप्रमदोदेवि सुभद्रोमहिषस्तथा ॥ २ ॥

अर्थ—इसके अनंतर देश तथा विदेशसे मेघोंका आवाहन मंत्रसे लिखा जाताहै. हे सुंदरि जो मेघ न वर्षा करैं तो पूर्वसे विशेषकरके मेघोंका मंत्र-यंत्रसे आकर्षण निश्चयसे सुनो ॥ १ ॥ दिशोंसे मेघोंका जो बोलानाहै (सो मै कहताहूं) जिससे पंडितलोगभी जानैं. (उन्होंके नाम कहतेहैं) कि हे देवि ! अमद, प्रमद, तथा सुभद्र, वा महिष, ॥ २ ॥

चंडिकःसिंहनादश्चवाराहोवारिदस्तथा ॥ एतेमेघासुविख्याताःपूर्वस्यांदिशिसंस्थिताः ॥ ३ ॥ आनंदोकालदंडश्चशूकरोवृषभस्तथा ॥ धूम्रोथमूशलश्चैवनीलजीमूतमेवच ॥ ४ ॥

अर्थ—और चंडिक, सिंहनाद, वाराह, बारिद, पूर्वदिशामें स्थित ये मेघ विख्यात हैं ॥ ३ ॥ और आनंद, कालदंड, शूकर तथा वृषभ, धूम्र, मूशल, नील, जीमूत, ॥ ४ ॥

एतेमेघास्तुविख्यातादक्षिणस्यांदिशिस्थिताः ॥ कुंजरोकाल-मेघश्चयमनःकलिशांतिकः ॥ ५ ॥ दुंदुभिर्लेखकोदेविशुभोमकरक्षत्रियः ॥ मृगनाभोत्रिनेत्रश्चदशमेघाःप्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

अर्थ—दक्षिण दिशामें स्थित ये मेघ विख्यात हैं. कुंजर, कालमेघ, यमन, कलिशांतिक ॥ ५ ॥ हे देवि ! दुंदुभि, लेख्यक, शुभ, मकर, क्षत्रिय, मृग-नाभ, अत्रिनेत्र, ये दश मेघ कहे हैं ॥ ६ ॥

एतेमेघास्तुविख्याताःपश्चिमांदिशमाश्रिताः ॥ चंडीशोभैरवो देविस्वस्तिकोमलकस्तथा ॥ ७ ॥ राजानंदोवृषश्चैवगुह्यरोमास्तथैवच ॥ एतेमेघाउत्तरस्यांकथितातवसुंदरि ॥ ८ ॥

अर्थ–और ये मेघ पश्चिमदिशामें स्थित विख्यात हैं. और हे देवि ! चंडीश, भैरव, स्वस्तिक, तथा मलक, ॥ ७ ॥ राजानंद, वृष, तथा गुह्यरोमा, हे सुंदरि ! ये मेघ उत्तरदिशामें रहेनेवाले तुमको कहे ॥ ८ ॥

ओंकारोनंदमृत्युश्चमधुरोश्रियकस्तथा ॥ चंडिकांतःकिरातश्च किरणःसंभवस्तथा ॥ ९ ॥ हेमाभःपर्वताभश्चबह्वाभायनपौतथा ॥ द्वादशमेघाविख्याताश्चतुर्विदिक्षुसंस्थिताः ॥ १० ॥

अर्थ–ओंकार, नंद, मृत्यु, मधुर तथा श्रियक, तथा चंडिकांत, किरात, किरण, तथा संभव ॥ ९ ॥ हेमाभ, पर्वताभ, बह्वाभ, तथा अयनप ये बारह मेघ चार विदिशोंमें रहनेवाले विख्यात हैं ॥ १० ॥

अन्यंचश्रृणुदेवेशियेनजानंतिपंडिताः ॥ मेघाह्वानंकरिष्यंति यत्रस्थानंप्रतिष्ठितं ॥ ११ ॥ कांचीनामनगर्य्यांचसुबुद्धोमेघउच्यते ॥ तत्रस्थानिवासीभिस्तस्याह्वानंचकारयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ–हे देवेशि ! औरभी सुनो. जिससे पंडितलोग जिन स्थानोंमें स्थित मेघोंका जानै. और आह्वान करैं ॥ ११ ॥ कांचीनाम नगरीमें सुबुद्ध, मेघ कहा है. इससे तिस स्थानके रहनेवाले तिसहीको अह्वान करैं ॥ १२ ॥

द्वारावतीनगर्यांचकन्यदोमेघउच्यते ॥ तत्स्थाननिवासिभिस्तस्याह्वानंचकारयेत् ॥ १३ ॥ अवंतीनगराधीशोविकर्त्तनोबलाहकः ॥ आह्वानयेत्तुदेवेशितत्रस्थाननिवासिभिः ॥ १४ ॥

अर्थ–और द्वारावती नगरीमें कन्यद मेघ कहा है. इससे तहांके रहनेवाले तिसहीका आह्वान करैं ॥ १३ ॥ और अवंतीनगरका मालिक विकर्त्तन नाम मेघ है. हे देवेशि ! इससे तहांके रहनेवाले तिसहीको आवाहन करैं ॥ १४ ॥

वैश्यानामनगर्यांचसारंबुदःपयोधरः ॥ तत्रस्थाननिवासिभिस्तस्याह्वानंचकारयेत् ॥ १५ ॥ शोणितानामनगरींहेममालीहिरक्षति ॥ आह्वानयेत्तुदेवेशितत्रस्थाननिवासिभिः ॥ १६ ॥

अर्थ–वैश्यानाम नगरीमें सारंबुद मेघ स्थित रहताहै. इससे तहांके रहनेवाले तिसहीको आवाहन करैं ॥ १५ ॥ और शोणिता नाम नगरीको हेम-

माली रक्षा करताहै. हे देवेशि ! इससे तहांके रहनेवाले तिसहीका आह्वान करैं ॥ १६ ॥

कुरुक्षेत्रेमहाक्षेत्रेजलेंद्रोमेघउच्यते ॥ तत्रस्थाननिवासिनामुचितंतस्यपूजनं ॥ १७ ॥ हस्तिनापुरमध्येतुवज्रदंष्ट्रोबलाहकः ॥ आह्वानंतस्यकर्त्तव्यंतत्रस्थाननिवासिभिः ॥ १८ ॥

अर्थ—और महाक्षेत्र कुरुक्षेत्रमें जलेन्द्र मेघ कहा है. इससे तहांके रहनेवालोंको तिसका पूजन उचित है ॥ १७ ॥ और हस्तिनापुर नगरमें वज्रदंष्ट्र मेघ कहा है. इससे तहांके रहनेवालोको तहां तिसहीको आह्वान करना चाहिये ॥ १८ ॥

हस्तिचंद्रनगर्य्यांचवृषभश्चधनस्तथा ॥ तस्यैवाह्वानमुचितंदेवितत्रनिवासिनां ॥१९॥ अथमेघाह्वानमंत्राःलिख्यंते ॥ ओंह्रींमेघद्वितीयायनमःप्रथममंत्रः ॥ १ ॥ ओंह्रींमेघद्वितीयकंनामस्वाहा २ ओंह्रींमेघद्वितीयकंकमलोद्भवायनमः ३ ओंह्रींमहानिधिराज्ञेहिमवंतवासिनेमेघराजायस्वाहा ॥ ४ ॥ अधरनिवासिनेमेघराजायस्वाहा ॥५॥ ओंह्रींनंदकेशराजाय अध्वरनिवासिनेमेघराजायस्वाहा ॥ ६ ॥ एतेमंत्रास्तुविख्यातामेघस्याह्वानकर्मणि ॥ एकैकस्यचमंत्रस्यजपमष्टोत्तरंशतं ॥ २० ॥

अर्थ—और हस्तिचंद्र नगरीमें वृषभ तथा धन ये दो मेघ रहतेहैं. हे देवि! इससे तहांके रहनेवालोंका तिनहींको आवाहन उचित है ॥ १९ ॥ इसके अनंतर मेघोंके आवाहनके मंत्र लिखतेहैं । 'ओं ह्रीं मेघद्वितीयाय नमः१' यह प्रथममंत्र है । 'ओं ह्रीं मेघद्वितीयकं नाम स्वाहा' ॥ २॥ यह दूसरा मंत्र । 'ओं ह्रीं मेघद्वितीयकं कमलोद्भवाय नमः' ॥ ३॥ यह तिसरा मंत्र । 'ओं ह्रीं महानिधिराज्ञे हिमवंतवासिने मेघराजाय स्वाहा' ॥४॥ यह चतुर्थ मंत्र। 'अधरनिवासिने मेघराजाय स्वाहा' ॥५॥ यह पांचवां मंत्र । 'ओं ह्रीं नंदकेशराजाय अध्वरनिवासिने मेघरा-

जाय स्वाहा ' ॥ ६ ॥ यह छठवां मंत्र है । ये मंत्र मेघोंके आवाहनकर्ममें अर्थात् मेघोंके बोलानेमें विख्यात हैं. एक एक मंत्रको १०८ बार जप करना कहा है ॥ २० ॥

पुष्पंहरितंरक्तंश्वेतंचकर्बुरंतथा ॥ भूधराधिकपश्यंतिसममं त्रप्रवर्त्तकः ॥ २१ ॥ अंबुदागोलकश्चैवगिरिणारोपकस्तथा ॥ सर्वंपतंखिषिंदाश्चकोटिभारंतथैवच ॥ २२ ॥

अर्थ—पुष्प, हरित, रक्त, श्वेत, तथा कर्बुर, भूधराधिक, पश्यंति, सम, मंत्रप्रवर्त्तक ॥ २१ ॥ अंबुद, अगोलक, तथा गिरिणारोपक, सर्वंपतंखि, षिंद तथा कोटिभार ॥ २२ ॥

एतेतुमेघाविख्याताःसप्तैषांबलवासिनः ॥ समंतात्पूजयेन्मेघं पुष्पधूपादिभिस्तथा ॥ २३ ॥ बलिकर्मणसंयुक्तंवर्जयित्वाम हानदीं ॥ आषाढेषुचमासेषुरोहिणीवर्षतेयदि ॥ २४ ॥

अर्थ—इतने मेघ विख्यात हैं और इन्होंके सात बलवासी हैं. इन सबको चारोंतरफसे पुष्पधूपादिकोंसे पूजन करै ॥ २३ ॥ वह पूजा बलिदानसे युक्त करै. परंतु गंगादिक नदियोंके किनारे बलिदान न करै और आषाढ़महीं-नामें जो रोहिणी नक्षत्रमें वर्षा होवे ॥ २४ ॥

पुनराषाढसंयोगेभावीवर्षतिनीरदः ॥ नैवेद्यंविविधंकृत्वापूज नीयंप्रयत्नतः ॥ २५ ॥ प्रविश्यार्द्धंजलेदेविजपेन्मंत्रंसहस्रकं ॥ कुसुमंकरवीराख्यंश्रीफलागुग्गुलंतथा ॥ २६ ॥

अर्थ—तो फिर आषाढ़मासमें भावीनामक मेघ वर्षताहै. इससे अनेक प्रकारकी नैवेद्य करके यत्नसे पूजन करै ॥ २५ ॥ हे देवि ! पुनः कमरतक जलमें प्रवेश करके हजारबार मंत्रका जप करै. और कुसुमके फूल, कनैरके फूल, नारियल तथा गूगुल ॥ २६ ॥

अष्टोत्तरशतंहोमंप्रचुरंमधुसर्पिषा ॥ वर्षतेनात्रसंदेहोयथारुद्रेण भाषितं ॥ २७ ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेमेघाह्वानवर्णनोनामदश मोध्यायः ॥ १० ॥

अर्थ—इन चीजोंसे और अधिक सहत तथा घीसे अष्टोत्तरशत हवन करै.

तो जैसा महादेवजीने कहा है उसी प्रकार वर्षा होतीहै. इसमें संदेह नहीं है ॥ २७ ॥ इति श्रीभाषाटीकायुते रुद्रयामले मेघाह्वानवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

वृक्षस्यपूर्वशाखायांवायसःकुरुतेगृहम् ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसुवृष्टिःसस्यसंपदः ॥ १ ॥ अग्निकोणस्यशाखायांवायसःकुरुतेगृहम् ॥ दुर्भिक्षंचविजानीयान्नैववर्षतितोयदः ॥ २ ॥

अर्थ–वृक्षकी पूर्वशाखामें जो कौवा अपने रहनेकी जगह करै तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य, उत्तम वृष्टि और खेतीकी उत्पत्ति होवे ॥ १ ॥ और वृक्षके अग्निकोणकी शाखामें जो कौवा अपने रहनेकी जगा करै तो दुर्भिक्ष जानना. और मेघ वर्षाभी नहीं करतेहैं ॥ २ ॥

दक्षिणेयदिशाखायांवायसःकुरुतेगृहम् ॥ हाहाकारंमहारौद्रंविग्रहंचसमादिशेत् ॥ ३ ॥ शाखामाश्रित्यनैऋत्यांवायसःकुरुतेगृहम् ॥ द्वौमासौवर्षतेमेघस्तुषारंजायतेतदा ॥ ४ ॥

अर्थ–जो वृक्षकी दक्षिणतर्फकी शाखामें कौवा अपने रहनेकी जगा करै तो महाभयंकर हाहाकार होवे और विग्रहभी देखनेमें आवे ॥ ३ ॥ और वृक्षकी नैऋत्यकोणकी शाखाका आश्रय करके जो कौवा घर करै अर्थात् अपने रहनेकी जगा करै तो दो महीना मेघ वर्षा करतेहैं. पीछे पाला परताहै ॥ ४ ॥

क्रियतेपश्चिमशाखायांवायसेनगृहंयदि॥नचवृष्टिंविजानीयात् कथितंतेमहेश्वरि ॥ ५ ॥ वायव्यकोणगःकाकोयदिवाकुरुतेगृहम् ॥ वातवृष्टिंविजानीयात्कथितंकाललक्षणम् ॥६॥

अर्थ–और वृक्षकी पश्चिमशाखामें जो कौवा अपने रहनेकी जगा करै तो हे महेश्वरि ! वर्षा नहीं होगी ऐसा जानना. यह तुमको कहा ॥ ५ ॥ और वृक्षकी वायव्यकोणकी शाखामें प्राप्त होकर जो कौवा घर करै तो पवनयुक्त वृष्टि जानना. इसप्रकार कालका लक्षण कहा ॥ ६ ॥

उत्तरायांयदाकाकःकरोतिगृहमुत्तमम्॥सुभिक्षंजायतेधान्यमा

रोग्यसुखसंपदः ॥ ७ ॥ ईशानेकोणेयदिवैवायसःकुरुतेगृहम् ॥ स्वात्योदकास्तथामेघाःकृषिश्चपरितुष्यति ॥ ८ ॥

अर्थ—और वृक्षकी उत्तरदिशाकी शाखामें जो कौवा अपना उत्तम गृह करै, तो धान्य वो सुभिक्ष करताहै और आरोग्य तथा सुखसंपदाको करताहै ॥ ७ ॥ और वृक्षकी ईशानकोणकी शाखामें जो कौवा घर करै तो स्वाती नक्षत्रमें मेघ वर्षा करैं और खेतीभी संतुष्ट होवे अर्थात् उत्तम होवे ॥८॥

यदिवामध्यशाखायांवायसःकुरुतेगृहम् ॥ अनावृष्टिर्विजानीयात्कथितंकाललक्षणम् ॥ ९ ॥ वल्मीकभूमिमाश्रित्यवायसःकुरुतेगृहम् ॥ मारीचौरभयंविंद्यान्नैववर्षतितोयदाः ॥ १० ॥

अर्थ—और वृक्षकी बीच शाखामें जो कौवा घर करै तो वर्षा नहीं होवेगी, ऐसा जानना. इसप्रकार काकका लक्षण कहा ॥ ९ ॥ और बेंबउरिसंबंधी पृथ्वीका आश्रय लेकर जो कौवा घर करै तो महामारी और चोरोंका भय जानना. और मेघ वर्षाभी नहीं करतेहैं ॥ १० ॥

शुष्कवृक्षेगृहंकुर्याच्चौरस्यचभयंभवेत् ॥ राजविग्रहमाप्नोतिमहाराजभयंभवेत् ॥ ११ ॥ अन्यज्ज्ञानंप्रवक्ष्यामिवायसेनयथोदितम् ॥ शुभमेवाशुभंवापियथाशास्त्रस्यनिश्चयम् ॥ १२ ॥

अर्थ—और सूखे वृक्षमें जो कौवा घर करै तो महामारी तथा चोरोंका भय होवे और राजावोंका विग्रह होवे. और महाराज अर्थात् चक्रवर्ती राजाको भय होवे ॥ ११ ॥ औरभी ज्ञान कहताहूं कि जैसा कौवाने कहा है. सो शुभ या अशुभ जैसा शास्त्रका निश्चय है वैसा होताहै ॥ १२ ॥

एकेनचोत्तमंविंद्याद्द्वाभ्यांचैवतुमध्यमम् ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यंव्याधिश्चैवचतुर्थके ॥ १३ ॥ तरुक्षेमस्तथारूढोघातपक्षस्तथापरे ॥ शीघ्रंवर्षांविजानीयात्कथितंवायसेनतु ॥ १४ ॥

अर्थ—एक (काकसे उत्तम जानना. और दोसे मध्यम) पुनः तीसरेमें क्षेम तथा आरोग्य और चौथेमें व्याधि जानना ॥ १३ ॥ तरुक्षेम तथा आरूढ़ और घातपक्ष, इनमें, शीघ्र वर्षा जानना. ऐसा कौवाने कहा है ॥ १४ ॥

वर्षाकालेसंगमश्चवर्षतेचंद्रमण्डले॥उष्णकालेचाग्निभयंकाकस्य मैथुनात्प्रिये ॥ १५ ॥ दंपतीतर्हिवृष्टिश्चमैथुनंकुरुतेयदि ॥ सप्तरात्रस्यमध्येतुदुःखलाभंभविष्यति ॥ १६ ॥

अर्थ–हे प्रिये ! चंद्रमाका मंडल वर्षासमयमें उदय होनेपर कौवाकर मैथुन होवे तो वर्षा होतीहै. और वही काकमैथुन गर्मीके समय अग्निके भयको करताहै ॥ १५ ॥ और वर्षासमय जो कौवा कागली मैथुन करैं तो सात रात्रिके मध्यमें दुःखका लाभ होताहै ॥ १६ ॥

तूर्यवर्णस्तुसःप्रोक्तोऽशुभञ्चाचिंतयेच्छुभम् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवर्णचतुष्टयम् ॥ १७ ॥ ब्राह्मणःपिंगनेत्रःस्याद्दानंतस्य विचक्षणम् ॥ कृष्णग्रीवोमहोदर्यश्चक्रपाद्भूमिकःस्मृतः ॥ १८ ॥

अर्थ–और वे काक चार वर्णवाले अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ये वर्णवाले कहे हैं. उन्होंमें शुभ हो तो शुभ जानना. अशुभ हो तो अशुभ ॥ १७ ॥ ब्राह्मण कौवाके पीले नेत्र होतेहैं. तिसका दान विचक्षण है. और कृष्णकंठवाला, दीर्घ उदरवाला, चक्रपाद् और भूमिक ये कहे हैं ॥ १८ ॥

ईदृशंलक्षणंयस्यसचक्षत्रियउच्यते ॥ उच्यतेचमहाशौचसमंभूत्वाचवायसः ॥ १९ ॥ क्षेमेचसुचिरंसस्यंतच्चवैश्योविनिर्दिशेत् ॥ रौद्रंचकुरुतेभाषंवायसोवायसीयदि ॥ २० ॥

अर्थ–ऐसे लक्षण जिसके हों वह क्षत्रिय कौवा कहा है. और जो सम होवे अर्थात् शांतवृत्तिवाला कौवा महाशौच कहा है ॥ १९ ॥ और क्षेममें थोड़ी खेती होवे उसको वैश्य जानना. और जो कौवा या कागली भयानक शब्द करते हैं ॥ २० ॥

ईदृशंलक्षणंदेविशूद्रज्ञानंसमाचरेत् ॥ कृष्णग्रीवोध्रुवंविद्यान्मध्यमंचध्रुवंभवेत् ॥ २१ ॥ सद्यश्चब्राह्मणीविद्यात्क्षत्रियश्चदिनत्रये ॥ सप्तरात्रेणवैश्यस्यनवशूद्रस्यदर्शने ॥ २२ ॥ इति श्रीरुद्रयामलेसारोद्धारेउमामहेश्वरसंवादेमेघमालायांअर्घकांडेकाकरुतफलकथनोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अर्थ—हे देवि ! ऐसे जिसके लक्षण हों उसको शूद्र जानना. और कृष्ण कंठवालेको निश्चय करके जानना और मध्यमको ध्रुव होताहै ॥ २१ ॥ और शीघ्र फल करनेवाली ब्राह्मणी कागिनीको जानना. और क्षत्रिय तीन दिनमें और सात रात्रि वैश्य और नव रात्रि शूद्रके दर्शनमें (इसप्रकार फल जानना) ॥ २२ ॥ इति श्रीभाषाटीकायुते रुद्रयामले सारोद्धारे उमामहेश्वरसंवादे मेघमालायां अर्घकांडे काकरुतफलकथनं नामैकादशोध्यायः ॥११॥

इति श्रीगोपालपुरग्रामवास्तव्य–पण्डितमुन्नालालसूनुना पण्डितरामाधीनशर्मणा विरचिता भाषार्थप्रदर्शिनीभाषाटीका समाप्ता ॥

हरिप्रसाद भगीरथ.
काळकादेवीरोड, रामवाडी,
मुंबई.